उकड़ू समय

उकड़ू समय

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

UKROO SAMAY (उकड़ू समय)
Collection of Maithili Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-08-7
दाम: 251/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

उमेद

काल्हि शिक्षा मित्रक बहाली छी। मने-मन साढ़े उनसैठ बर्खक मननाथ चपचपाइत जे जिनगीक उद्धार भऽ गेल। मनमे रंग-रंगक ललिचगर विचार सभ उगैत रहइ। जइसँ जिनगीक अपेक्षा सेहो बढ़ैत रहइ। केतबो छी तँ शिक्षा विभाग छी ने, एते तँ आजादी छइहे जे वहालीमे उमेरक सीमा-सरहद नै छइ। आन विभाग तँ ओहन अछि जे सभ किछु रहितो माने उपयुक्त उम्मीदवार रहितो काजे ने भेटै छइ। माने नोकरीक उम्र समाप्त भेने नोकरीए ने हएत भलेँ काजो रहै आ केनिहारो किए ने रहए।

जँ नियमित छबो मास नोकरी भेल आ तेकर पछाइत जँ निवृतो भऽ जाएब तैयो तँ जाबे जीब ताबे पेंशनक उमेद रहबे करत, निचेन भऽ जाएब। निचेनेटा किए हएब, जहिना आमदनी भेने खरचा-बरचासँ निचेन हएब, तहिना सेवा-निवृत्ति शिक्षकक अपन मान-मरजादा सेहो तँ होइते अछि, सेहो तँ भेटबे करत। लोक ई थोड़े बुझत जे चालीस बर्ख पहिलुका पढ़लाहा सभटा बिसैर गेल हेता, ओ कि मने हेतैन। ओ तँ यएह ने बुझत जे चालीस बर्खक अनुभवी शिक्षक छैथ। तहूमे बीसे बर्खमे मनुक्खक पीढ़ी बदलै छै, पीढ़ी की मनुक्खक शक्लेटा केँ बदलै छै आकि आचार-विचार, बेवहार, चालि-ढालि सभकेँ बदलै छइ। तहूमे तेहेन समय आबि गेल अछि जे चारि-गोरेकेँ चारि साए रुपैआक बोतल पीआ दियौ, दस घन्टाक पेट्रोल मोटर साइकिलमे दिया दियौ, गामक के कहए जे जिला-जबाड़ घुमि प्रसंशाक पुल बान्हि देत। केतबो सड़ल किए ने होइ,

एक नम्बर निरोग सौदा बनि चकचकौआ बजारक चौमैतपर बिकेबे करब! मननाथक मनमे उगना जकाँ उगिते ठोर पटपटाएल- “यएह छी जिनगी!”

‘की छी जिनगी’ से तँ नै निकैल सकल, मुदा एते तँ निकलिये गेल जे ‘यएह छी जिनगी।’

पचपन बर्ख पहिने पिता-सोमेश्वर- मननाथकेँ संग केने, एकटा रुपैआ नेने, गामेक लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखा देलकैन। ओइ समय गाम-गामक अपन-अपन हवा-पानि छेलइ। एहनो गाम छल जइमे किछु खास बेकती खानगी शिक्षक रखि अपन धिया-पुताकेँ पढ़बै छला, मुदा दोसर लेल कोनो उपए नै छल। किछु एहनो गाम छल जइमे जातिक बीच स्कूल छेलै, किछु एहनो छल जैठाम समाजक सहयोग सँ शिक्षक राखल जाइ आ जेतए गर लगैन, चाहे कोनो झमटगर गाछ होइ, आकि खढ़-खुट्टाक घर, तेतए शिक्षण कार्य चलै छल। किछु गाम एहनो तँ छेलैहे जैठाम किछु ने छल! मुदा ओहनो तँ छेलैहे जे जँ कियो किछुओ शिक्षा, मात्रिक वा अन्यत्रसँ पाबि अपन खेतियो-बाड़ी करै छला आ साँझू पहर अपन परिवारक बाल-बोधकेँ सोझहामे पढ़ैबतो छला आ दरबज्जाक देबालक खुट्टीपर रामायण, महाभारत रखितो छला आ साँझके पढ़ितो छला। देखा-देखी बाल-बोध सीखिते अछि। जइसँ एक वातावरणक निर्माण सेहो होइते अछि। मुदा से नहि, सोमेश्वर जइ स्कूलमे मननाथक नाओं लिखौलैन, ओइ स्कूलक प्रति समाजक ई धारणा जे दसनामा संस्था छी, दस गोरे मिलि चलत जइसँ दसक बाल-बच्चा पढ़त। परिवारक खर्चक बजटमे अखैन शनिचरा भेल आगू मिडिल स्कूलमे अढ़ाइ रुपैआ, हाइ स्कूलमे चारिसँ पाँच रुपैआ आ कौलेजमे पनरहसँ बीस रुपैआ महिना फीस लगबे करत, तइले बाल-बच्चा किए ने पढ़त। ओना, शिक्षकोकेँ ने कोनो बोर्डक आकि

युनिवर्सिटीक सर्टिफिकेट रहैन आ ने कोनो सरकारी दरमहे भेटैन। गामक सहयोगसँ स्कूल चलैत। आने विद्यार्थी जकाँ मननाथो गामक स्कूल टपि मिडिल स्कूलमे नाओं लिखौलक। चारि बर्खक पछाइत हाइ स्कूल पहुँचल। अखैन तकक जे सिलेवस छल तइमे बदलाउ आएल। बदलाउ ई आएल जे तीन फैकेल्टीमे पढ़ाइ विभाजित भऽ गेल। अखनेसँ तीन दिशाक बाट फुटत। अपनाकेँ मननाथ तौललक तँ बुझि पड़लै जे सभसँ नीक आर्टे फैकेल्टी अछि। ओना, आर्टकेँ कला कहल जाइ छै, जेकर असीम अर्थ अछि। मुदा से नहि, जिनगी जीबैक कला। आर्ट रखैक पाछू मननाथक विचार रहै जे साइंस पढ़ला पछाइत गाम-घर छोड़ि बाहर नोकरी करए जाए पड़त, डॉक्टरक जरूरत जहिना अस्पतालमे तहिना अस्पताल गाममे नहि, नगर-महानगरमे। तहिना इंजीनियरोक स्थिति अछिए। कौमर्सो तहिना, शहर-बजारक पढ़ाइ छी, तइसँ नीक जे समान्य शिक्षा पाबि कोनो विद्यालयमे नोकरी करब। मुदा ई नै बुझि पेलक जे विद्यालयमे शिक्षकक केते खगतो छइ। बलजोरी थोड़े लोक जा कऽ पढ़बए लगत। जइक चलैत बी.ए. केलाक पछाइत मननाथ बेरोजगार बनि गेल। ने खेती-गिरहस्ती करै-जोकर अपनाकेँ बुझै आ ने केतौ नोकरी भेलइ। खेती-गिरहस्ती तँ बिनु पढ़ल-लिखलक काज भेल, से केना करैत। मुदा सोलहन्नी बैसबो केना करैत। दू बर्ख तक घरपर बैसला पछाइत एकटा गौंआँक संग मननाथ कोलकाता गेल। ओतौ तहिना, मनसूबा बान्हि गेल रहए जे कोनो ऑफिस आकि आने ठाम लिखा-पढ़ीक काज करब मुदा से भेल नहि। जेकरा संग गेल रहए ओ बड़ा-बजारमे ठेला चलबैत। ओना, पेशा अपन स्वतंत्र रहै मुदा चिन्हा-परिचए कोनो ऑफिस आकि कोनो कारखानादारसँ नै रहने मननाथकेँ काजक कोनो जोगाड़ नै लगा सकल।

पनरह दिन बैसला पछाइत मननाथक मनमे गाम घुमि जाएब

उठलै। मुदा अनेको प्रश्न मनकेँ घेरि लेलकै। प्रश्न ई जे गामोमे तँ अहिना गोबर-माटि जकाँ पड़ले रहै छी, फेर होइ जे गाममे कमसँ कम अपन खेत-पथार रहने खाइ-पीबैक जोगाड़ तँ अपन ऐछे, मुदा ऐठाम अनका सिरे केते दिन रहब। फेर होइ जे मनुक्ख छी, दूटा हाथ अछि दूटा पएर अछि, तखन कोन काज एहेन अछि जे नइ कऽ सकै छी। अनेरे देह खसौने छी। देह कि खसौने छी जे लोके तेहेन अछि जे अनेरे कीचारत जे जे काज बिनु पढ़नौं लोक करैए तइले एतै पढ़ैक कोन काज छइ। अनेरे एते खरचो आ एते समैयो लोक किए गमौत। मुदा गामो जे जाएब से गाड़ीक माशूल आ बटखरचो तँ अपना नहियेँ अछि। एक तँ वेचारा राधेश्याम अबैकाल संगे नेने आएल, अपना डेरापर रखि पनरह दिनसँ खुएबो-पीएबो करैए, तैपर सँ घुमतियोक खर्च केना मँगबै। ऐठामक बोली-वाणी, चालि-ढालि नै बुझै छी जे असगरो घुमि-घुमि नोकरी ताकब। दोसर, जे संगे अनलक ओकरा ठेलाबला छोड़ि दोसर चिन्हारए नै छै जे केतौ गर धराएत।

चिन्तित बैसल मननाथ मने-मन विचार करैत रहए जे आब की करब? दिनक एगारह बजैत। दिनुका भानस करै दुआरे राधेश्याम तीसीक बोरा कारखानामे पहुँचा, लफड़ल डेरा आएल तँ मननाथकेँ चिन्तित बैसल देखलक। देखिते राधेश्याम बाजल- “समैयेपर आबि गेलौं। अखैन नहाएब नहि, पहिने हाथ-पएर धोइ, बरतन-बासन अखारि चाह बनबै छी। चाह पीब भानस करब। मनो असकताएल अछि।”

राधेश्याम बजबो कएल आ बरतन नेने रोड परहक टंकी दिस विदाहो भेल। मननाथकेँ मनमे उठलै जे राधेश्यामकेँ कहि दिऐ जे आब ऐठाम नै रहब, चलि जाएब। मुदा लगले भेलै जे अखैन वेचारा रौदमे तबधल आएल अछि, कोनो कि अगुताइ अछि, पछाइते

कहबै। बरतन-बासन अखारि, चुल्हि पजारि राधेश्याम चाह बनौलक। चाह बना दुनू गोरे पीबए लगल। दू घोंट पीला पछाइत राधेश्याम बाजल-

“बौआ, मन लगैए की नहि।”

मननाथ बाजल-

“गौंआँ-घरूआ जँ दुनियाँक कोनो कोणमे एकठाम रहत तँ ओ गामे जकाँ भेल, तखन नीक किए ने लगत। सभ दिन पनरहो-बीसो गौंआँ एकठाम बैस हब-गब, हँसी-मजाक कैरते छी, तखन गाम आ एतएमे अन्तरे की भेल?”

बजैक वेगमे मननाथ बाजि गेल मुदा लगले मनमे उठलै, बैस कऽ समय बिताएब आ काजमे समय लगा बिताएब एके भेल? काजमे आकर्षण-विकर्षण दुनू छइ। जे मनकेँ अपना दिस खिंचबो करै छै, आ ठेलबो करै छइ। जइसँ मन लगबो करै छै आ उचटबो करै छइ। मुदा ऐठाम तँ हमरा-ले विचित्र स्थिति अछि। अपने जैठाम जा काजक गर लगाएब तैठाम भाषाक दूरी अछि। तहूमे तेहेन एकचलिया लोक अछि जे जेहने बोली-वाणी तेहने चालि-ढालि। दुनूक अनाड़ी छी, जेकरा संग आएल छी ओ तँ हमरोसँ बेसी अनाड़ी अछि, ओ की बुझत जे कोन काज करैबला छी। चाह पीविते राधेश्याम बाजल-

“भानसमे की देरी लागत। बारह बजेसँ पहिने खा-पी निचेन भऽ जाएब।”

मननाथक मनक बेथा जेना उमड़ि पड़लै। बाजल-

“राधेश्याम भैया, गौंआँ रहैत अहाँ बहुत केलौं। मन नै लगैए, काल्हि चलि जाएब।”

मननाथक बात राधेश्याम नीक जकाँ नै बुझि पेलक। बुझियो

केना पबैत। बाजल- “किए?”

बिना किछु लाथ केने मननाथ बाजल-

“काज करैले आएल छेलौं सएह ने भऽ पाबि रहल अछि, तखन रहबो केना करब।”

राधेश्याम भानसो करैत रहए आ मने-मन मननाथक प्रश्नपर विचारो करए लगल। ठेकनौलक तँ नजैरपर अठारहो गौंआँ ठेलाबला पड़लै। सभ अपन-अपन भानस अपने करैत अछि। चारि-पाँच गोरे जे बेटाकेँ पढ़बैले रखने अछि ओकरा तँ आरो बेसी परेशानी होइ छइ। जँ अठारहो गोरेक भानसोक भार आ चारू-पाँचो विद्यार्थीकेँ पढ़बैयोक भार भऽ जाइ तँ दुनू काज हएत। मननाथकेँ काजो भेट जाएत आ हमरो सबहक जिनगी बन्हा जाएत। केता दिन अपनो भुज्जा-भर्ड़ी फाँकि कऽ रहै छी।

बाजल- “मननाथ बौआ, हमर विचार पसीन हएत?”

“की?”

“जखन काज करए एलौं तखन काज तँ अपने ठाढ़ कऽ लेब। अठारह गोरे गौंआँ छी। बेठेकान खाइ-पीबैक अछि। अहाँ अठारहो गोरेक भानसक भार उठा लिअ। अपनो खाएब आ दू पाइ बँचियो जाएत।”

मननाथक मनमे उठल, भनसियाक काज! मुदा लगले बदैल गेल। बदैल ई गेल जे गामोमे जे भोज-काज होइ छै तइमे भानसो कैरते छी आ परैस कऽ सेहो खुऐबते छी। तखन..? मन मानि गेलइ। बाजल- “हँ करब।”

‘करब’ सुनि मान-सम्मान बढ़बैत राधेश्याम मननाथकेँ कहलक- “चारि-पाँचटा बच्चो गामेक छी। ऐठाम पढ़ैए, अनकासँ जे टीशन पढ़ैए से अहींसँ ने किए पढ़त। गामक जँ चारियो-पाँचटा

अपन पढ़ौल भऽ जाएत तँ ओ कि गामक सेवा नै भेल। सेवे किए, ओ तँ कुलपूज सेवा भेल!”

दोहरी काज देखि मननाथक मन मानि गेल जे अखैन किछु दिन रहैक पहिने जोगाड़ करी, तखन आगू बुझल जेतइ। चिन्हो-परिचए बढ़त आ किछु-किछु ऐठामक बोलियो-वाणी आ चालियो-ढालि सीखि लेब। केतौ पहिने लोक ओइठाम रहै-जोकर अपनाकेँ बना लेत तखन ने रहि पौत।

मननाथ दुधा-वैष्णव। ने कण्ठी गरदेनमे नेने आ ने माछ खाइत। गामक लोकक देखा-देखी अपनाकेँ वैष्णव मानि नेने। बिहारक जलवायु आ बंगालक संग पुर्वांचलक जलवायुमे अन्तर छइ। तँए बिहारक जिनगी आ बंगालक जिनगीमे सेहो अन्तर छइ। छह मास जाइत-जाइत मननाथ बेमार पड़ि गेल, गाम चलि आएल।

मननाथ जइ समय आइ.ए. पास केलक तही समय प्रतिमाक संग बिआह भऽ गेलइ। ओना, नगदी दान-दहेज मननाथक पिता नै लेलखिन मुदा परिवार ठाढ़ हेबाक सभ कथू लेबे केलखिन- बरतन-बासन, लत्ता-कपड़ा, कुरसी-पलंग इत्यादि-इत्यादि। प्रतिमाक पिता रामायणिक प्रेमी, संग-संग हाइ स्कूलक शिक्षक सेहो रहथिन। जहिना किलासमे बिआहक दान-दहेजक विरोधमे पढ़ाबथिन तहिना जनकपुरमे भेटल रामकेँ बिआहमे सुन्नर नगर, सुन्नर बाड़ी-फुलवारी, सुन्नर भवन, सुन्नर भोजन, सुन्नर विदाइ इत्यादि अपनो मनमे घर केनहि रहैन, तँए नगदक विरोधमे रहितो वस्तु-जात, पढ़ै-लिखैक खर्च धरिक पक्षमे सेहो पढ़ाबथिन। ओना, से सभ अपन बेटीक बिआहमे दइक विचारो रहबे करैन।

गामक मिडिल स्कूल तक प्रतिमा पढ़ने, तँए थोड़-थाड़ हिसाबो-बारी आ पढ़बो-लिखब भइये गेल रहइ। जहिना सभ मिथिलांगना सुयोग, सुशील संगीक कामना करैए तहिना प्रतिमोक

मनमे रहबे करइ। जइसँ सभ दिन भोरे सुति-उठि फुलडालीमे फूल लोढ़ि, अँगना-घर बहारबासँ चुल्हि-चिनमार नीपै, भानस करैक सभ जोगाड़ करैत, नहा कऽ भगवतीक आसन नीप फूल चढ़ा कर-जोरि असीरवाद पाबि जिनगीक लीलामे लगि जाइ छलि। कौलेजक बरक संग बिआह हएत, सुनि प्रतिमा मने-मन भगवतीकेँ गोर लगलैन। मनकमना पुरबैक सुन्नर संगी देलौं।

बी.ए. अबैत-अबैत मननाथकेँ दुरागमन भेल। जाधैर कौलेजमे पढ़ै छल ताधैर अपनो मनमे नीक-नीक विचार उठिते छेलै, जइसँ नीक जिनगीक उमेद रहबे करइ। पति-पत्नीक बीच घन्टो अपनो भविसक रंगीन फुलवारीक बीच विचरण करैक समय भेटते छल। प्रतिमाक आशाक ज्योति भिनसुरका सुर्जक रोशनी जकाँ प्रखरे होइत गेलै, बढ़ैत गेलइ।

कौलेज छोड़ला पछाइत जखन मननाथकेँ नोकरी नै भेल तखन जहिना अपन मन मननाथक डोलए लगल तहिना प्रतिमाक सेहो सिहैर-सिहैर सिहरए लगल। जिनगीक आशामे गिरानी आबए लगल। जइ दिन मननाथ नोकरी करैक खियालसँ राधेश्यामक संग कोलकाता विदा भेल, तइ दिन बेर-बेर केता-बेर प्रतिमा मननाथक चेहराकेँ निहारि-निहारि देखलक। कखनो बुझि पड़ै सौन केना बीतत तँ कखनो बुझि पड़ै जे कमासुत संगी भेटने दुनियाँक कोन सुखक कमी रहत। मुदा बैसारी जिनगीक भारसँ दबल जहिना मननाथ तहिना प्रतिमा। केतेक जरूरत काजक अभावमे हूसि गेल। जरूरतो तँ जरूरत छी, केतौ जिनगीक तरहत्थीक जरूरत तँ केतौ जिनगीक उलफी जरूरत सेहो अछिए। मुदा से नै प्रतिमाकेँ जिनगीक तरहत्थीक खगता खगलैन। जइसँ जिनगीक वृक्षमे बेर-बेर झाँट-पानिक झटका सहए पड़ल रहैन। तँए उवाउ सेहो भइये गेल रहैथ। जखन मननाथ कोलकातासँ बेमार भऽ घुमि गाम आएल तइ समय

सोमेश्वर दुनू परानी जीविते रहथिन। एकटा संतान मननाथोकेँ भऽ गेल रहइ। ओना, अपन घटैत जिनगी आ बेटाक चढ़ैत अपाहिज जिनगी देखि दुनू परानी सोमेश्वर चिन्तित भइये गेल छला मुदा अपनो जीबैक आशा लोककेँ प्रबल होइते छै, तँए बेथाएलो मने अपन घर-गिरहस्तीकेँ सम्हारि चलैबते छैथ। सुखाएल देह मुरझाएल मन मननाथक देखि परिवारक सभ, माता-पितासँ लऽ कऽ पत्नी धरि, चिन्तित भऽ गेली। जहिना कोनो गाछक पहिल डारि सुखलापर चाहे रोगेलापर गाछक चुहचुही कमए लगै छै, तहिना प्रतिमाक चुहचुहीमे सेहो कमी आबि गेल। तहिना मतो-पिता अपन अगुआइत परिवारक खसैत रूप देखैथ, मुदा उपए?

एक तँ ओहुना पूर्वांचलक पाइनो आ हवोसँ नीक मिथिलांचलक अछि। तैपर पथ-परहेज, दवाइ-दारू भेने मननाथ निरोग भऽ गेल। छह मास बीतैत-बीतैत मननाथ पूर्ण स्वस्थ भऽ गेल। काजक आशमे जखन मननाथ हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे परोपट्टामे केतौ कल-कारखाना ऐछे नै जैठाम जा नोकरी करब। गाम-घरमे जे स्कूल अछि ओ तँ अपने-अपने परिवार धरि समटा गेल अछि तखन करबे की करब। खेती-बाड़ीक ओ दशा अछि जे त्रेता जुगमे जनक तीनि-बित्ता हर जोतलैन तहीसँ अखनो खेती होइते अछि। ने अपना हाथमे कोनो जुगानुकूल औजार अछि आ ने खेतीक साधन, बाढ़ि-रौदीक रक्षा संग खाद-पानि-बीआक अछि! तखन? तैपर जँ कोदारि-खुरपी हाथमे लेब तँ गामक लोक अनेरे कीचारत जे देखियौ फल्लाँक तकदीर...।

रंग-रंगक चोट पाबि मननाथक मन सकतए लगल। सकताइत विचार भेलै जे पूर्वांचलक पानि अनुकूल नै भेल, पच्छिमक यात्रा करब। पच्छिम दिस हियबैए लगल तँ दूरक एकटा सम्बन्धी राजस्थान सीमेंट कारखानामे काज करैत। नमहर कारखाना, सए-

पचास आदमी सदैत काल छुट्टीपर गाम जाइते अछि, जइसँ उट्ठा काज रहिते छइ।

पिसियौतक-पिसियौत भाइक संग मननाथ राजस्थान गेल। मार्च मास रहने एक मास काज केलक। सीमेंट कारखाना काज करै बलाकेँ सीमेंट-खौक बनाइए दइ छइ। मटिखौक इलाका तँ छी नहि, जे खलियो पएर आकि हल्लुको-फल्लुक चप्पल-जूतासँ काज चला लेब आकि लत्ते-कपड़ासँ काज चला लेब। तँए ओहन नै बनब तँ काज नै कऽ सकै छी। पहिल मासक दरमाहासँ मननाथ अपन लत्ता-कपड़ा, जूता-चप्पल इत्यादि पहिरेबा वस्तु कीनलक। मुदा दोसर मास अप्रील अबैत-अबैत रौदक गरमी बरदाससँ बाहर हुअ लगलै। जहिना एक दिस रौदक झड़की तहिना दोसर दिस पानिक मरकी अछिए। बीतैत मई मननाथ बेमार पड़ि गेल। ओना, मननाथ उट्ठा काज करैत रहए, स्थायी नोकरी नै भेल रहइ। मुदा बेमारीक नाओंपर संगी-साथीक कहला-सुनला पछाइत गाड़ीक खर्च कारखानासँ भेटलै, टिकट कटा गाड़ी पकैड़ मननाथ गाम चलि आएल।

दुनू परानी सोमेश्वर पचास बर्ख टपि चुकल छला। जिनगी भरि कमाएल-खटाएल देह रहितो, मनक क्लेश आ पेट-पूजाक अभाव रहने अस्सी बर्खसँ ऊपरक झखड़ल बगए बनि गेल छेलैन। व्यायामो तँ भरले पेटक ने नीक होइ छइ। ओना, जेते काज दुनू परानी सोमेश्वर करै छला तइमे कटौती नै केलैन, करबो केना करितैथ चारि-पाँच बीघाबला किसान (आजुक किसान नै) आँखिक सोझामे खेतकेँ परती होइत केना देखतैथ। मशीन भेने एते तँ लाभ भेबे कएल अछि जे कम आँट-पेटक बाड़ी-झाड़ीमे भाँगे-धथूर बेसी उपजए लगल अछि। ओना, तेकर दोसरो कारण अछि जे करताइते गाम छोड़ि देने छैथ, मुदा जैठाम छोट किसानक खेत जोत-कोर करैक आ उपजबैक प्रश्न अछि, तैठाम जँ बीघा जोतै बला औजार

चलि आबए तखन ओइसँ काज केना चलत। मुदा जे से। सोमेश्वर सेहो तहिना अपन गिरहस्तीकेँ छोट केलैन। छोट ई केलैन जे जइ खेतमे नियमित उपजा लेल नियमित काज करए पड़ैन, जे श्रमक बाहुल्यतासँ पूर्ति होइत अछि, तैठाम ओहेन-ओहेन फसिलक खेती करए लगला जे खेत तँ अबादल जानि मुदा उपजामे ह्रास होइत गेलैन। सएह सोमेश्वरक परिवारमे एक दिस भेलैन तँ दोसर दिस परिवार बढ़ि गेलैन। शिक्षकक बेटी थिकीह, ओ केना खुरपी-कोदारिसँ भूमि छेदन करथिन! पिताक वचन ओहिना कन्हेठने छैथ। ओना, ईहो कन्हेठने छैथ जे मनुक्खक औरुदा साए बर्खक छइ। मनुक्ख हट्ठा-कट्ठा साए बर्ख जीबैत अछि, जे तइसँ बेसी जील तँ भाग्यशाली भेल नै जँ तइसँ कम जील तँ भाग्यहीन भेल। तेतबे नहि, प्रश्न अछि साए बर्खक जिनगी? महान-वेत्ता सभ श्रीमुखसँ साए बर्खक जिनगीक प्रशंसाक पुल बना दइ छैथ, मुदा साए बर्ख प्राप्त केना हएत, तइकालमे लबनचूस चोभए लगै छैथ। एहेन होइ छै जे लिखतनसँ बेसियो आ कमो बखतन होइ छै, तँए छूटियो सकैए, आ केतौ बेसियाइयो सकैए। मुदा बेसियाइयोक तँ दुनू कारण छै, एक मोट वस्तुकेँ पीसि कऽ मेही बनाएब आ दोसर आन-आन आनि असलकेँ घुसका देब। साँझ-भिनसर जँ धियान करै छी तँ किए कोनो मंत्रक मात्राक छूट-बढ़ हएत। ओ तँ मन रखैक मंत्र छी, जखने मनसँ घुसकत तखने काजे घुसैक जाएत। मुदा से सभ सोमेश्वरकेँ नै भेलैन, देखा-देखी दुनियाँ चलै छै कोनो कि हमहीं एहेन छी जेकर बेटा बिमार पड़ल आ दोसरकेँ नै पड़ल, घनेरो लोकक जवान बेटा रोगाएलो छै आ मरबो कएल, केना छातीपर अढ़ैया रखि सबुर केने अछि। जाबे आँखि तकै छी, हाथ-पएर चलै-फिड़ै-जोकर अछि, दुनियाँ-ले नै अपना-ले करैत रहब...।

भाय, प्रश्न एकटा फेर जगि गेल। ओ जगल जे 'अपना-ले?'

बेकतीवादी विचार भेल, स्वार्थी विचार भेल। मुदा एकर ईहो अर्थ तँ होइते अछि जे जखने मनुक्ख अपन विचारकेँ कर्म रूपमे उतारए लगैए तखने अपन हाथ-पएरकेँ ओइ दिसामे लगौल जाइ छै जहिना घरसँ निकैल कियो दुआर-दरबज्जा गाम-समाज टपि देस-कोस टपि दुनियाँ टपैए, ओ कर्म तँ बेकतीगते सम्भव अछि। बिनु जिम्माक बेकतीगत जिनगीए की? मनमे जेहेन विचार तइ अनुकूल अपन-अपन रस्ता बनबैक अछि। प्रश्न अछि मनुक्ख बनि एलौं, मनुक्खक बीच बास हुअए, हँसैत-खेलैत जिनगीक समरपन करैत गुदस हुअए। दुनू परानी सोमेश्वर मननाथक सेवामे जुटि गेला।

भदबरिया पीअर-ढूसि बेंग जकाँ मननाथकेँ देखिते प्रतिमाक मन उड़ि गेलइ। जहिना अकासमे उड़ैत टिकुली रंग-रंगक खाद-अखाद वस्तु धरतीपर देखि-देखि- अपन उपयोगी वस्तुकेँ से चाहे खइक होउ आकि बैसैक, निहारि-निहारि चैनक साँस लइत नचैए तहिना प्रतिमोकेँ भेल। एक-दिस वृद्ध सासु-ससुरक थोड़ दिनक आश, तँ दोसर दिस पतिक हरण भेने अपन वैधव्य-जिनगी! तँ तेसर दिस कोरैला साल भरिक चिल्काक जिनगी। मन विचलित भऽ गेलइ। ओना, पारिवारिक सम्बन्धमे बेकती घरक कोठरी जकाँ अछि, मुदा किछु एहनो तँ ऐछे जे अधिक दिनक टिकाउ अछि। वएह नष्ट भऽ रहल अछि! नइ, माए-बाप बहुत रास गहना बेर-बिपैत-ले देने छैथ, कोन दिन-ले राखब। जखन जिनगीए नहि, जखन सोहागे नै तखन सिहिन्ता कथीक आ सौख केकर? तखन गहना-जेबर पहिरबे के करत? प्रतिमाक मनमे पतिक जिनगीक प्रति उत्साह जगल। रोगक इलाज छै, समस्याक समाधान छइ। जेना पतिक राग प्रतिमाक रग-रगमे रमि गेलैन...। सासु लग जा बजली-

“माँ, बाबूजीकेँ कहथुन, पाइ-कौड़ीक चिन्ता नै करैथ, गहना दइ छिऐन, डॉक्टर लगबैले कहथुन।”

ओना, प्रतिमा ससुरसँ छिपा बजली, मुदा मनमे रहैन जे बेर-बिपैतमे जँ एक-दोसरक सहारा नै बनत तँ ओ दबा जाएत। तँए जोरसँ बाजल छेली। जे बात सोमेश्वर सेहो सुनलैन। पुतोहुक बात सुनबए बुड़हा लग पहुँच बजली- "पुतोहुक विचार सुनलौं किने?"

"हँ।"

'हँ' कहि सोमेश्वर मुस्कुरेला। केहनो बिपैत किए ने हुअए जँ ओकर प्रतिकारक उपए होइए तँ चिन्ता हटिते छइ। सोमेश्वर पत्नीकेँ कहलैन- "माए-बापक देल जिनगी-ले छैन, ई ताधैर हमर छी जाधैर जीबै छी। अपनो बाप-दादाक देल बहुत अछि। जँ दवाइसँ छुटतै तँ मननाथोकेँ छुटतै।"

मननाथक इलाज शुरू भेल। दू मासक पछाइत पूर्ण स्वस्थ भेल। स्वस्थ भेला पछाइत सबहक सहमैत भेलैन जे मननाथ अपने खेती-पथारी करत। तकदीरमे परदेश नै लिखल छइ। विधाताक रेख कियो थोड़े मेटा सकैए।

गाममे रहि मननाथ घरक काजमे हाथ बटबए लगल। मुदा पढ़ल-लिखल रहलो पछाइत नै बुझि सकल जे किसान परिवार केहेन होइ। कटबी होइ आकि सौंस। सौंसक माने भेल जे परिवारमे सालो भरिक भोजन-विन्यास परिवारक हाथ अबौ। माने ई जे अन्नक खेती बारहो मास लगौलो जाए आ काटलो जाए। जेना जगरनाथमे छइ। नव अन्नक भोजन पवित्रो मानल जाइए। ओना, किछु एहनो अन्न अछि जे जेते पुरान होइए तइमे तेते घीए जकाँ गुण बढ़ै छै, मुदा से नहि, आर्थिक दृष्टिसँ। भोजनक भीतर दूध, तरकारी, फल इत्यादि सेहो अबै छइ। बारहो मास दूधक पूर्ति तखने हएत जखन कमसँ कम दूटा महींस आकि दूटा गाए रहए, तहिना तरकारीक सेहो अछि, सालो भरिक तरकारीक पूर्ति तखने हएत जखन तीनू मौसमक माने जाड़, गरमी आ बरसातक अनुकूल खेती हएत। तहिना फलोक

अछि। बारहो मास जे समयानुकूल फल लगौला पछाइते फलक पूर्ति भऽ सकैए। जखन एहेन ढर्ड़ा किसान परिवार पकड़त तखन सम्पन्नता औत, जखन सम्पन्नता औत, तखन समृद्धता औत, यएह भेल सौंस परिवार। एहेन परिवार सोमेश्वरक नै छेलैन। कटबी खेती आ कटबइ उपजा छेलैन जइसँ तीमन-तरकारीक कोन बात जे अन्नोक बेसाह लगिते छेलैन। ओना, चारि-पाँच बीघा पाँच आदमीक परिवार-ले परियाप्त भेल मुदा से नहि। समैयक संग परिवार उगैत-डुमैत चलैत रहल, चलैत रहल।

तीस बर्खक पछाइत मननाथ मतो-पिताक श्राद्ध आ पाँचो बालो-बच्चाक बिआह-दानसँ निवृत भेल। ओना, शिक्षा-बेवस्था एहेन भऽ गेल अछि जे पढ़ब-बिनु-पढ़ब बराबरे। मुदा परिवारमे सरस्वती एने, नीक जकाँ तँ नै मुदा पाँचो बेटा-बेटी पढ़ल-लिखल तँ छैन्हे।

गाम-गामक स्कूलमे शिक्षा मित्रक बहाली हएत। साल भरि पहिनेसँ लोक कागत-पत्तर कीनै-बेसाहैक संग स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी, पोस्ट-ऑफिस इत्यादिक ताक-हेर करए लगल। ब्लौकसँ गाम-धरिक लोकक हाथे बहाली हएत। वेपारीक नक्शा तैयार भेल। पढ़ल-लिखल नौ-जवानक कमी ऐछे नहि। जैठाम लेबाल रहत तैठाम जँ वेपारी नै कमाएल तँ ओ अनेरे कौमर्स पढ़लक किए? दुनू परानी मननाथक मनमे सुतल सपना जगि गेल। जगि गेल जे ई तँ हाथक काज भेल, सभ सपनाक पूर्ति भऽ जाएत। चालिस हजार रुपैए कट्ठा जमीन अढ़ाइ कट्ठा बेच लेब ओतबेमे हाथक-हाथ कागज भेट जाएत। सएह भेल।

काल्हि दस बजेसँ बहालीक प्रक्रिया शुरू हएत। सभ काज केलाक पछाइत, सौंझुका बैसार मे मननाथ चाहक घोंट लैत बाजल-

"आइ भरोस भेल जे भरि जिनगीक हेराएल ठौरपर आबि

गेलौं!”

मुदा मननाथ ई नै बुझि पेलक जे दिनुका हेराएल साँझमे एलौं आकि रतुका हेराएल भोरमे।

ओना, प्रतिमाक चढ़ैत-उतरैत जिनगीमे पतिक बात सुनि कोनो बेसी हलचल नै भेल मुदा किछु कम्पन्न तँ भइये गेल। हलचल ऐ दुआरे नै भेल जे सन्तानक पूर्वक जे मनोरथ छेलैन, ओ छौर बनि आकसमे उड़ि गेलैन। सन्तानक पछातिक मनोरथ खसैत-पड़ैत थकथका गेल छेलैन। जिनगीक चारिम अवस्थाक लग-झकमे पहुँच गेल छेली। अपन सभ मनोरथ परिवारमे छिड़िया-बितिया गेल छेलैन, मुदा तैयो आशक साँस तँ भेटबे केलैन। आशक साँस ई जे एको दिनक शिक्षकक नोकरी तँ जीवन पारे हएब भेल। से दिन आबि गेल। बिहुसैत प्रतिमा बजली- “निश्तुकी काज हएत किने?”

मननाथ- “ओना, अहाँ आन थोड़े छी जे मनक बात छिपाएब...।”

बहालीक चिट्ठी देखबैत पुन: बाजल- “कोनो कि कच्चा खेलाड़ी छी जे पैसा फेकि देब काज पछुआ लेब। एक हाथसँ देलिऐ, दोसर हाथसँ लेलिऐ।”

जिज्ञासा करैत प्रतिमा बजली- “कहाँदन काल्हि इन्टरभ्यू हेतइ?”

मननाथ- “ओ सभ देखैआ हेतइ।”

पतिक उत्तर पाबि प्रतिमा थकमका गेली। थकमका ई गेली जे एक दिस देखौआ कहै छैथ आ दोसर दिस चिट्ठी सेहो देखए दइ छैथ! परीक्षा ने चोरूका होइए मुदा इन्टरभ्यू तँ देखौआ होइते छै भलेँ मुँह देखि मुंगबा किए ने। तखन कहलैन की..? बाजल-

“अखुनका लोकक केते बिसवास करै छी, बैंकमे रुपैआ नइ

रहनौं चेक पठा दइए। जँ अहाँ सन-सन दसटा मोकिरकेँ झगड़ा लगा दिअए तखन की करबै? एक तँ जिनगी भरि मारि खेलौं तैपर जँ मरैयोकाल घीचे-तीड़ीमे चलि जाएत तखन बाड़ीमे गेन्हारी साग उपजा कऽ केना खाएब?”

पत्नीक बात मननाथक मनकेँ पीड़ीत बनौलक आकि प्रीत ओ मननाथ जानए। मुदा उगैत काज डुमैत काजक विचारो स्थल तँ यएह छी। कौल्हुका काज पहिने सम्हारि पछाइत नव काजमे हाथ लगौल जाए आकि..? जँ बहुत बेसी नवका काज मनमे उतफाल मचौत तँ ओ अपने सूत्रवद्ध भऽ आगूमे खसत।

ओना, होइतो अहिना छै जे सुखाएल आ दुखाएल मनक उपजोमे किछु अन्तर आबिये जाइ छै, मुदा जेतए सुखाइन-दुखाइन सहोदरा बहिन जकाँ अपन-अपन मनक बात बाजत तखन अनेरे ने दुनू बहिन बहीना बनि बहनोइक सृजन सेहो करत। मुदा जे से...। सभ गोटी लाल देखि मननाथक मन ललिया तँ गेलै रहइ। जँ से नै रहै तँ छबे मासक पाँच हजार नोकरी छै, कुल तीस हजार भेल। तहूमे जैठाम दरमहेक ठेकान नै तैठाम पेंशन केना जन्मत। तइले लाख रुपैआक खेत बेच मननाथ सचमुच मने-मन खुशी अछि जे पढ़ैक उदेस साफल भेल। मुदा मनमे बच्चेसँ अँकुरल छेलै जे शिक्षक बनब। खाएर, जाइज-नजाइज जे भेल मुदा मनक एकटा मनोरथ तँ पूर भेबे कएल।



तिथि: 31 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या: 3643

गलगर भैंस

राति जुआ गेल रहै, दुपहरिया टपि गेल रहै, चैत मासक अमवसिया तँए गरदा-माटिसँ अन्हार आरो भरि गेल रहइ। ओना, ओसकणसँ सेहो माघक राति आ पनिकणसँ भादवक अन्हारक अमवसिया होइ छै, से नै चैत मासक अन्हार! बारह तँ बित चुकल छल, सिन्धुनाथ आ जलेसरीक जिनगीमे जहिना बारह बजि चुकल छल तेना नहि, मुदा एक नै बाजल छल। जहिना अन्हारसँ एक-दू-तीन-चारि दिन बढ़ने इजोत अपनामे चारि-चान लगबैत मुस्की मारैत मेलाक रेड़ामे रगड़ लैत-दैत-पबैत ससरैत तहिना ने इजोतोसँ अन्हार एक-दू-तीन-चारि होइत चतुर्थी-मिलनक सिनेहासिक्त प्रेमक मधुर स्वरमे जिनगीक ओहन वृक्ष लगेबाक इच्छारोपण करैए जइमे पलास सिम्मर जकाँ बिनु पाते-फूलसँ भरल रहैए। मुदा...।

आध पहर राति बीतला पछाइतो ने सिन्धुनाथक आँखिमे नीन अबै छैन आ ने जलेसरीक आँखिमे। ओना, दू घन्टा पहिने ओछाइनपर एला पछाइत दुनू गोरेक बीच दिनक काजक लेखा-जोखा भऽ गेल छेलैन, जइसँ ओइ लेखा-जोखाकेँ उसारि नीनक आवाहन-ले गहवरमे गुहारि लगा दुनू गोरे अपन-अपन मुँह समेट मनमे घोंसिया लेलैन। मुदा जागलमे करक फेर-फार बेसी होइए, से तँ दुनूकेँ रोकनौं नै रूकैत, मुदा अपन-अपन चलाकीकेँ हूँहकारी भरि अपन-अपन बहाना बनैबते छला। ओछाइनपर सँ उठि सिन्धुनाथ लघु-शंकाक बहाने बहरेला, मुदा जलेसरी जे ओछाइनपर सँ तजबीज केलैन तँ बुझि पड़लैन जे ओ मालक घर दिस जा रहल

छैथ। भरिसक कोनो काज दिनमे बिसैर गेला से करैले। जँ काज भारी होइ आ असगर बुते नै होइन तखन हम कोन इनार-पोखैर खुनबैले तकैत रहब। मनमे अबिते जलेसरियो ओछाइनसँ उठि एक-लग्गा भरि पाछू पएर मारि चलि पड़ली। एक तँ ओहिना अन्हारमे लोक जेमहर जाइए तेमहर टार्च बाड़ैए, अगुऐत-पछुऐत बाड़ैए, चौबगली बारैए। गरमी मास छिऐ, अकाससँ धरती धरि देखैक प्रश्न अछि, जहिना रतिचर इजोतेपर झपट्टा मारि भोजन पबैए आ फनिगा फुनगी पाबि, तहिना ने धरतीपर कीड़ी-कमौड़ी पएरक धमक सुनि भागबो करैए आ झपटबो करैए। मुदा से सभ नहि, सिन्धुनाथक मन टाँगल छेलैन चारि बजे जे खुट्टापर महींस कीनि कऽ अनने छला तेकर गालपर। भैयाकाका विचार देने छला जे गाए-महींसकेँ गालेमे अमृत बसै छै, जे जेते गलगर रहत ओकरा ओते बेसी दूध हेतइ। जेकरा जेते बेसी दूध हेतै ओकरा ओते बेसी बच्चो पलेतै आ मलिकारो पलेतै। आगू बढ़ि सिन्धुनाथ मालक घरसँ पहिने डेढ़ियापर सँ चारूकात टॉर्चसँ देखलैन जे कुकुर-नढ़िया तँ ने अछि। गाए-महींसक बच्चाकेँ नष्ट करैबला छी, मुदा से केतौ ने देखलैन। चारूकात टॉर्चसँ देखि जोरसँ खखास केलैन। जइसँ मालकेँ बोलीक परेखि आबि जाइ। जखने बोली परेखि लेत तखने ओकर पशुमत जगि जेतै जइसँ बोनैया रूप बदैल घरैया घर करए लगतै।

खखासक आवाज सुनि महींसो तेना साँस छोड़लक जे बाहरेसँ सिन्धुनाथ सुनि बुझि गेला जे ओहो माने महींसो जागि गेल। मालऽ घरक मुँहपर बत्तीक जाफरी दुनू कातक खुट्टामे बान्हल ढाठमे सटल। घरक मुँहपर सँ सिन्धुनाथ ठिकिया कऽ महींसक गालपर टॉर्चक इजोत फेकलैन। पौज करैत भैंस। मनमे भेलैन जे तिसियौटाक घूर केने छेलौं, ओना, मिझा तँ देनहि छेलिऐ मुदा हो-ने-हो जमि कऽ फेर ने कहीं सुनैग गेल हुअए। खरमास छी, आगिक डर

मानी। चैत-बैशाखक घूर थोड़े पूस-माघक घूर होइए जे माछी-मच्छरक संग जाड़ोसँ रक्षा करत। लऽ दऽ कऽ माछी-मच्छर भगबै दुआरे घास-पातक घूरसँ काज चलि जाइए।

एक लग्गी पाछू जलेसरी ठाढ़ भेल पतिकेँ हियासैत जे कोन काज दिस बढ़ि रहला अछि। जाफरी खोलि सिन्धुनाथ मालऽ घर जा पहिने महींसक बच्चाक देहपर हाथ देलैन। झबड़ल केश, एकमुहरी खसल, बच्चाक देहपर हाथ देखि महींस दुनू आँखि गरा मलकार केँ देखैत। जीह निकालि बच्चा सिन्धुनाथक हाथक आँगुर चाटैक ओरियान करए लगल। वएह आँगुर ने थुथुनमे दूध भरैए।

आगू ससैर जलेसरी घरक मुँहपर खुट्टा लगा खुट्टे जकाँ ठाढ़ भऽ गेली। मुँहमे कोनो बोल नहि। पीठपर सँ जहाँ सिन्धुनाथ बच्चाक देहपर हाथ आगू बढ़ौलैन आकि बच्चा फुर्र-फुर्रा कऽ उठि, जीह निकालि सिन्धुनाथकेँ चाटैक ओरियान केलक आकि डाँर लिबा गोंतए लगल। गोंत पड़ैक खियालसँ सिन्धुनाथ उठि कऽ महींस दिस बढ़ला। तैबीच बच्चाकेँ गोंतैत देखि महींसो उठि कऽ ठाढ़ भेल, आ बोली देलक।

आगू ससरैत सिन्धुनाथ महींसक थुथुनपर हाथ फेड़ैत गाल निहारए लगला। ओना, पौज करैत देखि नेने छला। ठाढ़ो महींस पौज करैए। खास कऽ खेलोपरान्त। मुदा जखन मलकार बच्चाकेँ चुचुआ भैंस दिस बढ़बैए तखन महींसक मातृत्व जगि जाइ छै, आ जेतबे थनमे दूध रहै छै तही लऽ कऽ ओ तैयार भऽ जाइ छइ। थुथुनसँ आगू हाथ ससारैत सिन्धुनाथ ऐगला राग देने महींसक थन लग हाथ बढ़ौलैन। पनहाइत छीमड़ि देख, बिनु हाथ बढ़ौने निहारए लगला। यएह लक्ष्मी थिकीह! यएह सरस्वती थकीह! वुद्धि रूप सरस्वती, भोज्य रूप लक्ष्मी! हाथ आगू बढ़बैक विचार केलैन आकि जलेसरीक मन तड़पि गेल।

एकटा छोट-छीन माटिक ढेप सिन्धुनाथक आगूमे ऐ खियालसँ फेकली जे भूतक ढेप बुझि पाछू तकता। होइतो अहिना आएल अछि, कता गाममे रातिक अन्हारमे राकश सभ गोला-ढेपा बरिसबै छल। अल्लापुरमे अखनो कोनो-कोनो गाम अछि...। तेतबे नै बाधक धान-रबी ओगरनिहार रखबारकेँ भरि-भरि राति तामल खेतक गोला उघबबै छल। मुदा जुग बदलल, जमाना बदलल, लोक बदलल लोकक खेल बदलल...।

ढेपा महींसक आगूमे खसिते भड़कऽ लगल मुदा मलकारकेँ आगूमे देखि मात्र सिंगहौटीए टा डोलौलक। गोला कातमे असथिरसँ बैस गेल। सिन्धुनाथ टॉर्चक इजोत आगू फेकलैन तँ बुझि पड़लैन जे कियो स्त्रीगण आगूमे ठाढ़ छैथ। मुदा चिन्हैमे देरी नै लगलैन, बजला-

“ईहो कि आन जगह छी, ओइठाम किए ठाढ़ छी, ऐठाम आउ। अहाँ बुझै छी जे हिनकर (पतिक) छिऐन, से नै अहूँक छी, मुदा अहाँक ताधैर नै छी, जाधैर देहपर हाथ नै देबै आ थनसँ दूध नै निकालबै।”

अपन बँटाइत सिनेह देखि जलेसरीक मन झुझुआएल। झुझुआएल ई जे ई राति तँ दुनू गोरेकेँ एकठामक छी। पिय मिलन बेर छी। तखन, जँ असगरे अपन ओछाइनपर चलि जाए तँ पति विलाप केकरा हेतइ? मुदा ई कि झूठ जे ‘जेतए बसी सएह मातृवत पवित्र भूमि आ जइसँ जीवन-धार बहए वएह पवित्र सरिता भेली।’

दुआरि टपि जलेसरी आगू बढ़ली, जहिना एक नारी-दोसर नारीसँ मुँह फुला फुफकार कटै छैथ तहिना जलेसरीकेँ देखि महींस फुफकार छोड़लक। जलेसरी सहैम गेली। सहैमते पाछूए मुहेँ दू डेग बढ़ली। तही बीच सिन्धुनाथ थनक छीमी टॉर्चक इजोतमे हिसासए लगला, जे दूध-धारमे कोनो खैंठी-तैंठी तँ ने भऽ गेल अछि। ओना,

साँझमे दुहैबेर देखि नेने छला, मुदा तखन धियानमे नै रहलैन जे अखैन मनमे उठि गेलैन। जलेसरी दू-डेग पाछू हटि ओहिना फेर ठाढ़। महींस लगसँ सिन्धुनाथ ससैर जलेसरीक लग पहुँच हाथ पकैड़ बजली-

"चलू हमरा सने। धार-साज छी, जेते धाड़त तेते ताड़त। तँए छोड़ि कऽ पड़ाउ नहि।"

जहिना बाँहि पकैड़ पुरनिहार संगी भेट जाइ छै तहिना जलेसरीकेँ सेहो नव काजक संगी भेटलैन। मुदा मनमे एते शंका तँ रहबे करैन, जे किछु छी तँ सिंगे-मांग छी। मुदा किछु रहह, जखन करताइत संगी आगू-आगू छैथ तखन पाछूसँ जाइमे की लागत। जेना-जेना ओ हाथ बढ़ा-बढ़ा आगू-आगू बढ़ता तेना-तेना पाछू-पाछू बढ़ैमे कथीक डर। हाथ पकड़ने जलेसरीक हाथ महींसक थुथुनपर रखैत सिन्धुनाथ कहलकैन-

"यएह छी एकर गाल, जेते गलगर रहत आ ओकरा जेते भरबै, तेते ओहो अहाँक गाल भरि अपनो गाल भरत। लछमी छी सदय: लछमी!"

बजैत-बजैत सिन्धुनाथक मनमे उत-उत उत्साह तेना जगलैन जे पत्नीक गरदेन बाँहिसँ जकैड़ महींसक चारू पएरक बीचक जगहमे बैसबैत सिन्धुनाथ चारू छिमड़िक धार देखबैत बजला-

"यएह सरिता छी, ओइमे जँ नित स्नान करैक अवसर भेट जाए तँ ओकरे जिनगीक धार बुझि हेलैत चली, बहैत चली...।"

ओना, चारू टाँगक बीच सिन्धुनाथो बैसल मुदा तैयो जलेसरीकेँ मनमे डर होइते रहइ। कारण घुरियाइत रहै जे माल-जाल लथराह होइए ओना, गाइयक वंशमे जेते लथरपन छै ओते महींसक वंशमे नहियेँ छै मुदा देहमे जहिना अलंकार अलंकृत करै छै जेकर

धार दू-दिसिया होइ छै, तँए गाए- महींसक संयुक्त उच्चारण किए ने नव लोकक मनमे उचारत जे महींसो लथराह होइ छइ।

सिन्धुनाथ जलेसरीक मन आँकि लेलैन बजला किछु ने। नै बजैक कारण भेलैन जे जहिना कोनो चिकित्सक कोनो रोगकेँ ठिकिया दवाइ फेकैए जइसँ मनमे एतेक श्रद्धा जगै छैन, जइसँ किछु बजबाक समयकेँ अनुपयुक्त बुझैत तहिना सिन्धुनाथक मनमे भऽ गेल रहैन। मुदा हेराएल लोककेँ जँ किछु तोष-भरोस देल जाए तँ हेराएब कमै छइ। तही खियालसँ सिन्धुनाथ पाशा बदलैत बजला-

“केते दूधक बखारी बीच बैसल छी?”

ओना, डेराएल जलेसरीक मन तँए दूधक बखारी नै बुझि पेली। गाममे धाने-मरूआ टाक बखारी देखने-सुनने तँए। मुदा दूधोक बखारी होइ छै एहेन विचार तँ विचड़िये गेल-

“केते दूधक बखारी छी?”

पत्नीक गंभीर जिज्ञासा देखि सिन्धुनाथक मनमे समुद्र जकाँ जुआरि उठि गेलैन। मुदा केना समुद्रमे जुआरि उठि फेर अपने जगहपर घुमि जाइए। तैठाम तँ समुद्रक ओइ लहैरक पानिकेँ ओतबे उमेद ने करब जेते घेरि कऽ रोकि लेब। मुदा रोकब असान अछि? हँ असान अछि। जँ जोगी नख-सिख देखै छैथ तँ कि ओहन देखनिहारक कमी अछि जे सिख-नख नै देखैत अछि। अतीतक सेर-सम्पैतसँ मान-प्रतिष्ठा धरि गेलो पछाइत कि लोकक रोब-दोब आकि रूआब-रिसाव थोड़े चलि गेल अछि? मुदा अपन ओझरीकेँ सोझरबैत सिन्धुनाथ बजला-

“अखैन दुइए बेकती छी। अपने दुनू बेकतीक जिम्माक सेवा भेल। जखन सेवा करब तखन ने मेबा पाएब।”

फूलक कली जकाँ फूलक सभ रूप-गुण समटा जहिना रहैए

तहिना जलेसरीकेँ सभ किछु रहितो समटाएल रहैन। तँए किछु बाजि नै पेली। मन अक-बका कऽ सक-पका गेलैन। अकबकेबो केना ने करितैन घर-घराड़ीक नव रूप देखि रहनिहारक मन अकबकाइते छइ। अकबकाएबो सोभाविके अछि। सोभाविक ई जे अखैन घराड़ी केर बगलक सड़क पूब दिससँ अछि, नवका रोडक नापी उत्तर देने भेल, तखन घराड़ीक मुँह केमहर बनाएब नीक हएत? पत्नीकेँ गुम्म देखि सिन्धुनाथ पुछलखिन-

“गुम्म किए भेलौं। जहिना मनुक्खक दुनू मातृकोष अमूल्य धन-धान्यसँ भरल अछि, तहिना ई महींसो अप्पन छी।”

‘अप्पन’ सुनि जहिना बिऔहती कनियाँक मन अपन गहना देखि-सुनि फङ्ैत तहिना जलेसरियोक मन फँगलैन-

“दुनू गोरेकेँ पेट भरि जाएत?”

अवोध, अनपढ़ पत्नीकेँ देखि अपना माथपर हाथ फेड़ैत सिन्धुनाथ अपन बेथा-कथा नै कहि, बजला-

“दुइए परानीक पेट किए कहै छी, पाँचो परिवारक पेटे नै जिनगियो भरत।”

पेट तँ जलेसरी खेनाइकेँ बुझैत तँए कोनो शंके ने भेल मुदा ‘जिनगियो भरत’ ई तँ मनमे खट-खुट करैए लगलैन, बजली-

“की जिनगियो भरत?”

प्रश्नक दोहरी रूप देखि पहिल एक-एक खलकेँ खोलब दोसर मुख-दुआर खोलब। राति सेहो बेसी भऽ गेल। दिनक थकान सेहो अछिए। मुदा प्रश्नक उत्तर जँ पत्नीकेँ नै दऽ देबैन आ राति-विराति जँ केकरो किछु हेतै आ काज बाधित हएत तखन तँ विचारे तर पड़ि जाएत। तँए मोटो-मोटी तँ अपन मनक भार हटा लेब किने, नै तँ अनेरे अस्सी मनक पाथर जे दबने अछि ओ ओहिना दबने रहत।

जहिना कलाकार मूड बना कऽ मंचपर जाइ छैथ तहिना सिन्धुनाथोक मन मेक-अप रूमसँ बाहर पहुँचलैन। मेक-अप होइते वाचब शुरू केलैन-

“दुनू साँझ मिला पनरह किलो दूध हएत।”

“पनरह किलो केते भेल? अपना सबहक जे बरहगण्डी सेर अछि तइसँ केते भेल?” -जलेसरी बजली।

पत्नीक दोहरी प्रश्न, एक बरहगण्डीकेँ किलोमे आनब, तइमे जे घटबी भेल से केतए जाएत। दोसर हिसाब सेर-कनमामे आ तौल किलो-ग्राममे, विचारकेँ समटैत सिन्धुनाथ बजला-

“राति बेसी भऽ गेल। चलू ओछाइनेपर गपो-सप्प करब। जेतेकाल ऐठाम रहबै तेतेकाल महींसो आ बच्चो ठाढ़े रहत, अपनो सभ अराम करब आ ईहो दुनू बैस कऽ पौज धड़त।”

थनतरसँ दुनू बेकती उठि विदा भेला। आगू-आगू जलेसरी आ पाछू-पाछू सिन्धुनाथ। पर्ड़ू लग पहुँच सिन्धुनाथ मुँह चुमि दू-तीनबेर थपथपा देलैन। पाछू उनैट जलेसरी सेहो देखली। घरसँ निकैल ढाठ-जाफरी बन्न कऽ आगू बढ़ि टॉर्चसँ सिन्धुनाथ चारूकात इजोत फेकलैन। अन्हार राति छोड़ि किछु ने। गाछ-बिरीछ कनी हटल तैपर धुराएल मेघ, जेतए टॉर्चक इजोत पहुँचबे ने कएल। आगू बढ़ैत सिन्धुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“रातिक केहेन रंग बुझि पड़ैए।”

पतिक प्रश्न सुनि जलेसरीकेँ फबलैन। बजली-

“अन्हार तँ अपने रंग छी जेकरा सियाही गुण छइ। तखन ओकर रंग की हेतइ?”

फगुआक जोगिरा जकाँ सिन्धुनाथ डम्फा संग ताल मिलबैत

बजला- “यएह छी दुनियाँ। अन्हार गुज-गुज अछि, मुदा अन्हरो-लूल्हा तँ एहनो अन्हारमे अखज जकाँ अखनो जीविते अछि।”

ओछाइनपर अबिते सिन्धुनाथ दूधक फल जोड़ैत बजला-

“पनरह किलो दूधक दाम- ३०x१५= ४५० भेल। एतेक आमदनी परिवारमे भेल। जे अखैन धरि बोइन-बुत्तापर ठाढ़ छेलौं। दुनू साँझक अन्नक खर्च सौ रुपैआसँ कम भेल। एते तँ आशा भइये गेल किने जे नूनो-रोटी आकि छुच्छो भात खा जीवि सकै छी! यएह जीबैक आशा जिनगी पाएब भेल।”

बिसवासु जिनगीक आश पाबि जलेसरीक मन छड़पि उठलैन-

“आमदनी हएत ते खरचो हएत किने?”

“हँ से तँ हेबे करत। जे अनिवार्य काज अछि ओ अनिवार्य खर्चमे एबे करत बाँकी खगताक हिसाबसँ औत।”

तइ बिच्चेमे जलेसरीकेँ हाफी भेल। हफुआइत देखि सिन्धुनाथ मने-मन सोचलैन जे आब सुतबे नीक हएत। बजला- “बड़ राति भऽ गेल, फेर सबेरे जगबो अछि। सुतू।”

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ैक कीड़ा पकैड़ लइ छै, तहिना जलेसरीकेँ जेना पकैड़ लेलकैन। जहिना कखनो नीन तोड़ैले देह डोलौल जाइ छै, तँ कखनो बाँहि, तँ कखनो जाँघ पकैड़ झमारल जाइ छै, तहिना बीतैत राति अबैत नीनकेँ रोकैक परियास करैत जलेसरी बजली- “अपना हाथक राति छी, नीनोकेँ की सीमा नाँगैर छै, अपन छोटकी बहिनक बिआहमे तीन राति आँइखो ने मुनलौं। कहाँ तइसँ काजमे घटबी भेल। एक होइ छै काजकेँ घटबी करब आ दोसर होइ छै बढ़वी करब।”

पत्नीक गंभीर विचार सुनि सिन्धुनाथक मनमे सेवाक गाछ अँकुरब बुझि पड़लैन। कहैले सालक राजा वसन्त ॠतु छी, मुदा

जेकरा वसन्तसँ भेँटे नै? छोट जिनगी रहने, माने ई जे वरसाती तरकारी अछि जेकर खेती जेठक पछाइत शुरू होइ छै आ कातिकसँ पहिने खतम भऽ जाइ छइ। जेकरा वसन्त ऋृतुसँ भेँटे ने होइ छै ओ केना बुझि पौत जे कोकिलक तान, हवा सुगंधक मुस्कान, रंग-अबीरसँ भरल आगमन केहेन होइ छै, वसन्त पंचमी आकि सरस्वती केना होइ छइ। जैठाम समैये-सँ भेँट नै भेल तँ फड़त-फुलाएत केतए आ कथी?

समुद्रक लहैरमे जहिना करोड़ो हीरा-मोती-सितुआ-घोंघा दहलाइत रहैए तहिना सिन्धुनाथक मन सेहो दहलए लगलैन। एक तँ ओहिना सिन्धुनाथक विचार रहैन जे पत्नी सुतती तँ काल भागत, किछु जीबैक आशामे कदमक गाछक डारिमे झूला लगा झूलब आकि मचकी लगा मचकैत चलब। मुदा से भेलैन नहि। मनो गवाही देलकैन जे जेते काल गप-सप्पसँ काज धरि, दुनू बेकती एक संग रहब, यएह ने भेल जिनगीक असल प्रेम जे संगे-संग शरीरसँ नि:सृत होइत रहत। बजला-

“जेकरा अहाँ भैंस बुझहै छिऐ ओ भैंस नै लछमी छी। जेते खुएबै-पीएबै तेते ओकर मन चैन रहतै, जइसँ खुशीक पाउजो करैत रहत आ हँसितो रहत।”

हँसब सुनिते जलेसरी, जहिना अनाड़ी-धुनाड़ी शिकारी धड़फड़ा कऽ तीर फेकैत तहिना, धड़फड़ा कऽ बजली-

“तखन तँ कनितो हएत!”

हँसब-कानब दुनियाँमे केकरा ने होइ छै, मुदा हँसब-कानबक बीच दूरी नै देखि पबैए जइसँ कननी बेसी अछि हँसनी कम अछि। खिलैत फूलक शकल-सूरत देखि सिन्धुनाथ बजला-

“हँ, हमर-अहाँक यएह भक्ति कहियौ आकि जिनगी जीयब

कहियौ सभसँ पैघ काज भेल।”

जलेसरीक चहकैत मन चहचहा उठल- “जहिना सभसँ पैघ धन कहै छिऐ तहिना तँ नँगर-डोलौन सेहो ने छिऐ, एकर केते बिसवास कएल जा सकैए।”

सिन्धुनाथक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक खिस्सा-पिहानीमे तँ एहेन ऐछे जे माल-जाल नँगर डोलौन छी। जेकरा अहाँ नँगर डोलौन कहै छिऐ ओ तँ प्रकृति प्रदत्त सम्पैत छिऐ, जेकर उपयोग मनुक्ख अपन जिनगी लेल करै छैथ।

मुदा ई तँ अपने ने बुझए पड़त जे ढेनुआर गाए-महींसकेँ कोन तरहक सेवाक जरूरत अछि। कखैन कोन रोग-वियाधिक प्रकोप भेल, खेनाइ-पीनाइमे दुख-तकलीफ भेल, एकरा जँ पोसिनदार नै बुझता तँ जिनगी जीबैक दोसर उपय करए पड़तैन। मनुक्खक अवस्थे केते अछि, महींसक केते अछि, केते गाइयक अछि आ केते बकरीक अछि...।

ओहीमे ने देखए पड़त जे एकटा महींस केते दूध दऽ सकैए आ हमरा केते दइए।

यएह भेल जिनगीक प्रतियोगिता। जे सनातन अछि। सभ दिन होइते रहत। मुदा पति बनि जखन पत्नी लग कोनो विचार-विमर्श करए लगब तखन जाधैर पत्नीक मन प्रवोधि कऽ नै पतियाएब ताबे छोड़लो तँ नहियेँ जा सकैए।

सभ बातकेँ झाँपैत-तोपैत सिन्धुनाथ बजला-

“अनेरे कोन मगजमारीमे नीन बरदौने छी, भरि दिन तँ खटबे केलौं, ओछाइनोपर तँ चैनक नीन लिअ।”

मुदा ले-बलैया! सिन्धुनाथक अपन मनक विचार दबा गेलैन। दबा ई गेलैन जे मनमे रहैन जे खाइ-पीबैक जोगाड़ केना करब। भोरे

उठि कऽ तँ काजेमे लगि जाएब, तखन विचारि केना पाएब। मुदा से नै भेलैन बिच्चेमे जलेसरी टपकि गेली-

“सींग-नागरिक कोन ठेकान, कखैन अछि आ कखैन जाएत। दस दुआरी छी एकठाम केतौ थोड़े, लंकाक हनुमानजी जकाँ नाँगैर दाबि कऽ बैसत।”

सिन्धुनाथक मनमे उठलैन कोनो काजकेँ विचारानुसार रोपित करैमे पहिने बिसवास अगुवाबए पड़ै छै, पछाइत वएह बिसवास सकताइत-सकताइत श्रद्धाक रूपमे अँकुरित होइ छै, जे बढ़ैत-बढ़ैत श्रद्धाक पात्र बना जिनगीकेँ पवित्रता प्रदान करै छइ। मुदा से जलेसरीक मन थोड़े मानत..?

मन नचलैन बजला-

“कोन लाइ-लपटाइमे लटपटाइ छी। अखने फड़िछा लिअ जे महींस पोसैमे की-की प्रक्रिया अछि, तेकरा दुनू गोरे बाँटि लिअ। सभ काज जँ सभ करब तँ एँड़ी-दौड़ी बेसी लागत। काज फड़िछा नेने चौड़गर जगहो भेटत आ दुनू गोरेक काज दुनू गोरे देखबो करब। जइसँ कोनो तरहक शंको ने हएत।”

सिन्धुनाथक विचार जेना जलेसरीकेँ बेधलकैन। बेधलकैन ई जे दुनू-परानीक बीच मुट्ठी-रुपैआ छी, परीक्षा लइए लिअ जे केकर मुट्ठी खोलि के रुपैआ पकैड़ लेब।

मुदा पीठिया मिलान तँ छी नहि, ओलती मिलान छी। बजली-

“बुझलौं, अहाँ हारि गेलौं, सुतू। मुदा एते तँ कहबे करब जे जे पोसलौं से दस-दुआरिया छी। कखैन रहत कखैन उड़त तेकर कोन ठेकान।”

जलेसरीक दहलाइत मनकेँ पकैड़, पीपर आकि बरक गाछमे जहिना भूतकेँ काँटीसँ ठोकल जाइ छै तहिना ठोकैत सिन्धुनाथ

बजला-

"दस दुआरी छी तँ आरो नीक भेल किने जे दसो दुआरि गाए-महींसक रहैत दूधक धार बहए, तइमे अहाँक कोन जमा-जिगीर चलि जाएत जे एना बोनैया कुकुड़ जकाँ औनाइ छी? अपन घर-गिरहस्तीक ठेकाने ने अछि आ...।"

जलेसरीक मन सहैम गेल। मने-मन समझौता करैत बजली-

"हँ राइतो बहुत भऽ गेल।"

दुनू परानीक बोली-चाली तँ बन्हा गेलैन मुदा आँखिमे झपकी एबे ने केलैन। तैयो दुनू अपन-अपन गर पकैड़ सुतैक उपक्रम केलैन। मुदा दुनूक आँखिक नीन उड़ल।

जहिना छोट-छोट बच्चा रस्ता परहक गरदा समेट थुम्हा बना अपनाकेँ संकल्पित चुपा-चुप, धुपा-धुप व्रत चुपीसँ करैत जे पहिने बाजत से चोर।

मुदा ओ सभ संकल्पकेँ निमाहबो करैए। निमाहैए एना जे जे चोर भेल ओकर दुनू हाथ जोड़ि लपमे माटि भरैत अछि तैपर शिवलिंग जकाँ दू-तीन इंचक कटकी गोबि दइत। आ दुनू आँखिकेँ दुनू हाथसँ दाबि अनभुआर जगहपर लऽ जा रखा, आँखि बन्ने केने घुमा कऽ ओही जगहपर आनि कहैत जे 'जो ओइ रखलाहाकेँ ताकि कटकी उखाड़ने आ।' ओहो जखन ताकए जाइए तखन बौआइत-बौआइत ताकियो लइए आ केते हेराइयो जाइए...।

मुदा से सिन्धुनाथकेँ नै भेलैन। चुपा-चुप करैत अपन जीवन सूत्र पकैड़ चलैक विचार केलैन। जहिना जागल लोककेँ काज रहने काजमे मन लगैए आ काज नै रहने उकस-पाकस करैए तहिना किछु-कालक पछाइत जलेसरीकेँ भेलैन। कनीयेँ जोरसँ सिन्धुनाथकेँ बिठुआ कटलकैन। ओना, सिन्धुनाथो जगले तँए बुझि गेला मुदा

अपन काज दुआरे अपनाकेँ सुतल घोषित करैत हँ-हूँ किछु ने बजला।

जहिना छिड़िआइत आकि कोनो छिड़ियाएल वस्तुकेँ पकैड़-पकैड़ समेटलो पछाइत फेर छछैल कऽ आकि गुड़ैक कऽ पुन: छिड़ियाइते रहैए तहिना सिन्धुनाथ छिड़िया गेला। मुदा तैयो जलेसरी जोर दैत दोहरी बिठुआ कटलकैन जे कोनो कीड़ी-फतिंगीक नाओं कहि फेर एकबेर महींस घर देखि आएब। किछु छी तँ दूधक बखारी छी किने? मुदा सिन्धुनाथ बुझितो अनठौलैन। बुझबो केना ने करितैथ जे दाँतक काटब आ बिठुआ काटब एकरंग थोड़े होइए। काटबो तँ रंग-रंगक ऐछे, केतौ विचार काटब, तँ केतौ जिनगी काटब, केतौ सम्बन्ध काटब, तँ केतौ बिठुआ काटब। जलेसरीक चुटका चुटकीएमे रहि गेलैन जइसँ चुटकियाइते रहि गेली।

मुदा से भेलैन नै सिन्धुनाथक मनमे उठलैन जे आफदक अन्त भेल की नहि। माने जाबे पत्नी जागल रहती ताबे आफत बनल रहती, नीन पड़ि जेती तखन ने बुझब जे सोल्होअना निचेन होइ-जोकर भऽ गेलौं, जँ से नै परेखि लेब तँ जागल लोक उकस-पाकस कैरते अछि, से जँ भेल तखन तँ अनेरे पानिक लकीर जकाँ केतए-सँ-केतए दहला कऽ चलि जाएत। मनमे अबिते सिन्धुनाथ नरमेसँ पत्नीकेँ बिठुआ कटलैन।

मुदा तँए कि जलेसरी मानिनि नै जे लगले मानि जइतैथ हुनका कि नै बुझल छैन बिठुओ-बिठुआक मोल छइ। खीर आ खिच्चैड़केँ एक कहि-कहि बाल-बोधकेँ लोक ठकि लइए जे बौआ दलियाहा-नुनियाहा खीर छिऐ। मुदा बिठुआक मोल जलेसरी नै बुझै छैथ से बात नहियेँ अछि। मुदा सुतरलैन। सुतरलैन ई जे ओहो ऊह-आँह नै केलैन। दुनू जागल कि दुनू सुतल से तँ वएह बुझता, जँ अहूँकेँ

परेखब हुअए तँ अजमा कऽ देखियौ।

सिन्धुनाथकेँ अपन कएल काज आ अपन विचारपर खुशी भेलैन। खुशी ई भेलैन जे अपन पुश्तैनी खेतक इतिहासमे पाँच कट्ठा खेतक मालिक सिन्धुनाथो। पुश्तैनी परम्परानुसार माए-बापक संग जे बोइन-बुत्ता करब शुरू केलैन ओही बीच परिवार छोट रहने आ आमदनी बढ़ने घराड़ी छोड़ि पाँच कट्ठा खेत पिता कीनि देलकैन। अपन जिनगीक अन्त सियावरकेँ भेलैन।

सिन्धुनाथक संग जलेसरियो ओहने जिनगी पकड़ने अपन पैंतीस बर्खक उमेरपर पहुँच गेली। अपन जे सम्पैत- पाँच कट्ठा खेत- छेलैन तेकरा समुचित ढंगे खेती नै केने उपजा-वाड़ीक कोनो ठेकान नहि, जइसँ जिनगीक कोनो पहिया घुसकै-फुसकैक आशा नै दइ छेलैन।

बदलैत परिवेसमे मन विचड़लैन। विचड़िते मनमे भेलैन जे अपन जिनगी अपना-भरे ठाढ़ करब। तइले श्रम-साधनक खगता हएत। श्रम तँ ऐछे भर्लें कम्मे किए ने हुअए, रहल साधनक, ओ केना औत? जमीनक मोल पहिने जे छल, आब ओइसँ बेसी कता-गुणा भऽ गेल, मुदा अधिक पूजी भेलौ पछाइत आमदनीमे बढ़ोतरी नै भेल। साधन दू-दिसिया अछि। एक अछि बैंक आ दोसर अछि बपौती सम्पैत।

पाँच कट्ठा खेतक उपज बैंकक सूदियो बरबैर नै अबैत अछि तैपर मलगुजारीक देनी अछि, एहेन स्थितिमे की नीक? बैंकक पूजी दिस बढ़िते मन भिन-भिना गेलैन। भिन-भिना ई गेलैन जे कोनो कारोबारकेँ बैसैक पूजी नै बना ओझरा गेल अछि। बैसैक पूजीक माने भेल जैठामसँ काज शुरू हएत। मुदा सालक-साल घुमलो पछाइत, श्रम-साधनकेँ लूटबैत, कियो-कियो ठाढ़ होइमे सफलो होइ

छैथ मुदा अधिकांश असफले। सिन्धुनाथ विचारि लेलैन जे पाँच-कट्ठामे सँ एक कट्ठा बेच लेब। पचास हजार रुपैआ हएत, दस हजार बेना लऽ रहैक ठौर बना, किछु दिनक खोराकी जोड़िया लेब। पछाइत एक-मुश्त रुपैआ लऽ कऽ महींस कीनि आनब।

तीन पूजी एक संग औत- दूध, बच्चा आ महींस। ओकरे सेवा केने जिनगी आगू मुहेँ ससरत। केकरा ने मन होइ छै जे बच्चेसँ हवाइये जहाजकेँ सवारी बनावी, मुदा...।

चालीस हजारक गुजराती भैंस कीनि आनि, खुटापर बान्हि नव जीवनक नव वर्षक नव कामनाक संग सिन्धुनाथ दुनियाँमे पएर रोपैक परियास केलैन।



तिथि: 04 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 3392

जाड़ फाटि गेल

माघ मासक अनहरिया पख। रातिक आठ बजेक रेडियो-समाचार सम्पन्न भऽ गेल छल मुदा नअ नै बजल रहए। ओना, मौसमक चकर-चालिसँ कखनो वसुधा हरित-भरित भऽ जाइ छैथ तँ कखनो वेनग्न बनि ज्वालामुखीक लाबा सेहो छिड़िऐबते छैथ। मुदा से नै भेल, तँए तेसराँ जकाँ अदहा फागुन तक लोक सीरके नै ओढ़ने रहत। हँ, एते तँ जरूर भेल रहै जे केता सालक पछाइत एहेन शीतलहरी तेसराँ साल भेल छेलै, जे रेकर्ड गिनीज-बुकमे तँ अछिए। सेयोगो नीक बैसलै। एक तँ भदवरिया बाढ़ि आबि धरतीकेँ तेना डुमौलक जे गहुमक चासकेँ चसिया देलक आ दलहन-रब्बीकेँ बसिया देलक। मात्र चसियौलक-वसियौलक से नै गामेसँ बैला देलक। तैपरसँ तिला सकराँइतिक प्रात तेहेन बरखा भेल जे वातावरणे पथरा गेल, जे पानि बनबैत शीतक संग सिहकी भरैत रहए।

ओना, अष्टमीक एक पहर राति बीतल छल मुदा साँझक फड़िछौट पछुआएले रहए, किएक तँ तीन घन्टाक पहरमे नअ बजलापर एक पहर होइत अछि ने। जेना छहसँ नअ। मुदा सेहो सभ दिन थोड़े होइए। जेठ अपन दिनका हिस्सा बेसी लऽ रातिकेँ रतिया कऽ मतिया दइ छइ। जइसँ पुरुखो आ नारियोक मतिये रतिया कऽ मतिया जाइ छइ। तँए की माघो पाछू हटै छै? ओहो रातिकेँ बढ़ियाँ आ दिनकेँ दीनमा बना दइते छइ। मुदा जेकरा रातिक पहिल घड़ी कहियौ आकि पहिल, दोसर, तेसर साँझ कहियौ...।

मुदा नअ बजैमे किछु मिनट बाँकी जरूर अछि। जहिना आन किसान परिवार-सभ अपन रातिक पहिल पहरकेँ अरामक समय बना भवितव्य जिनगीक सूत्र जोड़ैक अवसर तँ बना लइ छैथ तहिना स्कूलो-कौलेजक विद्यार्थी पठन-पाठनक बनैबते छैथ। ओहो खेला पछाइत सुतिते छैथ। सबहक अपन जिनगीक सूत्र छैन। ओसारक ओछाइनपर करोट गरे पड़ल, माथ तर सिरमा नेने बीरू काका लूड़ू-खूड़ू करैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“भरि दिन जहिना अहाँ छिछियाइत रहै छी तहिना रातियो-बिराति अराम करब से नहि। जाबे एकठाम भऽ कऽ चिड़ै जकाँ मुँह-मिलानी नै करब ताबे चेहराकेँ चहरा केना पेटमे जाएत?”

वीरू कक्काक बातकेँ नेसनी काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली, मुदा कोनो प्रश्नक जवाब कियो जे दइ छथिन से तँ किछु चढ़ाइए कऽ, भलेँ पुछनिहारक प्रश्न बुझने हुअए आकि नै बुझने हुअए। हाँइ-हाँइ कऽ नेसनी काकी बेटीकेँ दालि छौंकैक सरंजाम- करौछ, तेल, मिरचाइ, लसुन इत्यादि- चुल्हि लग रखि अपने ससरैत पति लग आबि किछु आगूए-सँ कहलखिन-

“अहाँकेँ ते खाली पेटबे की लोटबे रहैए, हमरा तइसँ निमहत?”

चढ़ल बोल जेहने नेसनी काकीक छेलैन, जे जहिना कोनो गोल वस्तु आगूसँ गुड़कैत अबैत हुअए आ अपनो कनी तिरछिया पाछू हटि सह मारने जहिना गति तेज होइ छै, तहिना वीरू काकाकेँ भेलैन। बजला-

“अहाँ जकाँ हम मायावी थोड़े छी जे भरि दिन, भरि राति मये पसारब। घरमे जखन बेटी अछि, तखन जँ ओकरा चुल्हि-चिनवार नै सुमझा देबै तँ की सभ दिन अपने धेने रहब?”

वीरू कक्काक ऐगला बातपर नेसनी काकीक धियान गेबे ने केलैन। मुदा पहिलुका बात 'मयावी'पर धियान ओहिना छह-छह करैत रहैन जहिना कोनो रूप-सुन्नरि बिनु आभूषणे, बिनु वस्त्रे छह-छहाइत रहैए। पुछलखिन-

"की मयावी?"

ओना, अपन मनक विचारकेँ तर पड़ैत वीरू काका देखलैन। केना ने देखितैथ। तेहेन मायाक मायामे पड़ि गेलौं जे बजैक वेगमे अपनो मायाधीन, मायातीत, मायाधीशक बीच अनेरे ओझरा जाएब। बजा गेल मायावी! मनमे रहैन जे हँसी-खुशीक बात करब, से तर पड़ि गेलैन। मुदा संगियोँ तँ संगीए छी, छने रूष्ट, छने तुष्ट! सूपक गोलका भाँटा जकाँ कखैन थीर रहत आ कखैन गुड़ैक जाएत, तेकर कोनो ठीक अछि। तखन तँ नीक हएत जे अपन हारि मानी, बजला-

"दुनियाँमे के नै मायावी अछि जे अहाँकेँ अधला लागि गेल। भगवानो सभ की जोग-मायावी कम छैथ।"

भगवानक नाओं अबिते नेसनी काकीक मन हरहरा कऽ हरिअर कचोर बनि गेलैन। बजली-

"बेटी-पुतोहुक जँ आगू-पाछू करैत अपन नजैर बरतन-बासनपर नै राखब, तँ किछु भेल तँ अनकर हाथ भेल किने। जे मुँह सभ दिन अपन हाथ देखलक, ओकरा जँ प्रवोधि कऽ नै राखब तँ ओ अनेरे कलह करत किने जे...।"

नेसनी काकीक विचारकेँ काट-खोँट करबसँ नीक वीरू काका पशे बदलब बुझलैन। बजला-

"जड़कल्ला फटि गेल। ई साल खेप गेलौं।"

'ई साल खेप गेलौं' पतिक मुहसँ सुनिते नेसनी काकीक साँस जेना तेज हुअ लगलैन। बजली- "एना किए मुहसँ अवाच बात

निकाललौं? जाबे माँगमे सिनूर रहत ताबे खेपबै नै जीबै।"

पत्नीक विचारमे वीरू काकाकेँ गर अँटलैन। अधखिल्लू मनक फूलक सुगन्ध बिखेरैत बजला-

"छौंक ले की सभ रेशमा लगमे देलिऐ?"

नेसनी काकीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बड़बड़ेली-

"माघ मास छिऐ, नेनमैत बेटी अछि, जँ ओकरा ई नै सिखा-पढ़ा देबै जे बेटी लसुनक लोक चटनियोँ पीस कऽ खाइए, मसल्लो खाइए आ आन-आन वस्तुक संग रसायनो बनै छइ। मुदा तेलमे भूजि जँ दमा, दुखताह, सरदीआह देह खाएत तँ ओकरा-ले ओ अमृत होइए। ओकरा जँ समयपर नै कहबै ते बाल-बोध अछि, बिसैर जाएत।"

ओना, वीरू कक्काक मन अपन जिनगी आ खेतीक जिनगी देखि हलसल-फुलसल रहैन। अपन हँसी-खुशी पत्नीक हँसी-खुशीमे मिलबए चाहै छला मुदा नेसनी काकी अपने पाछू वेहाल। सुनैक कान कहाँ रहलैन। आँखि-कान-नाक-मुँह सभटा वेहाल भऽ गेलैन। वीरू कक्काक मन फेर बदललैन। बदैलते बजला-

"लसुनक जे एते बड़ाइ केलौं से कएल-खाएल अछि आकि उड़ाएल-खाएल अछि?"

ओना, पतिक प्रश्न नीक जकाँ नेसनी काकी नै बुझली, मुदा विषयोकेँ विचारैक तँ अपन रस छइ। तइमे नेसनी काकी रसाएल छैथे। रसाएल ई जे अपन चालीस बर्खक पतिकेँ अठारह बर्खक दमा रोगीक रूपमे सेवा करैत आबि रहल छैथ। तँए नितराएब, वेहाल हएब सोभाविके छेलैन। वीरू कक्काक मन ठमकलैन, ठमकलैन ई जे जहिना सेवा केनिहार सेवक अपन-अपन जिनगीक अनुकूल जीवन दर्शन पबैए, तहिना ओहो ने भेली। दमा रोगक शिकाइत

बारहो मासक सालमे, कोन मौसममे रोगक रूप बढ़ै छै, कोनमे समगम रहै छै आ कोनमे कमै छइ। एकर पहचान नेसनी काकीकेँ बेवहारमे आबि गेल छेलैन। तँए अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, मर-मसल्ला, समयानुकूल हुअए, एहेन इच्छा नेसनी काकीकेँ सदैत काल मनमे रहै छैन। मुदा डेढ़ बीघाबला किसानी जिनगी केहेन होइ छै ओ तँ वएह किसान बुझि सकै छैथ। नेसनी काकीक वौड़ाहा मन केतौ ठाढ़ हुअ नै चाहैन। बजली- “रेशमा बेटीकेँ अपन सभ लूरि-बुधि सिखा दोसर घर पठेबै, नै तँ बास हेतइ। अनेरे अनका मुहेँ सुनौत जे माए केहेन धमधुसरी छेलइ। तँए साँझेसँ चुल्हि लग बैस चीजो-बौसक जोगाड़ कऽ दइ छिऐ, आगियो तपै छी आ कोन ताके की बनत सेहो सिखबै छिऐ।”

पत्नीक बात सुनि वीरू कक्काक मनमे उठलैन माइयोक तँ नमहर विद्यालय बाल-बच्चा लेल अछि। मन खुशी भेलैन। मुदा तैसंग ईहो भेलैन जे कोनो वस्तुकेँ विधिवत उपयोगी बनाएबे ने लूरि भेल। ओना, पति-पत्नीक जिनगीमे दिनानुदिनक जे किरिया अछि ओ हँसी-खेलक भेल। मुदा जखन दुनू बेकतीक देहमे कोनो काए लगै छै तखन ओकरा छोड़बै वा पचबैले जे सेवा लगै छै, ओतइसँ ने सेवाक प्रादुर्भाव होइए।

मन अपन जिनगी दिस घुसकलैन। तेसर सालक जे शीतलहरी रहै, जँ ओ नै रहितैथ तँ नहियेँ जीब पेतौं। जिनगीक लीलाक अन्त भऽ जइतए। मनमे उठिते वीरू काका नेसनी काकीक ओ रूप देखए लगला जे केना बारह बजे रातिमे हुर-हुर-धुतहुरक पातक कुच्ची बना छातीक मालिश करै छेली। जँ संगी बनि ओ नै ठाढ़ रहितैथ तँ की आजुक दुनियाँ देखि पबितौं? मुदा जहिना दुखमे मन वौराइ छै तहिना सुखोमे तँ वौराइते छइ। सोना पेनौं मन वौराइ छै आ धुथुरो खेने तँ वौराइते छइ। मुदा नाओं तँ दुनूक...। जे सेवा अठारह बर्खसँ

पत्नी करैत एली अछि ओकरा सुतलो नीने नै नकारि सकै छी...।

नेसनी काकी बजली- “भगवान केकरो ने अधला केलखिन आ ने केकरो अधला करै छथिन। मुदा आगू-पाछू जे दूत रखने छैथ तिनका सबहक किरदानीसँ लोक तबाहीमे पड़ैए।”

ओना, अपन चास-बास, बाड़ी-झाड़ीक रंग-रूप नेसनियोँ काकीक मनकेँ हरियेनहि छैन, मुदा जे हरिअरी वीरू काकाकेँ छैन ओइसँ कम नेसनी काकीकेँ छैन। मुदा बड़का महाजनकेँ जहिना अरब-खरबमे मन नचैत रहै छै तहिना छोटकोकेँ तँ साइयो-सैंकड़ामे नचिते छइ। तहूमे अन्नक खर्चक हिसाब जोड़ब ने पुरुख-पातरक काज भेल, तीमन-तरकारी जँ उपजल रहत तँ किए ने जनानियोँ चटनी-भुरतासँ लऽ कऽ सन्ना-सन्नी करैत भुजल, रसगर, झोड़गर, लटपट-सटपट करैत तरूआ तक लऽ कऽ चुल्हिक पूजा, जूड़शीतल पाबैन जकाँति करत।

ओना, वीरू कक्काक परिवार जेते अपना भरे ठाढ़ होइत गेलैन तही हिसाबे विचारो दौड़ैत मजगूती पकड़ैत गेलैन अछि। से ओहिना नै भेलैन, अपन जिनगीकेँ चीन-पहचिन कऽ जीबैक बाट जेना-जेना ताकि-ताकि पकड़ैत गेला तेना-तेना विचारो आ परिवारो अपना भरे उठैत गेलैन अछि। नेसनी काकीकेँ अपन पेटक टटका जेतेक बात रहैन ओ उझैलते मन खलियेलैन।

मन खलियाइते अँकुरलैन। अँकुरलैन ई जे अपने किए सोर पाड़ने छला से तँ बिसरिये गेल छेलौं। जँ कहीं मने सोगाएल कि रोगाएल होइन, तखन तँ चूक भेल किने। मुदा उपाय? हँ उपाय अछि, मन कलशलैन। मुँहक रूप छिटकलैन। छिटकबैक कारण जे बाल-बोध माए-बापकेँ हँसैत देखि हँसि अपन सभटा कानब-खीजब बिसैर जाइए, तहिना ने बालकृष्णदेव पति छैथ। जँ संगे-संग खिल

जाइथ तँ प्राश्चित कटत की नै? मन मानि गेलैन, मकै-धानक लाबा जकाँ छँहोछित तँ नै मुदा केराउ-मटरक भुज्जा जकाँ अठनियाँ मुस्की दैत नेसनी काकी बजली-

"हाय रे बा...! अहाँ किए सोर पाड़ने छेलौं से एको बेर बजलौं। दुनू बेकतीक बीचक बात छी केते रंगक काज अछि हमरा सूढ़िपर जे छल से बजलौं, अहाँ किए मुँह दाबि लेलौं। अच्छा कहू जे मन नीक अछि किने?"

अखैन धरि वीरू काका नेसनी काकीक लहैरमे लहराइत रहैथ तँए अपन सुधि-बुधि हेरा गेल छेलैन मुदा पत्नीक बात सुनिते मोन पड़लैन। बजला-

"जरकल्ला फटि गेल!"

ओना, वीरू कक्काक अपन प्रश्नक इशारा रहैन जे परिवारक अखैन धरिक जे समस्या रहल अछि ओकर समाधान भऽ गेल। मुदा नेसनी काकीक अपन जान हल्लुक होइक कारण रहैन, बेमरियाह पतिक सेवासँ माघक मुक्ति भऽ गेल। मुक्ति मनमे उठिते बुदबुदेली-

"एहेन-एहेन सँए-खौंक कालकेँ तँ सतबन्हाँ बाढ़ैनसँ झँटबै!"

जिनगीक अधिकांश समस्याक सामधान वीरू काका, नेसनी काकी मिलि कऽ केलैन। जे कल्पना लोकक मनमे विचड़ै छै वएह जखन साकार भऽ जाइ छै तखन ओ काल भागि भूत भऽ जाइ छइ। मुदा भूतो तँ भूत छी, कखैन भूत बनि जाएत आ कखैन वर्तमान, सएह ने बुझि पेबइ। जहिना सत् कखैन रज् आ रज् कखैन तम् भऽ जाइए तेकर ठेकान नै छै तहिना भूतो-वर्तमान आ भविसक अछि।

बिहुसैत वीरू काका नेसनी काकीक बातकेँ टोनियबैत पुछलखिन-

"कोन कालकेँ सतबन्हाँ बाढ़ैनसँ झँटबै?"

जहिना कियो केनिहार अपन काजकेँ प्रफुल्लित होइत देखैए आ मनमे खुशी होइ छै, तहिना वीरू कक्काक मनमे खुशी रहबे करैन। पुरुखक हथियार लाठी छी जे पानिमे तकछक-रकछक बनि जाइए आ मोटा तर भार। मुदा तेना नहि, नारीक अपन अनुकूल हथियार बाढ़ैन छइ। सालकेँ तीन मौसममे बाँटि, तीनू मनसूनकेँ तीन-तीन अवस्थामे खाँति कऽ तेना खोंटिया लेलैन जइसँ नेसनी काकीकेँ अपनापर भरोस जागि गेल छैन, विचारमे गुरुत्व आबि गेल छैन। तँए अपनापर नै नाचैथ, सेहो केहेन हएत?

विचारकेँ समटैत वीरू काका बजला-

"भेल, बहुत भेल, तिला-सकराँइतसँ फगुआ धरिक खेल खेलि लेलौं। आब पति-पत्नी बनि परिवारमे खेलू।"

जहिना कोनो पनचैतीमे बजक्कर उझैक-उझैक अपन समय गमेला पछाइतो बजैत रहैए तहिना उधियाइत मन नेसनी काकीक रहबे करैन। बजली-

"खेलेटा किए खेलब! धुरखेलो किए ने खेलब। अपन घर छी, अपन परिवार छी तइमे पाहुन बनि थोड़े आएल छी जे पहुनाइ करब। संग मिलि सभ खाएब, सभ पसरब, सभ मलरब।"

नेसनी काकीक बात फेर, नागीन फुलझड़ी जकाँ वीरू काकाकेँ नेसि देलकैन। मने-मन सोचए लगला जे भेल, बात फेर छिड़िया गेल! जे बात कहए चाहै छिऐन ओ तर पड़ि गेल। जे लगसँ दौग कऽ आगू बढ़ि गेल तेकरा बिना दौड़ कऽ पछुएने थोड़े घेरि पाएब, तइले तँ कनी दौड़ै पड़त। बजला-

"की धुरखेल कहलिऐ?"

पतिक सेवा जेना नेसनी काकीक पतिव्रत-रूप आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। बजली- "एकटा भेल खेल, दोसर भेल धुरखेल। अहाँक

देहमे दम्माक काए लागल अछि, एकरा केना छोड़ा कऽ नीरोग बना संग मिलि जीब लेब, वएह जीअब भेल धुरखेल।”

पत्नीक प्रश्नकेँ गंभीरतासँ लैत वीरू काका बजला-

“केना रोग छोड़ा कऽ निरोग बना राखब?”

अपन गुरुत्वक एहसास नेसनी काकीकेँ भेलैन। बजली-

“नअ बर्खक अखिहास केने ई लूरि हमरा भऽ गेल जे ता-औरुदा ई दम्मा किछु ने बिगाड़ि पौत।”

पत्नीक बात सुनि वीरू काकाकेँ अपन जिनगीक आशा बढ़लैन। आशा बढ़िते आशक्त भऽ पुछलखिन-

“की कहलिऐ नअ बर्खक अखिहास?”

जहिना स्कूल-कौलेजमे शिक्षक धुर-झाड़ बुझबै छथिन तहिना नेसनी काकी धुरा झाड़ैत बजली-

“बारह मासक सालमे देखार तीनटा मनसुन अछि। जाड़, गरमी, बरसात। अही तीन मनसुनक बीच लोक जीबो करैए आ मरबो करैए।”

बिच्चेमे वीरू काका मुड़ी डोला सुहकारैत बजला-

“हँ से तँ सएह देखै छिऐ।”

पतिकेँ सुहकारिते नेसनी काकीक सूढ़ि चढ़लैन। समरथाइ जगलैन। समरथाइ जैगते अपन सामर्थ देखबैत बजली-

“ओना, सालक गति एकहरियो अछि दोहरियो आ तेहरियो अछि मुदा...।”

नेसनी काकीकेँ आगू बजैले मुँह खुजले रहैन आकि बिच्चेमे वीरू काका टोकि देलखिन-

“की एकहरी, दोहरी आ तेहरी?”

जेना बरीक सभ कथू ठोरेपर ओरियाएल रहैन तहिना खोंटैत बजली- "गोटे साल खूब जाड़ भेल, शीतलहरियो भेल, तहिना गोटे साल खूब झमझमौआ बरखो भेल जइसँ बाढ़ियो आएल। तहिना गरमियोँ भेल जइसँ लू सेहो चलल...। मुदा ई भेल एकहरी। दोहरी भेल जे लगातार साले-साल शीतलहरीक संग जाड़ो भेल आ बर्खाक संग बाढ़ियो आएल।"

ओना, नेसनी काकी अपन बात अपना जनैत सोझराइए कऽ बजैत रहैथ मुदा वीरू कक्काक मनमे अपन बात बजैले औढ़ मारैत रहैन, तँए जल्दबाजीमे पत्नीक बातपर विराम दिअ चाहैत रहैथ। बजला-

"एना ओझराएल बात नै बाजू, सोझ-साझ करि कऽ बाजू।"

पतिक बात सुनि नेसनी काकी ठमकली। ठमकली ई जे पतिदेव तँ पेटक बात बुझए चाहै छैथ। मुदा नीक जकाँ केना घोरि कऽ पीयेबैन, जइसँ मन मानि जाइन। मनमे उठलैन जखन एकटा अक्षर एकटा काज बुझा सकैए, एकटा आँगुर भगवानसँ राक्षस तक देखा सकैए तखन हमरा बुते किए ने हएत। कहलखिन-

"देखियौ, जखन कम जाड़ रहल वा मध्यम जाड़ रहल वा अधिक जाड़ रहल तँ ओ तीनूक तीन सूत्र भेल। तीनू सूत्रक अपन-अपन खेल-वेल छइ। तँए ओ खेल-वेल जखन पकड़ाएत तखने ने ओकर नीक जकाँ कूटन-पीसन करबइ।"

पत्नीक विचारकेँ सुहकारि वीरू काका बजला- "हँ, से तँ हेतै?"

अपन विचार मनैबते नेसनी काकीक मन नेसा गेलैन। बजली-

"आब अपन बाजू जे की कहै छेलौं?"

'बाजू जे की कहै छेलौं' सुनि वीरू काकाकेँ अरिकोंच जकाँ

कब-कब तँ नै लगलैन मुदा ओल जकाँ मन घोल कऽ देलकैन! पति-पत्नीकेँ प्रेम-प्रेमीक प्रेमास्पदक आसनपर बैसबैत आँखिक बुइआ नजैरकेँ बदैल देलकैन! आँखिमे सुगबुगाइत दुनू बुइआ मुँह-मिलानी केलक। मुँह मिलानी कैरते दुनू दिस नाच करए लगल। वीरू कक्काक मनक तार-तंत्र तनतनेलैन। माथक टीक केतेकाल धरि टिकल अछि? जेतेकाल पत्नी छैथ। देवीरूपा पत्नीयेँक दयासँ ने अपन मान-समान बँचा पाबि सकै छी। तहिना दोसर दिस नेसनी काकीक मन अपन मांगक सिनूर देखि-देखि नचबो करैत आ गेबो करैत। जा धरि लुल्हो-नांगर आकि रोग-वियाधिसँ ग्रसित पुरुख संगी रहता ताबैए धरि ने ऐ सिनूरमे चमक रहत! अपने-अपने बेथा-कथा दुनूक मनकेँ चुरम-चुर करैत। गुमा-गुमी, चुपा-चुपी पसरल। पझाएल आगिकेँ जहिना खोंरनीसँ खोरि भनसिया नव आगि बना धधकबैए तहिना नेसनी काकी धधकबैत बजली-

"खाइयो-पीबैक बेर भेल जाइए, झबदे काजकेँ उसारू।"

तैबीच रेशमा नेसनी काकीकेँ सोर पाड़ैत बाजल-

"माए, भानस भऽ गेल! जाड़क मास छी धीपले-धीपल नीक हएत।"

एक दिस नेसनी काकी पतिक पाशमे फँसि बेदम भेल तँ दोसर दिस बेटीक बातक आशमे झूलए लगली। तैबीच वीरू कक्काक मन उमड़लैन। बजला-

"रेशमोकेँ सोर पाड़ि लिऔ। बच्चा अछि, असगरमे डर हेतै। एतेकाल काजक अनमेनामे छल मन नचै छेलै, मुदा काज सम्पन्न भेनौं ओकर मनक काज चलबे करतै।"

पतिक विचार पाल-पाल कऽ पाबि नेसनी काकी बीच-बचाउमे बजली- "बुच्ची, सभ कथूकेँ झाँपि दहक आ तोहूँ एतै चलि आबह।

बुड़हाक गप-सप्प सुनहुन हेन।”

वाह रे दुनियाँ! केतौ संगिनी बुड़हा कहि सम्मानित करैए, तँ केतौ हिप्पीबला बर, कोठाबला घर! ओना, पति-पत्नीक किछु बात एहनो अछि जे बाले-बोध-बच्चा किए ने हुअए मुदा ओहो घेरा दाइए दइए। जइसँ दुनूक सिनेह ससैर सन्तानो दिस बढ़ैए। वीरू काका बजला- “रेशमा माए, जड़कल्ला फटि गेल।”

रेशमा माए कहने जहिना रेशमाक कान ठाढ़ भेल तहिना नेसनी काकीकेँ अपन ओसताजीपर खुशी उपकलैन। उपैकते बजली-

“ऐबेर भगवानो दहिन छला, शीतलहरियो नै भेल आ जाड़ो कम खसल। ओना, हम जाड़ोक सभ सरंजामक ओरियान कइये नेने रही। मुदा ओहो सभ बँचिये गेल!”

नेसनी काकीक बात सुनि वीरू कक्काक मनमे भेलैन जे फेर पत्नी अपना दिस ससैर रहली अछि। मुदा अपनो तँ किछु कहब अछि। टोकारा दैत बजला-

“साँझसँ बहुत धमगज्जर भेल। एकटा बात सुनि लिअ।”

माए दिस रेशमा तकलक। नेसनी काकीक नजैर घुमिते मनमे भेलैन, बाल-बोध लगमे बैसल अछि, ओ की बुझत जे बाबूक बातकेँ माए कनवाहि नै करैए। पाछू घुसकैत बजली-

“अहाँ ते अपने बेर-बेर बजए चाहै छी आ बिच्चेमे बिसैर जाइ छी। मोन पाड़ि कऽ बाजू।”

माइक बात सुनि रेशमाक मन खनहन भेल। खनहन ई जे बीचमे माए बाधक नै बनती। वीरू काका बजला- “मरैत-जीबैत बुझू आकि हारैत-जीतैत, दुनू गोरे एतेटा जिनगी तँ काटि लेलिऐ मुदा आगू केना खेपब सेहो ते अपने दुनू गोरे ने विचारब।”

पतिक बात नेसनी काकीकेँ जेना नेसि देलकैन। नेसि ई देलकैन जे जखन लोक मरिए जाएत आकि हारिए जाएत तखन जीतत केना? जीतैक बाटमे केतौ-केतौ लोककेँ मरैओ पड़ै छै आ हारैओ पड़ै छै...। झिझकैत नेसनी काकी बजली-

“एना किए मरदुआर जकाँ बजै छी? पोखरा-पाटन जकाँ चौकोर किए ने बजै छी। एना कहियौ जे एन-मेन जहिना पाछूओ कटल तहिना आगूओ खेपब।”

माइक बात रेशमा नै बुझि पेलक जे ‘एन-मेन’ की भेल? बाजल-

“माए, आनी-मानी हम नइ जानी।”

भेल भानसमे पहपटि रेशमा ठाढ़ कऽ देलक। नेसनी काकी मने-मन सोचए लगली, बेर परहक भदवा ठाढ़ भऽ गेल। आब एकर आनी-मानी लगाएब आकि पतिक बात सुनब। तँए किछु बजैसँ परहेजे नीक हएत। जँ अपने आगू बढ़ि किछु बजता तँ रेशमाकेँ प्रवोधि लेब। ने ओ केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने, तखन निचेनेसँ किए ने दुनू माए-बेटी मुँह-मिलानी करि लेब।

मुदा वीरू काका ऐ ताकमे जे लगक बेटी तँ हुनके छिऐन तँए हुनकर बुझाएब बेसी नीक। तँए सबहक मुँह सभ ताकए लगल। नअ-बजिया घड़ी-घण्ट रामो-जानकी मन्दिरमे आ रधो-कृष्ण मन्दिरमे बाजि गेल। मुदा ऐठाम तँ भेल भानस बरतनमे कनैए।

थोड़े कालक पछाइत मौन भंग करैत वीरूकाका बजला-

“बुच्ची, बहुत दिनक पछाइत बदलल रूप जिनगीक पेलौं। तँए तोरा प्रश्नक उत्तर पछाइत देबह, पहिने अपन फटेहाल जिनगी सुनि लएह।”

मुदा बाल-बोध रेशमाक मनकमना लगले केना मेटा-जाएत

आकि दबि जाएत। बाजल- “बाबू, पहिने अपन बात कहियौ खाइबेर हमरा बुझा देब।”

सबुरिया बात रेशमाक सुनि वीरू कक्काक मन नचलैन। नचलैन अपन दायित्वपर। कोन बाप एहेन हएत जे रेशमाकेँ कुसुमा बनैत नै देखए चाहत। जेहेन कामना असान तेहेन दुनूक बीच दूरीक तफान। वौड़ाइत मन मुदा लगले देखलेहे जगहपर आबि गेलैन। हम पिता रेशमाक छिऐ, पोसै-पालैक भारबला। मुदा एहेन के रेशमा अछि जेकरा पिता नै होइन, रेशमा-कुसुमा बनि परिवारसँ लऽ कऽ गाम-समाजकेँ कुसुमित केना करत, तेतबे ने अपन दायित्व भेल? बजला- “बुच्ची, माए तँ संगे छेलखुन, मुदा तूँ बाल-बोध छह तँए कहि दइ छिअ। अखैन तकक किसानी जिनगीमे तीनियेँ साल किसानी भेल!”

ओना, मिडिल स्कूलक सातम कक्षाक छात्रा रेशमा, मुदा पिताक भाषा नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छलि। बाल-बोध रेशमा पिताक आँखिपर आँखि चढ़ा अपन विवशता देखबए लगलैन, ओना, वीरूओ काका रेशमाक नजैरक क्रिया पढ़ैत रहैथ मुदा थाह नै पाबि रहल छला जे रेशमाक जिज्ञासाक रूप की अछि। दू-दिसिया रूप देखि बिच्चेमे बौआइत रहैथ। मुदा कोनो प्रश्न नै उठैत देखि वीरू काका आगू बजला-

“बुच्ची, एतेटा किसानी जिनगीमे एक साल समगम बरखा भेने समगम उपज भेल, जइसँ समगम जिनगी भेटल। दोसर बेर शुरूहे बैशाखमे धारक मुँह सौंसे गौंआँ बन्हबौलैन तइ साल सेहो भेल आ ऐ साल अपन बोरिंग गरौने भेल अछि।”

बाल-बोध रेशमाक जिज्ञासा फानि उठल- “बाबू, तीनू तँ तीन रंगक भेल, तखन तीनू बरबैर केना भेल?”

बेटीक गंभीर बात सुनि वीरू काका ठमकला। ठमकला ई जे तीनूक तीन दिशा अछि, मुदा मिलानी एकठाम भऽ जाइए। तैसंग ईहो भइये जाइ छै जे तीनूक क्षमतो तीन रंगक छइ। समगम बरखाक माने भेल अखारसँ आसिन, जखन कि धारक भेल छह मास। मुदा बोरिंग तँ भेल बारहो मासक।

तेतबे किए, समगम समय भेने धान नीक हएत, अदहा-छिदहा रब्बी-राइ हएत, मुदा खेतीक मौसम तँ एकेटा पकड़ाइए, जखन कि तीन मौसममे तीन रंगक चास-बास- अन्नसँ फल-फलहरी आ तीमन-तरकारी धरि- लगने तीन गुणाक अन्तर भऽ जाइए। बोरिंग बारहो मासक ऐ दुआरे भेल जे खेतक कोनो उपजा लेल पानिक खगता होइ छै चाहे ओ जेमहरसँ आबए। अकाससँ बरखा बनि आबए, धारक पेटसँ आबए चाहे पतालक पेटसँ बोरिंग होइत आबए। आरो केते रंगक विचार सभ मनमे उठए लगलैन।

रेशमाक प्रश्नपर वीरू काकाकेँ मन विचरण करैत देखि नेसनी काकी खोंरना चलौलैन-

“भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल बाल-बोध अछि, खाएत-पीअत-सुतत आकि भरि राति सोंखैर सुनैत रहत।”

मनक पसरल विचारक जालकेँ समेट वीरू काका बजला-

“बुच्ची, परिवारक नव सिरासँ जन्म भेल।”

रेशमाक मनक ललक लड़कल-

“की नव सिरा?”

रेशमाक प्रश्न सुनि वीरू काका फेर ठमकला। ठमकला ई जे फेर प्रश्नक मुँह पाछूए दिस घुमि रहल अछि। एक सिरा भेल जइसँ नव सिराक जन्म भेल आ दोसर सिरा भेल आगू बढ़ैक। लगले मन फनैक गेलैन। फनैक ई गेलैन जे जहिना सभ अपन जिनगी हँसी-

खुशीसँ आनन्दित होइत चलऽ चाहैए, से चाहे हौ आकि नै हौ, ई दीगर भेल। मुदा से होइ की छै? होइ तँ ई छै जे लगले खुशी, लगले गम आ लगले दुखी! मुदा आनन्द तँ ओ भेल जे सदैत बढ़ैत रहत। तहिना किसानी जिनगी लेल किसानीक जे मूल समस्या छै, तेकर समाधान भेला पछाइते ने किसानक देहपर रोहानी औत, जइसँ रोहानियाँ रूप बनैत रोहनियाँ फलक आशा करत। पतिकेँ गुमे-गुम देखि नेसनी काकी फेर टिपलैन-

“समैयक ठेकाने ने करै छी आ सिरा-भट्ठामे दहाइ छी।”

वंशीक लहकी जकाँ पत्नीक बात सुनि वीरू काका लपैक कऽ बजला-

“दहाइ कहाँ छी, फाटल जाड़क वेगमे नहाइ छी।”



तिथि: 09 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 3328

सुरता

जेठ बेटा विलासक उड़न्ती समाचार कानमे पड़िते सुरत कक्काक सुरता खींचि लेलकैन। मने-मन विचार करए लगला जे पिताजीक मुँह कहलकैन पितृ-ॠृणक चुकता तँ पुत्र-सिर अबैए, मुदा पुत्र-ॠृणक चुकता पिताक सिर आबए..? ऐठाम आबि मन भन-भना उठलैन-

“बेटाक रीन नै भार माए-बापपर ओतेकाल रहै छै जाबे मड़बा बान्हि, चुल्हि-चौकाक पूजा नै भेल रहै छै, जखन से नै तखन अनेरे उड़ी-बीड़ी मनमे किए लगौने छी।”

मन ठमकलैन, मुदा लगले भेलैन जे कहाँदन हमरो नाओं केसमे दऽ देने अछि। झाँपल रिपोट छै जे विलास दुनू परानीक नाओंसँ जे पकड़ेलै से तँ पकड़ेबे केलै, कहाँदन ईहो छै जे पिताक हाथे सेहो रुपैआक निकासी भेल, तखन तँ दोखी भेबे केलौं किने। किए ने कोट-कचहरी करबाइ करत, मुदा कोटो-कचहरी की केकरो अनकर छिऐ जे हमर बात नै सुनत। मन थीर भेलैन, मुदा लगले दोसर बात मनमे खसलैन। खसलैन ई जे कहाँदन ईहो कहनिहार गवाह सभ भऽ गेल अछि जे कहै छै- जँ सरकारकेँ सही-सही जानकारीक गवाह बनि गवाही दिऐ, तखन...।

ईहो सुनै छी जे कहाँदन सरकार मानि रहल अछि जे जे सही जानकारी देत, ओइसँ तँ शासनेक मदैत ने भेल, ओकरा कोनो सजा नै हेतइ, संगे अबै-जाइक भत्ता सेहो भेटतै। मुदा ने सुरत काका

पत्नीकेँ कहलखिन आ ने कमली काकी पतिकेँ। कहनाइयो उचित नहि। परिवारक बात छी, तहूमे जेठ बेटा! छोट रहैत तँ बाल-बोध कहि टारिओ देल जा सकै छल। अधखिजू समाचार कानमे रहैन तँए दुनूमे सँ कियो अवाच बात मुहसँ बाजए नै चाहैथ। जे उचितो अछि। सरकारी कोषक गमनक मामिला अछि, नोकरीक दरमाहाक आंशिक रूपमे भागीदारी अछि, तखन वेतनक अतिरिक्त हाथ बढ़ाएबकेँ के उचित कहता। केकरोसँ की छिपल छै जे दू-दिसिया गमन छइ। एक दिस आम-जन दोसर दिस शासन-जन, तैबीचक मामिला छी!

दिनक सुर्ज खसैत-खसैत रातिक कगनीपर पहुँच गेल। केते पतियानी लगा आ केते बिनु पतियानीए चिड़ै सभ अकासमे उड़ैत। ओना, अवसान बुझि बगुलाक पाँती पच्छिमसँ पूब दिस उड़ि-उड़ि भरिसक पानिक किनछरि तकैले जाइत, से नै गाछ सभपर बनौल अपन-अपन खोंतामे रात्रि विश्राम करए जाइत। जखन गाछपर शयन-कक्ष छै तखन अनेरे किए अन्हारमे सुर्ज तकैले समुद्रक कात जाएत। सुर्ज समुद्रमे होथु आकि पहाड़पर जखने उगता तखने गाछपर पड़ि जगेबे करता, तैबीच ब्रह्म नीनकेँ किए छोड़ि देब। मुदा कौआ-चिलहोरियाक अखनो पतियानी नै लगल अछि, चारूकात टाँहियो मारैए आ कुचड़बो करैए। उल्लू तँ सहजे अखैन ब्रह्म नीनेमे हएत। जाबे दीया नै जड़त ताबे लछमी जगती केना, जाबे लछमी जागि कऽ सोल्हो कलासँ विभूषित भऽ बहराइले तैयार नै हेती ताबे हमर कोन काज। बाझ हम थोड़े छी जे जेकराले जेहने दिन तेहने रातियो, एके वृत्तमे लगल रहब।

बाध-बोन दिससँ आबि सुरत काका हाथ-पएर धोइ दरबज्जाक मुहथरिपर पएर रखबे केलैन आकि कमली काकी चाह नेने पहुँचली। आन दिनसँ भिन्न सुरत कक्काक सूरत कमली

काकीकेँ बुझि पड़लैन। मने-मन सोचए लगली जे किएक दिन अछैते सुर्ज मड़ियाएल छैथ? सभ दिन केहेन बढ़ियाँ हँसी-खुशीसँ चाहो पीबै छला आ दिन भरिक काजक नीको-बेजए सुनबै छला, मुदा आइ उदास जकाँ किए छैथ। जरूर मनमे कोनो ने कोनो सन्ताप छैन, जखने सन्ताप तखने विलाप! मुदा लगले मन आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते घुरघुरेलैन जे बौआबला बात ने तँ कियो कहलकैन हेन? जखन अपनो सुनलौं तखन ओ नै सुनने हेता सेहो केना मानल जाए। तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जहिना पुरुख नारीकेँ अनुकूल बना घाटक घटवारि करै छैथ तहिना ने नारियोक दायित्व बनै छैन जे पतिकेँ अनुकूल बना बाटमे बटमेर करैथ। मनमे अबिते पतिव्रत जगलैन। जैगते, जहिना अछाहे कुकुर भुकैए तहिना भुकली-

“माए-बाप बेटा-बेटीकेँ जन्म दइ छै, मुदा अपन पतिपाल तँ अपने करए पड़ै छइ। तइले किए बेटाक सन्तापसँ माए-बाप सन्तापित हएत? आगूमे चाह आएल अछि, चैनसँ पीबू। आब ऐ दुनियाँ आकि ऐ जिनगीमे रहि की गेल जे अनेरे मन वेपिरीत करब।”

पत्नीक बात सुनि सुरत कक्काक मनक दोसर दरबज्जा खुजलैन। खुजिते बजला-

“चाह ते रीब-रीबेमे चलि गेल, कनी नीक चाह पीबैक मन होइए।”

कमली काकी बुझि गेली जे अखैन हिनका लेल नीक चाह तँ वएह ने हएत जइमे चिन्नी कम आ लीकर बेसी होइ। बजली-

“कनी थम्हू, अपनेसँ बनौने अबै छी।”

पत्नीकेँ लगसँ हटैत देखि सुरत काका बजला-

“किए अपने चाह बनबए जाइ छी। जखन चुल्हि तर पुतोहु

बैसल छैथे तखन अपने किए अनेरे हमरा निमित चुल्हिक भीर जाएब। हुनके कहि दियनु जे कनी कड़गरसँ चाह बनौती।”

कमली काकी अनुकूलताक बाटमे प्रतिकूलताकेँ आएब नीक नै बुझलैन। कनी फड़िक्केसँ पुतोहुकेँ कहलखिन- “कनियाँ, चाहमे लीकर हिसाबे चिन्नी कनी कम देबइ।”

कहि पतिक आगूमे पुन: आबि ठाढ़ भेली। आँखि उठा सुरत काकाकेँ देखली तँ बुझि पड़लैन जे बेसी बेथाएल छैथ। बेसी बेथाएल छैथ आकि जिनगीमे केतौ बेधाएल छैथ से कमली काकी बुझबे ने केली। खोह परहक दौनक बरद जकाँ टोकारा भरली-

“जँ केकरो मुहेँ सुनी जे कौआ कान नेने जाइए ते अपन कान देखब आकि अनेरे दुनियाँमे छिछियाएल फीड़ब?”

एक तँ अपन सीमांकनक विचार दोसर कड़गड़ लीकर देल चाह, तैपर सँ पत्नीक टोकारा, सुरत कक्काक मनकेँ डोलौलकैन। डोलिते बजला- “एकटा उड़न्ती बात परिवारक सुनलौं...।”

जहिना दूटा कौआक बीच एकटा टुकड़ी रोटीले मुहसँ लुका-झुकी होइए तहिना सुरत कक्काक बोलकेँ लूझि कमली काकी बजली- “ओना, परसुए विलासक विषयमे सुनलौं, सुनला पछाइत जखन टोहियबऽ लगलौं तँ कोनो भाँजे ने बैसल।”

“किए ने कोनो भाँज बैसल?”

“केकरो गपक कोनो ठेकाने नहि। सभ अपने-अपने शिकारी जकाँ शिकार सधैए।”

‘सभ अपने-अपने शिकार साधैए’, ई तँ कोनो अधला नै भेल, मुदा एते तँ हेबे करत जे बेसी मुसहैनमे मूस केनए नुका रहत, से सभ बुते ताकल थोड़बे हएत? ओना, अखैन तक दुनू परानीक सोझहामे रहितो बात परोछे-परोछी भेलैन, मुदा जाबे सोझा-सोझी

परगट नै हएत ताबे घटनाकेँ जड़ियाएब सम्भव नहि। सुरत काकाकेँ मनमे उठिते मुँह खुललैन-

"देखू, अखैन दुइए परानी छी, घरक इज्जत-आवरूक बात छी, तँए मुँह दाबि बजलासँ नै हएत। दुनू गोरे मुँह-मिलानी करैत चलू जे अहाँ की सुनलिऐ आ हम की सुनलौं।"

पतिक बात सुनि कमली काकी सहैम गेली। सहैम ई गेली जे कियो जे किछु बजैए, से ओहिना थोड़े बजैए। जँ सोल्होअना सत् नै बजैए तँ सोल्होअना फुइसो तँ नहियेँ बजैए। जँ अदहो-छिदहो सत् हएत तैयो तँ परिवार कलंकित भइये जाएत। अपना अछैत जँ परिवार कलंकित भऽ गेल तखन बँचल की जइ लऽ कऽ आगूक जिनगीक बाट काटब। मुदा सम्बन्धो तँ देहा-देही अछि। केकरो बेटा जँ कुरसी पबैए तँ ओकरा ऊपर ने कुरसीक भार भेल, आकि ओकर परिवारक ऊपर? जँ से नै भेल तखन नीक-अधलाक भागी ओ बनत आकि परिवार? मुदा जँ परिवारक आनकेँ ओइमे लटपटौल जाए तखन ओ बँचि केना पौत? निरदोसो तँ दोखी बनबे करत? कमली काकीकेँ आगूक कोनो बाट सेरियाम देखिये ने पड़ैन। बजली-

"ओना, ने विलास अपने आ ने पुतोहुए अपना मुहेँ किछु कहलैन, मुदा गाममे तँ लाबा-फरही उठिये रहल छइ। जे सुनबो केलौं आ सुनितो छी।"

"सएह ने पुछै छी, जे कोन बात अहाँ केना सुनलिऐ आ हम केना सुनलिऐ।"

पतिक बात सुनि कमली काकी फेर बात घुड़ियबऽ चाहलैन। मुदा मनमे जेना झोंक उठलैन, तहिना बजली-

"बौआ कहाँदन सरकारक कोष गमन कऽ लेलक अछि?"

पत्नीक बात सुनि सुरत काका आगू बढ़ैत बजला- "हम तँ

ईहो सुनलौं हेन जे रुपैआ बैंकसँ बरामदो भेल अछि।”

कमली काकी-

“ई बात हम नै सुनलौं। सुनलौं जे कहाँदन लोकोक पाइ गमन केने अछि।”

नमहर साँस छोड़ैत सुरतकाका बजला- “सुनैमे आएल अछि जे हमरो नामे कहल गेल अछि जे हुनको हथौटी पाइयक कारोबार भेल अछि।”

पतिक बात सुनिते कमली काकी बजली- “एहनो अनसोहाँत होइ छइ। घरमे जँ पाइ आएल रहैत तँ हम नै देखतिऐ।”

तैपर मुँह दाबि सुरत काका बजला-

“मुदा, से घरमे बजने नइ ने हएत। ओ तँ कानून-कायदाक बात भेल किने, तत्खनात ते थाना-बहानाक काज शुरू भइये जाएत किने! तखन?”

पतिकेँ निराश होइत देखि कमली काकी बजली-

“थाना पुलिसकेँ बुझा कऽ कहबै।”

सुरत काका-

“जँ नै मानए, तखन?”

कमली काकीकेँ जेना मनमे झोंक उठलैन। बजली-

“जँ नै मानत तखन बुझल जेतइ। ओना, परसुए हुलास मधमन्नी गेल। घुमि कऽ एलापर सभ बात बुझबे करबै, तइले मनकेँ किए छोट करै छी।”

सुरत काका- “हुलासकेँ केना पता लगलै?”

कमली काकी- “ओकरा कहाँदन भौजाइ फोन केने छेलखिन।”

“की सभ कहने छेलखिन?”

पतिकेँ उत्सुक देखिते कमली काकीकेँ अपना विचारमे अनुकूलता बुझि पड़लैन। अवसरकेँ बिना गमौने बजली- “अपना दुनू गोरे ते सहजे अथवल भेलौं। तखन तँ हुलासे ने घरो-बाहर करैए आ बाहरो-घर करैए। तँए जाबे ओ मधमन्नीसँ नै अबैए ताबे, जहिना मुँह दाबि बिसरल छेलौं, तहिना ताबे धरि मुँह दाबि बिसरल रहू।”

पत्नीक एकोसिया रूप देखि सुरत कक्काक मन मुसकलैन। मुसैकते फुरफुरेलैन। फुरफुरेलैन ई जहिना एक दिन माघ जीने वा नहेने वा मुकावलाक शक्ति पेने, मासो भरिक माघकेँ खेलौना लोक बना लइए, तहिना जाबे हुलास नै आबि जाइए ताबे किछु बाजब अनुचित हएत। एकर माने ई नै जे घटने बिसैर जाइ। विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे एना भेल किए? कोषागारमे कोष पड़ल अछि, तँए ने। जँ धारक गतिये कोषो चलए तखन किए केतौ ठहराउ हेतै आकि चकभौरमे मोनि फुटतै।

सामंती बेवस्था जखन अर्द्ध-विकसित पूजीवादी बेवस्थामे संक्रमण हुअ लगैए, तखन संस्कार संस्कारक बीच नमहर खाधि बनि जाइए। जइसँ टकराहैटक जगह बनि जाइ छै, टुट-फुट शुरू होइ छइ। जइसँ धारक कातक खेतक जेहने दशा होइ छै तेहने जिनगियो आ विचारोक होइ छइ। जहिना धारक कातक खेतक माटि आ पानिक लहैरक बीचक जे स्थिति रहै छै जे कखैन कटनमा रूप पकैड़ काटि कऽ पेटमे थाल-कादोकेँ घोरि-घारि पाँक बना माटिक ऊपरो आ पानियोँक संग भँसियबैत चलैए तहिना भऽ जाइ छइ।

सुरत कक्काक परिवार मध्यम किसानक छैन। ओना, मध्यमो किसान केतेक रंगक छैथ, कियो एहनो छैथ जिनका बीस बीघा

जमीन छैन, कागजी रूपेँ मध्यम किसान भेला, मुदा खेतमे धार बहै छैन। तहिना एहनो छैथ, जे बालुक भाँजमे पड़ल छैथ। कियो एहनो छैथ जे चौर-चाँचरक भाँजमे पड़ल छैथ, तँ कियो एहनो तँ छैथे जे बीस बीघाक परिवार रहितो सम्पन्न परिवार छैथ। नीक जमीन, उपजबैक नीक बेवस्थाक संग जे परिवार अछि ओ किए ने सम्पन्नता आनत। मुदा से नहि, सुरत काकाकेँ आठ बीघा जमीन जइमे बोरिंग-दमकल अपना छैन।

सुरत काकाकेँ तीन सन्तान। जेठ बेटा माझिल बेटी आ छोट बेटा। नवका हवा-विहाड़िसँ बेसी प्रभावित परिवार नहि, तँए समटल खर्च, समटल जिनगीक गति। खेतक उपजासँ परिवारो चलैत आ दुनू बेटोकेँ कौलेज धरि पढ़ौलैन। ओना, अपन इच्छा रहैन जे जहिना बेटा-तहिना बेटी, सभ तँ अपने सन्तान भेल, तँए परिवारमे सभकेँ एक रंग खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता बर-बेमारीक इलाज तक तँ निमहैत रहैन मुदा पढ़ाइ लग आबि भदवा ठाढ़ भऽ गेलैन। भदवा ई ठाढ़ भेलैन जे पत्नी कहलकैन- “मैट्रिक तक बेटीकेँ पढ़ा लेलौं, जेते खर्च पढ़बैमे केलौं, तेते खर्च बिआहोमे हएत, खर्च दोबरा जाएत। से अपने जानी।”

पत्नीक विचार अकाट्य बुझलैन। मन दुनू दिस कुदलैन। एक दिस ई कुदलैन जे जेते बेटीक हिस्सा खेत-पथारमे हएत तेते ओकर चुकता करि दिऐ, जइसँ खर्च भारी नै बुझि पड़ैन। मुदा दोसर दिस जखन अपनापर नजैर पड़ैन तखन होइन जे बेटी तँ घरसँ चलि जाएत। अपने दुनू परानीक जिनगी केना चलत। जँ बेटा-पुतोहु कहैथ जे बारह मासमे चरि-चरि मासक हिस्सा भेल तँए चारि मास बेटियो ऐठाम किए ने रहब? तखन केहेन हएत जे अपने गामक समधि बनि खेलौना भऽ जाएब आ पत्नीकेँ भरि गामक लोक समधीनियाँ सरऽ रऽऽ करए लगतैन...! ऐठाम विचार ठमैक गेलैन।

ओना, बेटी-जमाइक परिवारसँ नीक बेटा-पुतोहुक होइ छइ। अपन घर-दुआर, खेत-पथार, सर-समाज सभ समटल रहै छइ। मुदा तैयो मैट्रिक पास बेटीकेँ बी.ए. शिक्षक लड़का संग बिआह कए माथक बोझ हल्लुक केनहि छैथ। जेठ बेटा विलास बी.ए. पास कऽ प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षा पास केलाक पछाइत अफसरक जिनगीसँ जिनगी शुरू केलैन। छोट बेटा हुलास बी.ए. केलाक पछाइत हाइ स्कूलक शिक्षक बनला।

जातक हुलास नोकरीक जिनगी प्रारम्भ नै केने छल तातक जेठ भाय- विलास-कैँ सेहो अभिभावके रूपमे मानै छेलैन। मुदा जखन नोकरी शुरू केलक तखन अपन जिनगीकेँ ठिकियौलक। ठिकियौलक ई जे परिवारमे भैयारीक सम्बन्ध अछि मुदा ओहो- जेठ भाय- नोकरी करै छैथ, हमहूँ नोकरी करै छी, हुनका दरमहो बेसी छैन आ बाहरियो आमदनी छैन। मुदा हमरा तँ से नै अछि। जँ बाहरी आमदनी ट्यूशन पढ़ा कऽ करए चाहब तँ पढ़ावी वा नै पढ़ावी मुदा समय तँ लगबे करत। जखने अधिक समय आर्थिक उपारजनमे लगाएब तखने वैचारिक रूपेँ जिनगीक आन-आन काजमे विघ्न-बाधा उपस्थित हएत। अपनासँ लऽ कऽ परिवार-समाज धरि। तखन तँ भेल नियमित वेतनपर नियमित जिनगी बना चलब तखने चलि सकै छी। चारि कोस साइकिलो चला हुलास परिवारक बीच अपनाकेँ रखने रहल अछि।

दोसर दिन भिनसरे समदिया दिया हुलास माएकेँ समाद पठौलक जे सभ काज सेरियाएल चलैए, तँए कोनो चिन्ता नै करैथ। समदियो कियो आन नहि, दियादिये पितियौत। तँए अबिसवास करैक प्रश्ने नै कमली काकीकेँ रहलैन। एक तँ भोरुका समय, तैसंग चाहक गिलास नेने कमली काकी पतिक हाथमे पकड़ैबते, जेना समाद सुनबैले मुँह लुसफुसेलैन। मुदा बिच्चेमे दुनू विचार ओझरा

गेलैन। एकटा विचार उठनि जे कोनो अधला समाद छी जे पहिने किछु खा-पीब लेता तखन कहबैन? दोसर ईहो उठनि जे जाबे किछु अनजल नै कऽ लेता ताबे अनेरे माथ किए भरयेबैन। जखने बात उठत तखने रंग-बिरंगक अनेको बात चलत। अपना तँ ओतबे बुझल अछि जे काज सेरियाएल अछि चिन्ता नै करब। मुदा चिन्ता की लोक अपन विचारक मने करैए। जँ अपने मने करैत तँ विचारि कऽ समय बना लैत जे एतेकाल चिन्ते करब आ एतेकाल नै करब। मुदा चिन्तो की छोट-छीन खेलाड़ी अछि। अन्ने-पानिटा अरूचि करैए सएहटा नै ने छै, आँखिक नीनो हराम करैए। ओ तँ काजक जड़िमे कहियौ आकि गपक जड़िमे तेना नुकाएल रहैए जे जखने चालबै आकि फुरफुरा कऽ आबि पकैड़ लेत। मुदा से सभ कमली काकीकेँ नै भेलैन। पतिकेँ चाह पीबैसँ पहिने बजली-

“बौआ समाद पठौलक हेन जे काज सेरियाएल अछि, चिन्ताक कोनो बात नहि।”

पत्नीक बात सुनि सुरत काका हाँइ-हाँइ दू घोंट चाह पीब बजला-

“केकरा दिअए समाद आएल अछि?”

“लाला कहलक।”

लालाक नाओं सुनि सुरत कक्काक मन ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ होइते हिया कऽ आगू-पाछू ताकि बजला-

“आउरो की सभ समादमे कहलक?”

“बस एतबे, काज सेरियाएल चलैए, अहाँ सभ चिन्ता नै करब।”

‘चिन्ता नै करब’ सुनि सुरत कक्काक मनमे जेना ऑक्सीजन बढ़लैन। मनमे उठलैन, ओहुना तँ लोक बजिते अछि जे कोट-

कचहरीक बात अनका कान तक नै जाए। एते तक कि घरवाली आ धियो-पुतो तक नहि। मुदा, जँ परिवारक अपना छोड़ि दोसर नै बुझै, आ एते जे गाड़ी-सवारी बढ़ि गेल अछि, जँ केतौ ठोकरे-तोकरे लगि गेलै आ अपन हाथ-पएर टुटि गेल, तखन परिवारक गाड़ी केना चलत? मुदा परिवार तँ कोनो सजीव नै अछि, सजीव अछि ओइ बीचक लोक, जे चलबैए परिवारक गाड़ीकेँ। मुदा ओइमे बाल-बोध तँ बाले-बोध भेल, अखैन ओकरा एहेन काजक भीर किए आनल जाए। बँचली घरवाली, हुनका किए ने कहल जाए। मुदा घरोवाली तँ घरेवाली छैथ, जँ नाक नै रहितैन तँ कौआक सभ वृति करितैथ। मुदा कौआ केना काग बनत ओ तँ अपने ऊपरक काज भेल किने? भेल तँ जरूर मुदा बदलैत सामाजिक ढाँचामे काजक जे छीना-झपटी भऽ गेल अछि, ओइमे बढ़ोत्तरी भेल अछि। एक-चलिया सामाजिक ढाँचामे पारिवारिक-सामाजिक किरिया-कलाप सीमित दायरामे रहने, सबहक नजैरक बीच रहैत छल जइसँ सुरक्षाक दोहरी रूप छल। मुदा काजक असीमिता लोकक विचारकेँ तेना डोला देलक अछि, जे पगला जकाँ गेल अछि।

जेते सम्पन्नता आबि रहल अछि ओते पेट-मन दुनूक भूख जगि रहल अछि, जेकरा पाछू दौगैत जिनगी बेचैन भेल अछि। जैठामक दिशा- मिथिलांचलक दर्शन- कट्ठा भरि सागपर आत्माभिमानसँ सज्जित जिनगी बनबैत रहल अछि तैठाम एते दौड़ा-दौड़ी किए? ऐंड़ी-दौड़ी किए एते बेसी लगि रहल अछि?

सुरत काका पत्नीकेँ लगमे बैसा बजला- “देखू, परिवारक बीच जे समस्या उठि गेल अछि ओकरा नीक जकाँ ताकि कऽ अपन जीबैक रस्ता सुरक्षित बना चलैक अछि। अहीं कहू जे जे साड़ी विलासक पत्नीक देहपर अछि, ओ हुलासेक पत्नी आकि अहींक देहपर कहाँ अछि?”

पतिक बात सुनि कमली काकी ठमकली। ठमैकते दुनू बेटा-पुतोहुक जिनगी नाचि उठलैन। नचिते विचार असथिर भेलैन। अखनो तक तँ हुलासे ने बेटा जकाँ निमाहैत आएल अछि। पैंसैठ-सत्तैरक दुनू परानी भइये गेल छी। दस-बीस बर्ख आरो जीब, तेकरे-ले ने रस्ता सुरक्षित बनबैक अछि। जेना हेराएल वस्तु आकि कोनो नवे वस्तु भेटने मनक उमकी उमैक जाइ छै तहिना कमली-काकीकेँ सेहो उमकलैन। दहिना हाथक ओंगरीक गिरहक पोर गनि-गनि बजली-

"छोटकी पुतोहुकेँ पएर रखना घरमे तेरह बर्ख भऽ गेल, कहुना हिल-मिल जँ एतबो दिन आरो खेप जाएब तखन बँचले की रहत जे तइले नीक-अधलाक विचार नै करौं?"

पत्नीक विचार सुनिते सुरत काकाकेँ जेना जिनगीक नव दिनक सुर्ज उगैत बुझि पड़लैन। सहोदर रहितो तीनू भाए-बहिन केते हटि-हटि कऽ अछि, मुदा माए-बाप रहितो दुनू परानी केते सटि कऽ छोटका बेटा-पुतोहुक संग छी। तँए नीक हएत जे हुलासो मधमन्नीसँ अबैए, तखन सभ बात सविसतर सुनब, सुनला पछाइत विचारब जे की केने केते नीक हएत आ की नै केने केते अधला हएत, से तँ अपने चारू गोरे ने विचारि कऽ एक मत बना चलब।

पाँचम दिन, सभ काज सम्हारि हुलास शनिक साढ़े-बारह बजे रातिमे गाम पहुँचल। बेसी राति भेने केकरो उठबैसँ नीक चुपचाप अपन कोठरी खोलि, एक डिब्बा बिस्कुट खा सुति रहल। ओना, पाँचो दिनक धुरफन्दा काज रहने, नीन पड़ाएल रहै, जइसँ पाँचो दिनक नीन आँखिपर लटकले छेलै...।

भोरे सुरत काका उठला तँ बुझि पड़लैन जे हुलास आबि गेल। मनमे कछमछी उठलैन मुदा अपने मन रोकि कहलकैन जे जेकर

एहेन मोटगर नीन अछि, ओकर काज जरूर पतराएल अछि। सवुर भेलैन। मुदा तैयो पोखैरक डेढ़बा माछ जकाँ घाटपर चाल-चूल दिअ लगलखिन जे जखने चाल-चूल हएत तखने हुलासोक नीन टुटत। मुदा चालो-चूल तँ सभ रंगक होइ छइ। एकटा होइ छै चुपेचाप, दोसर होइ छै घोल करि कऽ। हरलैन ने फुरलैन खूब जोरसँ कमली काकीकेँ कहलखिन- “बाँस भरि सुर्ज ऊपर आएल आ अहाँ सभले रातिये छइ।”

मुदा भोरके वोहैन ने भरि दिनक काजक शुभ-लाभ करैए। कमलियो काकी अपन वोहैने केलैन- “अहीं जकाँ सभ साँझहे सुति रहैए। अनेरे भोरे-भोर हकबाहि उठल अछि।”

आँखि मीड़िते हुलासक मनमे उठल जे पहिने दुनू गोरेकेँ भैयाक हाल-चाल सुना दिऐन। अपने रग्गड़ो थमि जेतैन। हुलासकेँ देखिते सुरत काका बजला-

“कखैन एलह?”

“बड़ रतिगरकेँ एलौं, तँए नै उठेलौं।”

“की हाल-चाल सभ छह?”

हुलास अपन पाँचो दिनक काजक वृतान्त सुनबैक विचार केलक। मुदा मनमे एलै जे पहिने ऐगला बात कहि कऽ मनकेँ रोकि देब नीक हएत। नै तँ अनेरे उझैक-उझैक गिरहे-गिरह सवाल उठौता। बाजल-

“बाबू, अपना सभ निसचिन्त भऽ गेलौं, नै तँ बड़का फेरामे पड़ि जइतौं।”

एक दिस निसचिन्त आ दोसर दिस बड़का फेरा सुनि सुरत कक्काक मनक ठेह जगलैन। ठेह ई जगलैन जे दुनू प्रश्नक दूरी तँ अकास-पतालक भेल! तैबीच एहेन कोन सूत्र लगि गेल जे दुनूकेँ

जोड़ि देलक? बजला-

“झब दे चाहक ओरियान करू ताबे बौओ मुँह-कानमे पाइन लऽ लइए। निचेनसँ सभ बात बुझब।”

चाह बनल, चारू गोरे- सुरत काका, कमली काकी, हुलास आ हुलासक पत्नी-केँ एकठाम देखि सुरत काका बजला-

“बौआ, परिवारे तीर्थ स्थल छी आ घरे धरमशाला। सभ एकठाम छी, तोहर भाए विलास भेलह, मुदा हमर तँ सन्तान छी। तँए सत् बात छिपबैक नै छह, आ झूठ बात जोड़ैक ने छह। जेना जे भेल से जड़िए-सँ सबहक बीच बाजह।”

पिताक बात सुनि हुलास माए दिस तकलक। मुदा माइक चेहरासँ ई नै परेखि पेलक जे माइक मनमे की अछि। ओना, पत्नीक मन बेसी खुशी बुझि पड़लै। पत्नीक खुशीक कारण ई जे अनुचित केनिहारकेँ जँ सजा नै हुअए तँ उचित केनिहारक घटबी हएत। हुलास बाजल-

“जखने भैयाकेँ पुलिस पकैड़ कऽ लऽ गेलैन, तखने भौजी फोन केली। ओना, मनमे भेल जे नै जाइ। मुदा गामक कुटी-चालि दुआरे जाइले बाध्य भेलौं।”

सुरत काका-

“की कुट्टी-चालि?”

हुलास-

“गामे दू-दिसिया बनि गेल अछि। दुनू कात मुँह बनि गेल छइ।”

“की दू-दिसिया?”

“कोनो नीक काज केनिहारकेँ थोपड़ी बजा सुआगत सेहो होइ

छै आ थोपड़ीए बजा ओकर हहास सेहो होइ छइ। तहिना खुशी भेने हँसी सेहो अबै छै आ वएह हँसी हहास होइत परिहास सेहो भऽ जाइ छइ। अनेरे लोक खिधांश करितए तँए गेलौं।”

“आगू की भेलह?”

“हमरा पहुँचैसँ पहिने भैया जहल पहुँच गेल छला। मुदा संगियौं-साथीक तँ कमी छैन नहि। खुआ-पीआ सेहो देने रहैन। केसक नकल सेहो निकैल गेल रहैन। दौड़-धूप शुरू भऽ गेल। पहुँचते मुंशी कहलक जे अहूँ आ बुड़हो लपेटमे छैथ। तँए अहूँ सभ अपन कारवाइ शुरू कऽ दियौ।”

सुरत काका-

“तखन की भेलह?”

पिताक बात सुनि हुलासक मन उल्लसित भेल। बाजल-

“नीकक फल नीके होइ छै, अधलाक फल अधले होइ छइ।”

हुलासक बात सुनि सुरत लाल उत्सुक होइत पुछलखिन-

“से की? से की?”

हुलास-

“अपन भैयारीक सम्पैतक जे कागजी बँटवारा अछि ओ जान बँचा लेलक। लीखि कऽ दऽ देलिऐ जे परिवार अलग तँए कोनो सम्बन्ध नै अछि।”

सुरत काका-

“आरो की भेलह?”

हुलास-

“अहूँक सम्बन्धमे लिखि कऽ दऽ देलिऐ जे सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक छैथ, दवाइ-दारूपर जीबै छैथ, तँए जँ कोर्टकेँ उपस्थितिक

जरूरत होइ तँ चौकीदार द्वारा दर्ज कराबह। नै तँ जखन सुनवाहिक बेर औत तखन ओहो रहता।”

हुलासक बात सुनि सुरत काकार्कें आशा जगलैन। बजला-

“बौआ, यएह बाहर रहि अपन नियमानुसार काज करब जिनगीक जीवन्तता भेल। कोर्ट-कचहरी छी, कहिया की हएत तेकर कोनो ठेकान छइ।”

पिताक बात सुनि हुलास बाजल-

“अखैन लोकक बीच चर्चक विषय बनि गेल अछि। तँए किछु दिन जहलमे रहऽ पड़तैन। मुदा छह मास जाइत-जाइत सभ निपटि जेतैन, फेर ओहिना काज करए लगता।”



तिथि: 15 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 3304

असुध मन

तीन पहर रातियेसँ करिया काका आ गुड़की काकीक बीच उत्तरा-चौड़ी जे शुरू भेलैन ओ लधले रहलैन। दू-बजिया गाड़ी तमौरिया टीशनसँ आगू बढ़ि गेल। एक तँ माघ मास तैपर शीतलहरीक जुआएल राति, हाथ-हाथ नै सुझैत। मुहोँ देखैक शक्ति आँखिकेँ नहि, तेहेन अन्हार पसैर गेल छल। मुदा तैयो करिया कक्काक आ गुड़की काकीक उत्तरा-चौड़ी शीतेलैन नहि, पाला पाबि आरो पलाइते गेलैन।

कटही गाड़ी जकाँ जेतए दहिना भाग खच्चा रहै तेतए दहिना पहिया आ जेतए बामा भाग खच्चा रहै तेतए बामा पहिया दब-उनार होइत चलिते रहल। चलबक कारणो रहैन, कारण रहैन करिया काका मध्यमा पास छैथ, शिक्षा मित्रबला मध्यमा नहि, रटि कऽ पास केलहा। जइसँ अपनापर बिसवास छैन्हे, तँए पाछू घुसकैक प्रश्ने नहि। मुदा गुड़कीओ काकीकेँ टटके अनुभव- पनरह दिन पहिलुका- रहैन तँए बन्ठा साँढ़ जकाँ माथा अड़ौने रहली। तहूमे एक-उमेरिया दुनू-परानी रहने दुनियाँकेँ जेते करिया काका देखने तेते गुड़कीओ काकी, जइसँ दुनूकेँ अपना-अपना नजरिये देखैक अपन-अपन शक्ति छैन। ओना, दुनूक बीच जे उत्तरा-चौड़ी होइत रहैन ओ कखनो-कखनो बेठेकानो भऽ जाइन। मुदा तैयो उनटैत-पुनटैत विचार एकठाम भऽ रगड़ी बनि रग्गड़ रगैड़ते रहल, पाछू घुसकैले कियो तैयार नहि।

एक-चलिया करिया कक्काक उपजौल ज्ञान रहैन तँए अपन

चौबिसो घन्टाक रूटिंग नियमित बनौने छैथ। कखैन सुति कऽ उठी, उठला पछाइत की करी, तैठामसँ लऽ कऽ रातिमे ओछाइनपर गेला पछाइत की करी, से सभटा बेवहारमे रखने छैथ। ओना, कमी एते जरूर छैन जे ‘मौसमक अनुकूल किरियो बदलै छै’ ई पढ़ैमे छूटि गेल छैन। जेना केतौक लोक मल उत्सर्जनक पछाइत छोंछ करैए, आ केतौ पनि-छू करैए। तहिना केतौ भरि छाती पानिमे पैसि नहाइए, तँ केतौ एक चुरूक पानि छीटि नहाइए। से बुझैक कमी करिया काकामे छैन। ओ ई नै बुझि पाएल रहैथ जे माघ मास केते पानिसँ छोंछ करी आ बैशाख मास केतेसँ। सुखल आ गील उत्सर्जनक पछाइत केते पानिक खगता होइए। नै बुझैक कारण भेलैन जे मध्यमे तक अध्ययन केने रहैथ, तँए विस्तृत रूपेँ नै बुझि सकला। पुबरिया मेघ सुरूजक धाहीसँ ललिया गेल मुदा किरिण नै फूटल। तरे-तर करिया काका एते तरिया गेल छला जे बरदास नै भेलैन। घरसँ निकलैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“जेमा तँ जाइते छी मुदा घुरि कऽ फेर नइ मुँह देखब।”

ओना, करिया काका ठिकिया कऽ बजलैथ जे कानमे पड़िते छातीकेँ चालैन बना देतैन, मुदा से भेल नहि। हेबो केना करैत पनरह दिन पहिलुके ने घटना छी जे गुड़की काकी करिया काकाकेँ मृत्युक मुहसँ घुमा अनने छेली। तँए पतिक सेवा धर्म तेते प्रवल भऽ गेल छेलैन जे पतिक बात गरदेनसँ निच्चाँ उतरबे ने केलैन। बजली-

“अहाँ नै मुँह देखब आकि अहाँक नइ देखब?”

पत्नीक समगम उत्तर पाबि करिया काका विचलित भऽ गेला। डोरा-सूइयासँ अपन मुँह सीब, मात्र चद्दरि ओढ़ने घरसँ बहरा ओहिना आगूए-आगू देखैत जाइत रहैथ जहिना असमसानसँ घुमतीकाल कियो पाछू उनैट नै तकैए।

अखैन धरि गुड़की काकीकेँ मनमे नै छेलैन जे पति घर छोड़ि पड़ेता, मुदा जेना-जेना करिया काका आगू बढ़ैत जाइत रहैथ तेना-तेना डेगो नमहर हुअ लगलैन। दूर हटैत देखि गुड़की काकीक मन सहमलैन। मुदा अपने पाछूसँ दौग पतिकेँ वौसब नीक नै बुझि पड़ोसिनीकेँ अपनासँ बेसी उमेरक बुझि लगमे जा बजली- “देखथुन की मनमे उठलैन की नहि, घर छोड़ि अपने पड़ाएल जाइ छैथ, कनी आगू बढ़ि वउस कऽ घुमा अनथुन।”

ओना, पड़ोसिनीक मन अपने दुनू बेकतीपर तमसाएल रहैन। तमसाइक कारण रहैन सवा पहर रातियेसँ तेना दुनू परानी नट-बखो जकाँ कुकुर-कटौज करैत एली जे तखनसँ जगले छी। एना केतौ मनुक्खक घरमे हुअए! तँए भने एकटाकेँ घरसँ गेने झगड़ा तँ नै हएत। कियो अपने ने नीक सोचैए, भने हएत। मुदा से कहलो केना जाएत। ओना, गुड़की काकीक मन पघिल कऽ मोमिया गेल रहैन। मुदा सोलहन्नी नै पिघलल रहैन। तरक मन सक्कत रहबे करैन। खूब जोरसँ बोलकेँ जुमा फेकैत बजली-

“जेकर मन असुध अछि ओकरा लिए दुनियाँ असुधे छै, अनेरे किए पड़ाएल जाइ छी। पाछू घुरि ताकू। हे मुरहा घुरि ताकू।”

करिया काका पत्नीक बाजब सुनलैन, मुदा उत्तर किछु ने देलखिन। तही बीच पड़ोसिनी पाछूसँ दौड़ कऽ पाछूए-सँ बाँहि पकैड़ पाछूसँ रोकैत कहलखिन- “हमरा लिए जेहने अहाँ, तेहने ओ । तेहल्ला बनि कहै छी- घरसँ पड़ाउ नहि, दुनियाँमे केत्तौ जाएब, पेट-माथ संगे रहत। ओकरा सुधारि लिअ। आब ऐ उमेरमे अनेरे केतए वौआइले जाएब। पेट-ले भीख मांगि खाएब से नीक भेल?”

पड़ोसिनीक बोल करिया कक्काक कानक ठेकीकेँ ठेलि मन तक पहुँच गेलैन। मन तँ मने छी केतौ आध मन, केतौ चौथाइ मन,

केतौ एक-बटे तीन, तँ केतौ एक-बटे पाँच, तँ केतौ सवा मन, डेढ़ मन, पौने दू मन तकक सीमा-सरहद तँ छइहे। मुदा से बात करिया कक्काक मनमे नै उठलैन, परिस्थितिक अनुकूल ई उठलैन जे जहिना अनभुआर जगहमे माल-जाल पएरो बाड़ैए आ मलकबो करैए, मुदा बिसवासू तँ कोनो एक्केटा अछि, चाहे पएर बाड़ह, चाहे मलकह। मलकै काल जँ काँट गड़तै तँ अपने मलकबक गुण बुझत तखन जे मलकबे करत तँ मलकह...। करिया कक्काक अपन दैनंदिनक सूत्र गड़बड़ा गेलैन। जे उचितो तँ ऐछे, ने घरसँ सभ दिन पड़ाइ छला आ ने ओहन सूत्रकेँ बुझैक खगता छेलैन, आ ने ओइपर नजैर गेलैन। मुदा आइ तँ पड़ोसीक पछड़ा अछि। एक दिस घरक देवी दोसर दिस पड़ोसिनी-देवी। एकटा दइवाली, एकटा लइवाली। मुदा वाह रे अज्ञान! केहनो प्रश्नक उत्तर ठोरपर सदिकाल रखैए। ज्ञानकेँ तत-मती होइ छइ।

..मुदा अज्ञानकेँ कोन लाज-धाक छै जे तत-मती रहतै। तँए कि अज्ञान निरलज अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकै छै, वेचारा अपन मान-अपमान उठा कऽ पीब गेल अछि। जेकरा माने-अपमान नइ छै, से अनेरे किए ऐ पाछू दौड़त। केकरो कियो बाधा कहाँ उपस्थित करै छै, जे भाय! जबरदस्ती तोरा घर रहबे करबह। तोहर खुशी छिअ जे नीक रस्ते भगाबह आकि अधला रस्ते। हमरा कोनो लाज-सरम नै अछि...। जेना किछु मनमे पीनपिनेलैन। जहाँ पीनपिनेलैन आकि भेलैन जे ई जे अनेरे देवा-देवी, देवी-अदेवीक भाँजमे पड़ि मगजमारी कऽ रहल छी। असल बात तँ ई अछि जे रावण सन महापण्डित आ रावण सन राक्षसक बास एकठाम केना भेल? भऽ सकैए, होइए।

..मुदा ऐ बातकेँ पहिनहि ने बुझैक छल जे पण्डिताइक मोल की? मनमे अबिते करिया कक्काक मन पड़ोसिनीपर पड़लैन। ओना, उमेरो बेसी आ वंशो दोसर, मुदा सभ दिनसँ दुनू गोरेक घर एकठाम

अछि। केते पुश्तसँ हुनको परिवार छैन आ अपनो परिवार अछि। ने एक जाति आ ने एक दियादवाद, मुदा तैयो बोली-चालीसँ लऽ कऽ मनगानी-जिनगानी तक केना निमहल अछि। ओना, भैयारीक भाइक बँटवारा पड़ोसी पैदा करैए। जइसँ दियादवाद, पड़ोसवाद बढ़ैए। मुदा दोसरो पड़ोसी तँ छैथे जे दियादवाद आकि पड़ोसवादसँ अलग छैथ। ओना, पड़ोसियोपन आ वंशोपन तँ अछिए। मुदा पड़ोसीपनक बीच अन्तरो तँ अछिए। अन्तर एते अछि- एक दिस दियाद आ राहैरक दालि जेते ढहै छै तेते रंगरो आ सुआदो बनबै छै, तँ दोसर दिस पट्टा-कुरथीकेँ बिनु दरड़नौं तँ दालि सुअदगरो आ रंगरो तँ बनिते छइ। तेतबे किए, केतौ मीठ, मीठनूनो बनैए तँ केतौ दालियो दालचीनी नै बनैए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जैठाम करिया काकाकेँ बुझैमे दम नै अँटैन। तेतए हाँफए लगैथ। तही बीच पड़ोसिनी दोहरबैत कहलकैन- “अनेरे कोन तितम्हामे पड़ल छी। भिनसुरका पहर छिऐ, घूमै-फिड़ैले लोक बहराएत, पत्रकार जकाँ तेतेक सवाल पुछत जे अनेरे माथा ढील भऽ जाएत। तइसँ नीक भरमे-सरमे चलू। अनेरे किए कियो दोसर दुनू बेकतीक झगड़ा बुझि कठिया-लाड़ैन चलौत।”

पड़ोसिनीक बात करिया काकाकेँ जँचलैन। अपनो बुझल रहैन जे पुरुख तँ बहरबैया सभ दिन रहला तँए पड़ाएब अधला नहि। मुदा झगड़ा करि कऽ पड़ाएबो तँ नीक नहियेँ भेल। जँ सएह हएत तँ सृष्टीए अँटैक जाएत। जखने खेत जकाँ अँटकल कि उपटब शुरू हएत। पड़ोसिनीक विचार मानैत करिया काका एकटा शर्त लगबैत बजला- “जखन घुमि कऽ जाएब तखन पहिले काज फड़िछाएब भेल। से जँ फरिछा दी तखन घूमब?”

जेना पड़ोसिनीक ठोरेपर रहैन तहिना बजली- “ब्रह्म मुहूर्तमे कियो ब्रह्मक उपासना करै छैथ, तँ एहेन की कियो नै छैथ जे दौड़-

दौड़ छाती सक्कत करै छैथ।”

पड़ोसिनीक बातपर बिनु सोचनहि करिया कक्काक मुहसँ खसलैन-

“हँ से तँ छैथे।”

बजैक वेगमे तँ करिया काका बाजि गेला मुदा लगले मोन पड़लैन, योगक्रिया तँ नीक छी, मुदा पैछला एते नमहर इतिहासमे पाछू पड़ल, किए? मुदा आब उपाइये की? करिया काका तँ घरमुहाँ भऽ गेल छला।

गुड़की काकीक तामस अखनो तक नै कमल छेलैन। मने-मन खौंझ उठै छेलैन जे एहेन सियाखी पुरुखे की जे अनेरे सियाखमे जाने गमबाए। कुकुर जकाँ अपने खून पीब रस लिअए। भगवान रच्छ रखलखिन जे लगमे छेलिऐन। जँ अनका बेटा जकाँ हमहूँ बेटा-पुतोहुक संग परदेशमे रहितौं तँ की अखैन तक सराध नै भऽ गेल रहितैन। भेल ई जे पैछला अन्हरिया पख माघमे पूसेसँ लधाएल शीतलहरी दौगल आबि रहल छल। तैपर कश्मीरी हवाक पथराएल लहकी, आ ऊपरसँ बंगालक खाड़ीसँ उठल मेघ बरिस गेल छल। असाध कनकनी पसैर गेल छल। आने दिन जकाँ करिया काका अढ़ाइए बजे उठि कऽ नित्य क्रियामे लगि गेला। छोंछसँ लऽ कऽ आचमन धरिक जेते पानिक काज बैशाख-जेठमे करैथ, तहिना जाड़ो-ठाढ़ मासमे कैरते छैथ। कलपर सँ घुमि कऽ अबैत-अबैत जाड़क असैरसँ खसि पड़ला। धड़फड़ाएल खसबक आवाज सुनि गुड़की काकी दौग कऽ लगमे पहुँच, लटुआएल देहकेँ पजिया कऽ समेट ओछाइनपर अनलैन। कियो दोसराइत परिवारमे नहि। आन किए औत? भोज खाइबेर जाति-जवार भँजियबै छिऐ आ बेर-बिपैतमे पड़ोसिया फड़त! मुदा..? मुदा हाइ रे मिथिलांगना! जे अपन

संग आकि दोसराइतिक संग मिलि मिथि-मालिनी बनि चुहैट कऽ पकैड़ लेती ओ अपन व्रतकेँ प्रियवत बनबैत प्रियात्मा बनि परमात्माक बीच साक्षात्कार लइ छैथ। मुदा से नहि, गुड़की काकीक तामसोक कारण छेलैन। कारण छेलैन जे जिनगीकेँ सम्हारि कऽ चललासँ लोक पाओल नै जाइए। जखने बेसम्हार हएत तखने रंग-बिरंगक अक्रमित हेबे करतै।

ओना, करिया कक्काक इच्छा रहैन जे आगू-आगू पड़ोसिनी चलैन। मुदा पड़ोसिनीक मनमे शंका रहैन जे भगौआक कोन भरोस, जे घरसँ भागि सकैए ओ रस्ता-बाटसँ नै घुमि कऽ भागि सकैए? ओना, करिया कक्काक मनमे रहबे करैन जे जखन पड़ोसियाक मध्यस्तमे आबि गेल छी तखन बीचमे कोनो बाधाक बीआ रोपब नीक नहि। तँए बेसी जोर-जार नै करैत करिया काका आगू-आगू डेग उठौलैन। एक दिस पएरक नापल डेग उठबैथ, दोसर दिस आँखि उठा घर दिस तकलैन तँ किछु झल जकाँ बुझि पड़लैन। मनमे उठलैन पत्नीक कहल- 'असुध मन!'

...कोन बेजा बात कहली जे अहाँक मने असुध अछि? अशुधो-शुद्धोक की सींग-नाँगैर छै? जहिना कखनो भूत वर्तमानमे नाचि देखनिहारेकेँ भुतिया दइए, तहिना तँ ने भरिसक अपनो भेल? जखने केकरो मन शुद्ध हेतइ तखने दुनियोँ शुद्ध हेतइ। जँ बीचमे केतौ अशुधो छै तँ ओकरा निकालि शुद्ध कएल जा सकै छइ। तइले दुनू बेकतीक बीचक सम्बन्ध तोड़ि भागव उचित भेल? मुदा तँए कि सोल्होअना अनुचिते भेल सेहो तँ नहियेँ मानल जा सकैए। कोनो कि हमहींटा छी जे पत्नीसँ रगैड़-झगैड़ कऽ सम्बन्ध विच्छेद करैत घरसँ पड़ेलौं। आकि हमरा सन-सन बहुत छइ। मुदा शुद्धो-अशुद्ध बेराएब बाल-बोधक खेलौना नै ने छी जे गुड़का दियौ। मन शुद्ध, वाणी शुद्ध, वाणी शुद्ध विचार शुद्ध, विचार शुद्ध काज शुद्ध, मुदा शुद्ध पानि-

स्वच्छ पानि- आ अशुद्ध पाइनिक दूरीकेँ बिनु देखने-परखने केना शुद्ध बनौल जा सकै छै? वाणी शुद्ध आ विचार शुद्ध ओ तँ मात्र अक्षर बदललासँ शुद्ध भऽ जाइ छै, मुदा मूर्त रूपमे जखन अशुद्ध भऽ जाइ छै, तखन शुद्ध बनाएब असान थोड़े होइ छै? हँसनी-कननी आ कननी-हँसनीक रूप तँ बनियेँ जाइ छै, जइसँ धनुषक छुटल तीर जकाँ तँ भइये जाइ छै!!

आँगनक डेढ़ियेपर बैस गुड़की काकी आगूए दिस तकैत रहैथ। ओना, आगू-आगू करिये काका रहथिन आ पाछू-पाछू पड़ोसिनी, मुदा आगूमे रहितो करिया कक्काक धौना जेना खसल रहैन। गुड़की काकीक आँखि तरेगन जकाँ तरँगल रहैन। तरँगल ई रहैन जे पुरुख सबहक एहेन छीछे भऽ गेल अछि, जे ताड़ी-दारू पीब कऽ आएब आ ओछाइनेपर बोकरब।

आब कहू जे जँ ओछाइनकेँ सुतली रातिमे धुअब तँ लोक ओइपर सुतत केना। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे अपना सेने से तँ नै भेल अछि, तँए केतौक ईटा, केतौक सिमटीपर साटब नीक नै हएत। मुदा फेर लगले मन तरङ्गि गेलैन। तरङ्गि ई गेलैन जे दस-बारह दिन जे एहेन समयमे दिन-राति एकबट कऽ सेवा करए पड़ल, तेकर कोन खगता छेलइ। जैठाम बेसी ठण्ढ पड़ै छै तैठाम लोक छछाड़ी काटि कऽ अपनाकेँ शुद्ध बना लइए, जैठाम तइसँ कम ठरल रहल तैठाम पनि-छू करि कऽ शुद्ध भऽ जाइए, आ कोन सियाख भेल जे तमघैलिया लोटासँ छोंछ करब? मुदा पतिक नजैर खसल देखि गुड़की काकीक नजैर सेहो ओंघरा गेलैन। तँए किछु उपराग देबसँ नीक चुपे रहब बुझलैन।

बिना किछु सुनने-बुझने पड़ोसिनी मध्यस्ता करैत बजली-

“हम पड़ोसी भेलौं। जेहेन मिलानसँ दुनू बेकती रहब तेहेन मिलानसँ परिवार चलत। जेहेन परिवारक सिख-लिख हएत तेहने

सिख-लिखक ने पड़ोसियाक पड़ोसीपन भेल। आगू जानी अपने।”

कहि पड़ोसिनी प्रतिक्रिया सुनैक खियालसँ कान ठाढ़ केलैन मुदा कोनो सुनि-गुनि नै पाबि मुस्की भरैत विदा हुअ लगली आकि पाछूसँ गुड़की काकी बजली- “दीदी, बजली तँ बड़ निम्मन बात। मुदा एकटा कहने जथु- हम ओहन जनाना नै छी जे पुरुखपर ओंगठल रहब आकि पुरुखकेँ ओंगठौने रहब। अपन-अपन जिनगीक बर-बेमारी अछि खाइ-पीऐसँ जीबै धरिक उपाय करैक अछि, तैठाम जे ओंगठा-ओंगठी हएत तँ इहे कहथु जे अपन जान देखब कि हिनकर देखबैन?”

गुड़की काकीक बात सुनि पड़ोसिनी ठमैक गेली। गुड़की काकी दिस नजैर गड़ा देखए लगली जे अनभुआर बात बजली आकि भुआर बात। भुआर परीक्षा भेल अनभुआर जानैक इच्छा भेल। पड़ोसिनीकेँ चुप देखि अपन चुटका सम्हारैत गुड़की काकी दोहरौलैन- “चुप भेने हेतैन, पुरुखक मुँहक कोनो ठेकान अछि। लगले पतिव्रत कहि टिरका देता आ अपना बेर मे गबदी मारि देता। बजबे ने करता जे स्त्रीव्रत-नारीव्रत की छी!”

गुड़की काकीक बात पड़ोसिनीकेँ नीक लगलैन। ठोर-रंगू राँगी धान जकाँ बिहुसली। पड़ोसिनीक बिहुसी गुड़की काकीकेँ सेहो बिहुसा देलकैन। पड़ोसिनी विदा होइत बजली-

“हे बहिना, बड़-बड़ लीला अछि मोरंगमे। तखन तँ फुटा कऽ एते सुनि लएह जे तोहर पनचैती हम करियह आ हमर तूँ करह, तइसँ नीक ने भेल जे केकरो कियो किए खगैत काजकेँ आरो खगाएत। अपन-अपन फड़िछौठ लोक अपना बुधिये करह। जखने छोट बुधिबलाक पनचैती नमहर बुधिबला करतै, तखने ने ओकर गरदेन-कट्टी करतै। जे अखैन बुझै-जोकर नै अछि ओकरा बुझनुक बना जखन पनचैती हएत तखन ओकरा संग न्याय हएत।”

ओना, पनचैतीमे जँ पंचो हँसैत आ दुनू पक्षो हँसैत विदा हुअए तँ ओ सफल भेल। मुदा करिया काकाकेँ से नै भेलैन। अखनो तक मन मानैले तैयार नै छैन जे जेते न्याय पत्नीक संग भेलैन तेते हमरा संग नै भेल। मुदा तीन गोरेमे दू गोरे जखन एक-भगाह भऽ गेली तखन तँ उनार हेबे करब। ओना, करिया काकाकेँ जेते अध्ययन छेलैन ओइ हिसाबक जिनगी बना, जीबैत आबि रहल छला। एते तँ मनमे बैसले छेलैन जे नै केकरो नीक कएल हएत तँ अधलो नै करबै। मनमे एते छैन्हे जे भूल-चूकमे जँ केकरो अधला भऽ गेल होइ, तँ अखनो कहह। जँ वैचारिक बात हएत तँ विचारक तराजूपर तौल देबइ, नै जँ नइ हएत तँ जे गलती भेल हेतइ तइ हिसाबसँ सकारि लेबइ। नीक जिनगी आ नीक विचार रहितो करिया काकाकेँ सौनक ओइ कोदरवाह जकाँ भेलैन, जेकरा पहिने हवा-विहारि आ झाँट झँटियबै छै, लगले पछाइत मेघ फाटि पानिक वोरा देहपर उझलै छै, आ लगले पछाइत तड़ैक कऽ ठनका बनि तड़तड़ा दइ छै! मुदा लगले मन घुमलैन। घुमिते विचार उठलैन, पत्नी तँ जिनगीक संगिनी ने भेली। तँए ओइ रूपेँ चलब तखने ने निमहत।

करिया काकाकेँ गुम देखि पड़ोसिनी डेग बढ़बैत बजली-

“सँए-बहुक झगड़ा, पंच भेल लबड़ा। जाइ जाउ अपन-अपन हाल-रोजगार देखू।”



तिथि: 19 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 2353

धरमूदासक अखड़ाहा

देवालय, शिवालय, विद्यालय इत्यादिक जेहेन बास-भूमि, नहेबाले जेहेन पवित्र सरोवर, चन्द्रकूप पानि पीबैले, धर्मशाला रहैले इत्यादि-इत्यादि बेवस्थासँ सम्पन्न रहैत, जेहेन बास-स्थल बनि असथल, असथान, ठकुरवारी, इत्यादि-इत्यादि सभ बेवस्थासँ सम्पन्न रहैत तहिना धरमूदासक अखड़ाहा सेहो छैन।

ओना, धरमूदासक पूर्वजक अखड़ाहा कहियासँ छैन, से तँ बेठेकान अछि मुदा एते तँ ठेकनाएल ऐछे जे पाँच पीढ़ीक नामो आ गामो जगजियार छैन। अखड़ाहाक नामसँ पाँच बीघा जमीन अछि तँए कहियो निलामक मुँह आँखि सम्पैत नै देखि पेलक। अपना ऐठाम जमीनक बीच सेहो अहिना अछि।

जेहेन-जेहेन समय अबैत गेल तेहेन-तेहेन अपन चालि पकैड़ अखड़ाहा जीवित रूप पकैड़ चलैत आबि रहल अछि। मुदा अपन जे वैचारिक दिशा छैन ओ तँ कसिया कऽ पकड़नहि छैथ। ओना, गाममे केते स्थानो अदैल-बदैल गेल आ केते महंथो सभ अपन तिलक-चानन बदैल लेलक। मुदा तँए हुनका सभकेँ दोखियो मानल जाए सेहो उचित नहियेँ कहल जा सकैए।

जेहेन देश तेहेन भेष, जेहेन सोर तेहेन बोल! समैयक जे मांग रहल सएह ने कियो करत। जहिना आन स्थानमे परसादक मेनू टाँगल रहैत तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहाक प्रसादक मेनू छैन। मुदा आन स्थान जकाँ एकहारा प्रसाद नहि, अमुककेँ अमुके परसादो

आ फूलो चढ़तैन, से धरमूदासक स्थानमे नहि। ऐठाम तँ अल्हुआ-सुथनीक परसादसँ लऽ कऽ मक्खन-मिसरी धरिक अँटावेस अछि। जहिना कामरूपमे बोन-चिड़ैसँ लऽ कऽ नर-चिड़ै धरिक पाठ पढ़ौल जाइत तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहामे छैन्हे। ओना, सभसँ पैघ गुण अखड़ाहाक ई अछि जे जँ कियो राति-विराति आकि दिने-देखार किछु पुछैए-आछैले अखड़ाहापर अबैत तँ ओ जरूर हँसी-खुशीसँ आपस होइत। धरमूदासक पाँचो पीढ़ी एकरंगाहे चालि पकैड़ अखनो चलि रहल छैन, ओना, गामक बीच बसल अखड़ाहा, तँए गामक अखड़ाहा नहि गामे अखड़ाहा बनल अछि। अन्हार साँझ भेने अनगौंआँ दस-बीस गोरे जँ राति-विराति अँटकऽ चाहैथ तँ हुनका लेल जहिना गामक आन परिवार दरबाजा बना अखड़ाहा बनौने छथिन तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहा छैन।

ओना, समय बढ़ने आ आबा-जाहीक सुविधा भेने कनी-मनी कमी तँ भेबे कएल अछि मुदा सोलहन्नी बेमाक भऽ गेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो अछि आगूओ रहत। धार-धुरक इलाका तँए एहेन मकड़जाल पसरल अछि जे धारक एक महारमे आँगन तँ दोसर महारमे दरबज्जा चाहे मालक घर रहैए। तहूमे अपना ऐठामक भदवरिया समय तँ ओहन होइए जइमे बालो-गोपाल हाथेसँ इनारक पानि निकालि पीबैए। तेतबे किए कहबै, बैशाख-जेठक रौदोमे ठेंगापर ठेंगा वा फट्ठीपर फट्ठी माटि चढ़ा रगैड़ आगिक लूत्ती सेहो बहार करैए आ पूस-माघक जाड़मे हाथपर आगि रखि नचेबो करैए। तँए सबहक अपन-अपन गुण-धर्म छइ। जँ माघमे सुखाएल सखुआक चेराक लहकैत घूर आनन्द बँटैए तँए कि बैशाख-जेठमे पानिक तलहती अपन धरम छोड़ि दइए।

समैयक संग विचारो चलिते छइ। मुदा विचारो तँ विचार छी-सुविचार, कुविचार आ दुरविचारो तँ संगे चलिते अछि। जेकरा जेहेन

भवलै से तेहेन भजलक। मुदा भवनहिटा सँ थोड़े होइ छै, भवलोकक संग विचारलोक, भक्तलोक, अभक्तलोक सेहो तँ अछिए।

ओना, धरमूदास अखनो भरि-भरि राति इतिहास-पुराण पढ़ै छैथ मुदा असल पढ़ब हुनकर छैन, स्थान सबहक कटौज पढ़ब। किताब जकाँ पन्ना-तरमे दाबल तँ कटौज रहिये ने सकैए। ओ तँ अधिकसँ अधिक उड़ि-उड़ि पसरए चाहैए। जइ श्रोतसँ धरमूदासकेँ कटौजक भाँज असानीसँ लगि जाइ छैन, तैबीच अपन विचारकेँ रन्दा चढ़ा चिक्कन-चुनमुन करैत हँसैत-हँसबैत अपनो चलै छैथ आ स्थानो चलिते अछि। ओना, स्थानो सभ केते रंगक अछि, जेना कोनो महंथाना अछि तँ कोनो महंथिऐन सेहो अछि। मुदा से नहि, धरमूदासक अखड़ाहा तइ सभसँ हटि मिश्रित अछि। जहिना देशक नीति मिश्रित अछि जे से मिक्स इकोनोमी अछि तहिना। सात गोरेक परिवारमे आबाल-वृद्धोक बास छैन। समय-साध अपन परिवारक गति-विधि बनौने छैथ, तँए ने बेसी अरकट आ ने बेसी मरकट छैन। ओना, सेहन्ता तँ जगरनाथे पुरीक खेती करैक छैन, मुदा ओइठाँ जकाँ समुद्री लहैर तँ एतए अछि नहि, ऐठाम तँ समुद्रसँ उठल वादलक अछि, जे बरैसतो अछि आ नहियोँ बरसैए। मौसमो तँ बँटाएले अछि। जइसँ सभ दिना खेती करैक सभ काजक समैये ने भेट सकैए। तैयो सभ-दिनाकेँ मास-महिना-मौसममे बान्हि अपन पुड़ीखाना नै खानापुरी कऽ साल पुराइए लइ छैथ।

समय बढ़ने वा बदलने हवामे जे गति अबै छै, से तँ एबे कएल। एक दिस एकैसमी शदीक देश तँ दोसर दिस अर्द्ध-विकसित पूजीवादी बेवस्था बनबैक प्रश्न अछि। देवालयसँ वेश्यालय तक वसन्ती हवा बहबे कएल। गाछपर कोइली तान भरए लगल, जेरक-जेर मौधमाछी गाछमे छत्ता लगबए लगल। फुलवारीक गुलाबेटा नहि, बेली-चम्पा सेहो अपन रूप सजबए लगल। मुदा तइ सभसँ

सटि-हटि आ हटि-सटि धरमूदास चलि रहला अछि। एहनो जमाना आबि गेल जे जैठाम अतिथि अभ्यागतक सेवा धर्मक कोटिमे छेलै आ ऐछो तैठाम अनठियाक कोन बात जे अपन लगो-लगीचकेँ देखि लोक मुँह घुमैए! ओना, एकरा बहुत गड़बड़ो नहियेँ कहल जा सकैए। आब ने ओ जुग रहल जे अल्हुओ-सुथनी आ मकैक लाबो, सतुओ आकि रोटी संग खेसारीक उसना आकि मरूआ रोटी संग नूनक अभ्यागती हँसैत-हँसबैत चलत, आब तँ हजार- दस-बीस हजारक अभ्यागती भऽ गेल अछि। अपन उजरल-उपटल बाप-दादाक खेत-पथार, घर-घराड़ी छोड़ि जे पड़ा परदेश गेल, ओ अपन परिवारकेँ ठाढ़ करैक जोगाड़ नै कऽ अभ्यागतीएमे लगाएत से केते उचित? मुदा यएह तँ विचारणीय अछि जे केना अपन पूर्वजक देल धरोहरकेँ बँचा पाएब आ अपनो परिवारकेँ ठाढ़ कऽ जुगानुकूल चलै-जोकर बना सकब। ओना, धरमूदास पिच्छराह तँ छैथे, तँए माटिसँ पानि धरिक बास छैन। माटिसँ पानिक माने भेल, मटियार माटि ऊपर रहऽ आकि पानिमे, पिच्छराह तँ होइते अछि।

साढ़े आठ बजेक रतुका हरिबोल अखैन अखड़ाहापर नै उठल छल। हरिबोल भोजनक सूचनाक अपन शब्द छैन। अखड़ाहाक निअम छैन जे साढ़े आठ बजेसँ भोजन शुरू हएत आ नअ बजेमे विसर्जन हएत। तइमे स्पष्ट धारणा धरमूदासक छैन जे भनसियाकेँ परिवारक भारक संग अपनो बेकतीगत काजक भार छैन्हे। तँए जँ हुनको नियमानुसार काज नै होइन तँ अनेरे विग्रह बढ़त। ई तँ नै जे भरि दिन खेनाइए-पीनाइ चलत, आ ललैक कऽ भनसियाकेँ कहबै जे महाकोढ़ि अछि, अखैन तक बरतनो ने धोलक।

आठ बजे रातिमे पाँच गोरेक कफला अखड़ाहापर पहुँचलैन। अखड़ाहाक सभ अपन-अपन पहिल पहर साँझक वन्धनमे लागल। स्थानपर अबिते बच्चा सभ लोटामे पानि आनि सभकेँ सुआगत करैत

कहलकैन- “पहिने हाथ-पएर धोउ।”

अखड़ाहापर पाँचटा अभ्यागत एला, तँए पहिने हुनका सबहक बेवस्था होइन। धरमूदास परिवारक गति-विधिपर नजैर रखने जे कोनो तरहक असुविधा नै होइन। ई नै जे गारजनेपर सुआगतक सभ भार भेल, एहेन विचार गारजनक वेइज्जतीक भेल। पाँचोमे एक गोरे पएर धोलैन बाँकी चारू गोरे मुँहक पान थुकैड़ मात्र कुड़ुड़ केलैन। ओना, पाँचो गोरेक धारणा रहैन जे अतिथि-सेवापर जे स्थान टिकल अछि ओकरा भंग कऽ दिऐ, मूल मंशा पाँचोक छेलैन तँए एबो कएल रहैथ। समय देखि धरमूदास बजला-

“आब तँ भोजन बनबैक बेर नइ रहल, तँए जएह किछु भेल अछि सएह भोजन कऽ लिऔ।”

ओना, पाँचो खाइ-पीबैबला छैथे, एक गोरे उनटौलकैन-

“अखैन साढ़े आठो ने बाजल?”

धरमूदास ओहन अतिथि अभ्यागतसँ परहेज कैरते छैथ जे मनोनुकूल भोजन चाहैत। मुदा बजनौं की हएत। बेसीसँ बेसी एते हएत जे कियो कहता जे भरि पेट खाइयो-ले ने देलैन। भाय! खाइ-पीबैक ठेकान अछि, कियो एक लोटा पानि पीब पान खा, जल-पानक मिनहा करैत तँ कियो दर्जनक-दर्जन अण्डा खेला उपरान्तो दोहरा-तेहरा कऽ खाइते छैथ। मुदा धरमूदास अपनाकेँ अनेरे औनाबऽ नै चाहलैन। भरमे-सरम ऐ दुआरे चुप रहला जे अपना सीमामे तँ सभ यत्र-कुत्र बजिते अछि, मुदा जलखैक बेर आएल अभ्यागतकेँ जलखैक आग्रह, भोजन बेर आएलकेँ भोजनक आग्रह करबे ने तूक बुझब भेल। जँ कियो कोसो चलि कऽ भूखल आएल छैथ, जे अहुना रस्ताक भुखाएल भेला, तैपर जँ हुनका कहल जाइन जे भानस करै छी, पछाइत भोजन कराएब। तँ ई केहेन हएत, एक तँ

भूखे आत्मा पहिनेसँ कलपै छैन तैपर आरो कलपाएब केते नीक हएत। ओना, एहनो तँ होइते अछि जे किछु ओहनो छैथे जिनका कहबैन- भोजन करए चलू, तँ कहता- हम बड़ भूखल छी! बकठाँइ शुरू कऽ देता।

भोजन केलाक पछाइत एक गोरे बजला- “किछु काजे आएल छेलौं।”

धरमूदास जवाब देलखिन- “भोजनक पछाइत अराम होइ छै, जँ कोनो काजे एलौं तँ भोरमे हेतइ।”

तैपर ओ फेर बजला- “भोरमे तँ नइ रहब। एकटा काजे दोसरठाम जाइके अछि।”

काजक धुमसाही सुनि धरमूदास चुप भऽ गेला। किछु समय चुप रहला पछाइत बजला- “भोरमे जाइसँ पहिने काज कऽ लेब।”

कहि हुनका सभकेँ ओछाइनपर छोड़ि अपने भोजन करए चलि गेला। पीढ़ीपर बैसते बिहुसैत पत्नी लगमे आबि कहलकैन-

“आइ तँ विटामिनेक भोज खुआएब।”

बोलो तँ बोल छी। बोलेमे सभ किछु अछि। एहनो बोल होइए जे खेबेकाल अट्ठा-बज्जर खसबैए आ एहनो बोल होइए जे भोज्य-वस्तुकेँ अमृत सदृश बना दइए। मनुक्खकेँ भोज्य-वस्तुयेक माध्यमसँ शक्ति-संचयक ऊर्जा भेटैत, जइमे विटामीन सेहो एकटा छी। पत्नीक बात सुनि धरमूदास बजला- “अपने तँ साक्षात् लछमी छी, कहू जे की सभ परसाद पेबाएब।”

पतिक बात सुनि, पत्नी बजली- “अपन सातो गोरेक भोजन वएह सभ कऽ लेलैन। समैयक अँटावेस करैत बाड़ीसँ नअ-दसटा बन्धा कोबी काटि अनलौं। नोन-मिरचाइ नइ देने छिऐ। ओ अपना-अपना विचारे जे जेते खाइ।”

लवनचुस जकाँ चुसैत ठोरे धरमूदास बजला- “अहाँ केना बुझलिऐ जे उमेरगर लोककेँ नोन कम खेबा चाही। नोनेमे जखन रोग अछि, तखन किए ने मधनोन खाइत मीठनोने खाए लगी।”

अन्नक अनुपातमे फूलदार आ पत्तादारक ओजन बेसी हएत। सोल्होअना भुखलो आकि बत्तीसोअना खेनौंसँ तँ नीक नहियेँ होइ छइ। तखन तँ कियो जीबैले खाइए आ कियो खाइले जीबैए। ई तँ मनक विचार भेल। जेहेन अन तेहेन मन।



तिथि: 21 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 1410

ठोररंगू

जहिना जेठुआ बीआ, अधखरूआ रोप, आसिनक सिहकी पाबि अगते कातिकमे रंगवा धान ठोररंगू हुअ लगैत तहिना बीस बर्खक पछाइत परदेशसँ घुमि गाम एलापर सुवोधकेँ भेल। होइतो अहिना छै जे कोनो बात-विचार पेटमे घुरियाइत रहत आ मुँहमे एबे ने करत...। अनभुआर जकाँ सुवोध पत्नीकेँ कहलक- “जेना किछु भेट रहल अछि तहिना मनमे उठैए।”

‘किछु भेट रहल अछि’ सुनि श्यामाक मन चमकलैन। एतेटा दुनियाँमे एते चीज अछि, तइमे ‘किछु भेट रहल अछि’ ई की भेल? दुनियाँक तँ सभ किछु सोझेमे अछि, तखन हरेलैन कथी जे भेट रहल छैन? श्यामाक मन अपने विचारमे ओझरा गेलैन तँए किछु जवाब फुरबे ने केलैन। चीजक कमी छै जे दुनियाँमे किछु ने भेटत। मुदा एते तँ अनुभव श्यामाकेँ रहबे करैन जे केता बेर लॉटरी टिकटसँ भाग्य अजमाएले छैन, जे किछु ने भेटल आकि भेटैबला अछि। तखन एहेन विचार मनमे उचरलैन केना? उचरब आ उचारब दुनू होइए। एकटा भेल उचड़ीन जे खोंखैर-खांखैर खाइए से आ दोसर भेल रटनमा जे सदैत रटिते रहैए से। मुदा अखैन धरिक, बाइस बर्खक जिनगी, श्यामा सुवोधक संग गुजारि चुकल छेली, तँए तीत-मीठक बहुत किछुसँ परिचित भऽ चुकल छेली। तँए अगुता कऽ किछु बाजऽ नै चाहलैन। मुदा दू गोरेक बीच जँ सवाल-जवाब, उत्तरा-चौड़ी नै भेल, तँ दुनू गोरेक बात-विचारक रस की रहल। मुदा अनरनेबामे आमक रसक सुआद आ केरामे बेलक सुआदो तँ नहियेँ

कहल जा सकैए। तखन? तखन की! पतिक विचारक धारकेँ मुँह बान्हब नीक हएत, कनी किनछरि दबि किए ने देखि कऽ अजमा ली। बजली- "ठेकना कऽ देखियौ, अहाँक भेटलाहा की हमर नइ भेल?"

भिनसुरका समय चाहक बैसारपर दुनू परानी सुवोध गप-सप्प उठौने। पत्नीक बात सुवोधकेँ ने तीते लागल आ ने मीठे। मनमे उपकलै- ई की भेल जे ठेकना कऽ देखियौ? ठेकानो की सदैत ठेकाने रहैए, ठेकान-बेठेकानक कोनो आड़ि-धूर छइ। सदैत जिनगीक धारमे चीत-पट, उनटैत-पुनटैत प्रवाहित होइत चलैए। मुदा आड़ा केतौ थोड़े लगै छइ। श्यामो अपन विचार-वाण छोड़ि चुप भऽ गेल छेली। मुदा सुवोधक मन पाछू घुसैक कऽ नाचल। नाचल ई जे जिनगी दू दिशामे प्रवाहित होइए, एक स्वावलम्वी दोसर परावलम्वी।

कियो अपन मनोनुकूल जिनगी तखने पाबि सकैए जखन ओ स्वावलंवी हएत। अपन सभ किछु रहतै, कर्मक संग सदैत विचड़ैत रहत, अपनाकेँ चलबैत रहत। मुदा हमरा तँ से नै भेल। घर छोड़ि जहिया निकललौं तहियासँ कारखानामे नोकरी करैत एलौं। फेर मन आगू बढ़लै, आगू ई बढ़लै जे नोकरी करैक विवशता किए आएल। ऐठाम आबि सुवोध ठमैक गेल। अपने बाजल बातमे जेना किछु भेटए लगलै, वाण बनि आगूसँ आपस आबि छाती खोधए लगलै। जेना रोड़ा-पत्थरक चोट माथमे लगलासँ चौन्ह आबि आँखिमे इजोत छिटकैत, तहिना सुवोधकेँ सेहो भेल। नजैर उठा पत्नीपर गाड़लक तँ बुझि पड़लै भरिसक पत्नी झुट्ठा बुझि विचारकेँ पाछूए दिस गुड़का देलैन। गुड़काएब उचित भेल? मुदा उचित मनमे अबिते अनुचितो उठि कऽ ठाढ़ भऽ अपन पक्ष रखलक। पक्ष ई रखलक जे अनुचिते की भेल? जे प्रेमी-प्रेमिकाक जिनगीक वादा कऽ हाथ पकैड़ संग आएल, ओ कहाँ पूर भऽ सकलै। सभ दिन किछु ने किछु अभाव

रहबे कएल जे से खगता रहल, खगैत रहल। निच्चाँ खसैत सुवोधक मन पाछू खर्ग बनि खगता उनैट तकलक तँ सुवोधकेँ बुझि पड़लै जे खसैत जरूर एलौं, मुदा खसि पड़लौं, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। संग मिलि सृष्टिक सिरजन केबे केलौं, पेटसँ लऽ कऽ बर-बेमारीक बिपैत भगैबते एलौं, फेर मन किए धिक्कारि रहल अछि? हँ एते जरूर भेल जे अनका जकाँ खर्च कऽ बच्चाकेँ नै पढ़बै छी, अनका जकाँ बर-बेमारीक इलाज नै करबै छी, एकर माने तँ ईहो नहियेँ भेल जे बाल-बच्चाकेँ नै पढ़बै छी आकि बर-बेमारीसँ रक्षा नै करै छिऐ। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जाएत जे जे सपना सभ देखि पुरबऽ चाहैए, से नै भेल। मुदा नै भेल सेहो केना मानल जाएत, आगू-पाछू, अगल-बगल ऊपर-नीचाँ सभतरि तँ सपने लटकल अछि, तैठाम केते सपना लोक पुरौत। मुदा सेहो केना कहल जेतइ, केकरो सपना सपनौती बनि जिनगीक बाट देखबै छै तँ केकरो सपना सपनाइते ससैर जाइ छइ। पुन: सुवोधक नजैर पत्नीपर गेलै तँ बुझि पड़लै जे श्यामा भरिसक निराश भऽ गेल छैथ। जिनगी तँ वएह ने भेल जे आशाक बाट पकैड़ आशावान बनि जीवन गुदस करए। जखने आशा छुटल तखने निराशाक आगमन भेल। निराशे ने मृत्यु सदृश भेल...! एहेन स्थितिमे सुवोध गाम आएल छल। मुदा जहिना श्यामा निराश छैथ तेकर विपरीत तहिना सुवोध आशावान अछि। बीस बर्खक कारखानाक नोकरी सुवोधकेँ जिनगीक बहुत किछु देलक, बहुत किछु लेलक। मुदा दुनू लाभे सुवोधकेँ भेल। पहिल जीबैक ढंग- सीमित आयमे चलब- देलकै, तँ अनकर देखौंस लेबो केलकै। अवगुण गेने आमदनी केता गुणा बढ़ि जाइ छइ। अखैन सुवोध ओ सुबोधक सीमापर आबि ठाढ़ अछि, जेतए परिवारमे माइक संग पत्नी आ तीनटा बच्चो छइ। आब सुवोध ओ सुबोध नै जे स्कूल-कौलेजक जिनगीमे छल।

आब सुवोधकेँ अपन हारल जिनगीक कथा पत्नीओंकेँ सुना अपन कलंक धोऐमे कनियोँ लाज नै हएत। मन ठमकलै। पिता-पीढ़ीक इतिहास आ अपन इतिहासक बीच विचार आबि लटैक गेल। किम्हरो देखबे ने करै जे परिवार अपन खेतीक उपार्जनसँ समयानुसार हमरा बी.ए. तकक शिक्षा देलैन। ओ परिवार आइ बेठेकान भऽ गेल अछि। अपन पुश्तैनी सम्पैतक संग अपन श्रमकेँ जोड़ि चलैक छल से नै भेल? मुदा से किए ने सोचि पेलौं!

'किए ने सोचि पेलौं!' लग अबिते सुवोध ठकमूड़ भऽ गेल। ठकमूड़ ई जे साधारण पढ़ल पत्नी छैथ, अपने तँ से नै छेलौं मुदा चुकलौं तँ दुनू गोरे। दुइए गोरे किए, परिवारे। परिवारक स्तर तँ गवाही दाइए रहल अछि। धिये-पुतेकेँ केहेन पढ़ै-लिखै, खाइ-पीऐक ओरियान कऽ पेलौं अछि। अपन भार फेकैत सुवोध मुस्की भरैत बाजल-

"संग मिलि हारब आ संग मिलि जीतब, ने हार भेल आ ने जीत भेल।"

सोझ-साझ पतिक बात सुनि श्यामा सकपकेली। मुदा मुँहमे बोल हेराएले रहैन। की बाजब! मुदा संगिनीक रूपमे तँ हमहीं छिऐन, जँ हंस-हंसिनीक लोलक घोघ नै भरि पेलौं तखन संगीयेँ की? सभ दिनसँ पुरुखक ढाठी रहल जे नीक भेल तँ हम केलौं आ अधला भेल ते पत्नीपर झाड़ि देलौं। मुदा अनठेकानी किछु बाजबो तँ नीक नहियेँ हएत। तखन? हँ तखन किए ने! हार कि जीत की भेल, आ तइमे केते हम केलौं आ केते ओ- पति- केलैन तइ हिसाबे हार-जीत हएत आकि सहरगंजा..? गर अँटबैत-अँटबैत श्यामा बजली- "मने-मन गुर-चाउर खेने नइ हएत। नर-मेदक बात छी, जँ कनियोँ छह-पाँच भेल तँ नरकोमे घीचम-तीर हएत।"

पत्नीक बात सुनि सुवोध अपन पढ़ब-लिखब दिस नजैर बढ़ौलक। गामक स्कूलमे जखन पढ़ैत रही, सभ चटियासँ नीक हमर कियारी रहए। जइमे फूलो-गाछ लगबी आ आनो-आनो चीजक। मिडिल स्कूल अबैत ओ छूटि गेल। मुदा एते तँ मनमे आबिये गेल रहए जे मैट्रिक पास करि कऽ नोकरी करब।

मैट्रिक पास केलाक पछाइत अपनाकेँ निम्न कोटिक नोकर बुझि आगू पढ़ैक विचार केलौं। पिता दिससँ कोनो बाधा कहियो उपस्थित नै भेल। आने गारजन जकाँ ओहो पढ़ै-लिखैकेँ धर्मक काज बुझि अन्धभक्त छला। बी.ए. केलाक पछाइत हम अपनाकेँ अपन श्रम बेचैले अपनाकेँ पूर्ण तैयार कऽ लेलौं। ओना, पितोजीक एहेन इच्छा नहियेँ रहैन जे बेटा आगू नै बढ़ए। तँए ओ पूर्ण स्वतंत्रता देने रहैथ। सभ माए-बाप चाहैए जे बेटा जेहेन कमासुत हएत तेहेन परिवार हरल-भरल बनत। समय पाबि बिआहो कइये देलैन। जेना अपन सोलहन्नी भारसँ निचेन भऽ गेला। दू सालक पछाइत दुरागमन भेल। तैबीच नोकरीक पाछू रेठान शुरू केलौं। एक तँ अहुना गाम-घरमे जे काज छै ओकरा पढ़ल-लिखल लोक करै ने चाहैए। साल भरि समय निकैल गेल। गाम छोड़ैले बाध्य भऽ गेलौं। मनमे बाध्य अबिते सुवोधक नजैर पुन: दोहरा कऽ श्यामाकेँ निहारए लगलै। अपन तिनवटी जिनगीपर आबि अँटैक गेल। तिनवटी माने एक अपन परिवार, दोसर दिस सासुरक परिवारसँ आएल पत्नी आ दुनू परिवार, दुनू परिवारसँ हटि महानगरक नव परिवार बनाएब। मुदा उमंगक लहैर तीनू परिवारमे। मनमे अबिते सुवोध बाजल-

“जहिना महानगर जिनगीमे आएल आ गेल तहिना देखिते-सुनिते जिनगियो चलि जाएत। तइले जे मनहानि करब तइसँ किछु भेटत।”

सुवोधक बात जेना श्यामाकेँ छातीमे लगलैन। लगिते छाती

धकधकेलैन। बजली- “कहियो ठर-ठेकानसँ केतौ नइ रहलौं।”

पत्नीक बात सुनि सुवोधकेँ नोकरीक बीसो बर्खक समय मनमे नाचि उठल। केते खुशी ओइ दिन अपना संग परिवारोकेँ भेल रहै मुदा भेल की? एना किए भेल? एक तँ कारखानादार अपने बड़का कारखानाक शिकार भेल, तैपर ओहो चलौनिहार- श्रमिक-केँ शिकार कैरते रहए। जइके चलैत तीन बेर हड़ताल भेल। बिना कोनो हँ-निहँसक दू-बेरक हड़ताल समाप्त भेल। मुदा तेसर खेप, जखन श्रमिक ऐगला श्रमिककेँ नोकरी समाप्त होइक समय भेल तखन ओ सभ आगूक अन्हार जिनगी देखि अगुआ कऽ तड़तालक संग तालाबंदी केलक। कारखाना बन्द भेल आ नोकरी केनिहारक नोकरियो गेल।

नोकरी छुटला पछाइत सुवोध अपनाकेँ ओहन करताइत बुझलक जे ने दोसर तरहक कारखानामे काज कऽ सकैए आ ने अपन बपौती छह बीघा जमीनकेँ उपयोग कऽ सकैए। पिताक मृत्युक पछाइत खेत-पथारक कोनो थीरी-थमन नै रहलै। मुदा गाम एलाक आठ दिनक पछाइत सुवोधक मन संकल्पक संग उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ ई भेल जे जखन दुनियाँक सभ बाट बन्न भऽ गेल अछि, तैबीच आगू केना जिनगी चलत। मुदा जखन छह बीघा खेतक कीमत अँकलक तखन मनमे बिसवास जगलै जे एते पूजीक मालिक अपने छी जे ठाठसँ अपन कारोबार ठाढ़ कऽ परिवार चला सकै छी। यएह विचार सुवोधक मनमे उपकल। जोरक उधुक्का मनमे लगिते सुवोध बाजल-

“मूलवान वस्तु भेट गेल। आब खगता अछि दुनू गोरे विचारि कऽ अपन-अपन काजक भार उठा चली। जेहेन चालि चलब तेहेन ढालि धरब। जेहेन ढालि धरब तेहेन माइन पाएब।”

पतिक बात सुनि श्यामा बजली- “अपन जिनगी जे भेल से भेल, मुदा बालो-बच्चा हँसैत जीबए सएह ने कहब।”

पत्नीक विचार सुनि सुवोध विह्वल भऽ गेल। मुदा अपन हारल लोक बाजए तँ नै चाहैए जे सुवोध बाजत। तरसँ जेना मन उपकलै, उपैकते फुटलै-

“हमरा सन जे छह से हमरो बात सुनह, मानह नै मानह, ई तोहर मनक बात भेलह। मुदा हमरो मनक तँ यएह ने बात भेल।”

पतिक बात सुनि श्यामा सुवोध श्याम देखए लगली। हंस-हंसिनीक जोड़ीक जोड़।



तिथि: 23 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 1531

लगबे ने कएल

फगुआसँ एक दिन पहिने झंझारपुर बजार गेल रही। थाना चौकक काते चाहक दोकानपर देवानन बैसल रहए, साइकिलपर देखिते दोकानसँ हल्ला केलक-

"किसुन भाय, आउ-आउ चाह पीब लिअ।"

'चाह पीब लिअ' ई तँ सोझे चाह पीब नइ भेल। चाहक संग समैयक उपयोगो होएत। चाहे ओ कोनो समाचार सुनब हुअए आकि काज करब। रूकि कऽ चाहक दोकानपर गेलौं।

अपने पँजरा लगा ब्रेंचपर जगह बना बैसैक ओरियान देवानन केलक। ओना, जगह सिकेस बुझि पड़ल, बगलक दोसर ब्रेंच खाली रहै, मुदा मनमे भेल जे चाहेक दोकान छिऐ, रंग-बिरंगक लोकक अड्डा छीहे, भऽ सकैए जे कोनो तेहेन विचार देवाननक होइ जे ओ दोसरसँ बचा कानमे फुसफुसा कऽ कहऽ चाहैत हुअए। देह-हाथकेँ पातर बना घोंसिया कऽ बैसलौं। चाहो आबि गेल। ताबे तक देवानन पाबैनक उपहार दैत रहल।

मुदा मनमे ईहो हुअए जे एते उपहारे लऽ कऽ की करब। जखन मोबाइलेसँ बाल-बच्चाकेँ ढाकीक-ढाकी उपहार आ बच्चाक बापकेँ पोस्ट ऑफिसक हाथे बहिन राखी बन्है छैन, तखन जँ शुभे-शुभ नै तँ अशुभ की...।

अदहा गिलास चाह सठैत-सठैत जेना देवानन बुझि गेल जे अपन गप-जोकर चाह गिलासमे छैन्हे। अहुना तँ अपना सभकेँ

बुझले अछि जे खाइ-पीबैकाल बाजी नहि। एकतरफा सुनैक काज अछि। तहूमे जेकर नोन खाइऐ, तेकर सरियत सेहो देबे करिऐ। बाजल-

“भाय, एकटा बात सुनि मन बिसाइन-बिसाइन भऽ गेल अछि!”

देवाननक शब्दो आ शक्लोक सुर्खी देखि जिज्ञासासँ खढ़िया जकाँ कान ठाढ़ केलौं। पुछलिऐ-

“की बिसाइन?”

देवानन बाजल-

“भाय, बेंगवार्कें छौड़ा सभ फगुआ पाबैन कहि ताड़ी पीआ देलकै आ मनमे बैसा देलकै जे पाबैनक सभ किछु माफ होइ छै, श्याम भायकेँ अनधुन गरिया, खूब गरियौलकैन!”

चाहक दोकान तँए सभ बात एतए कएलो ने जा सकैए। केना पुछितिऐ जे किए गरियबऽ कहलक। मनमे भेल कोनो कनाइर हेतइ। मुदा चुपे रहलौं।

चाह पीबैक घर छिऐ, एक औत एक जाएत। मुदा तइ बिच्चेमे दोसर ब्रेंचपर मारि-पीटक गप उठि गेल। पास-परोसक मारि-पीट छी, किए भेल? ई जिज्ञासा भेबे कएल। मुदा बजलौं किछु ने, खाली सुनैत रहलौं। सुनलौं जे बगले गाममे एकटा छौड़ा फगुआक उपहार कहि कागजक एकटा पन्नापर लिखि, चौमैतपर साटि देलक। ओइमे सोलहन्नी उनटा-पुनटा बात लिखल रहइ। गाममे जे सभसँ धनीक, ओकरा भिखमंगा आ जे सभसँ बेसी ज्ञानी हुनका मुरुख ललका रोशनाइसँ लिखि देने छेलइ। तहीले लिखनिहारकेँ भँजिया पान-सात थप्पर लगा देलकै। सएह मारि-पीट छल।

मुदा एतबेपर थमि गेल। पाबैनक समय रहने सभ थोम-थाम

लगबैत कहलकै, सभ खेने-पीने अछि तँए पाबैनक पछाइत बुझारत हएत। दोकानपर सँ उठि विदा भेलौं। देवानन सेहो संगे विदा भेल। पाबैनक बजार, तहूमे फगुआ सन मध्यमासक उछाही कहियौ कि वसन्तीक वहार कहियौ, गज-गज करैत लोकक भीर। रंग-रंगक लोक, जेबीमे खुदरा पाइ जहिना झनझनाइए तहिना लोको झनझनाइत, तैबीच दोकानसँ रस्ता धरि पसरल फगुआक वस्तु-जात। रंग-रंगक डम्फा, ढोलक, तबला, मिरदंग इत्यादि-इत्यादि ओहन बनि पसरल जे चाहक कप जकाँ पीओ-फेको अछि। कोनो एक दिन टिकत तँ कोनो एक्के दिनमे तीनटा फूटत। तहिना रंग-रंगक वस्त्र-जात, देश-देशक वस्त्रसँ भरल। एहनो-एहनो गंजी-अंगा जइमे पाँच गोरे एक्केटामे अँटि जाएत आ एहनो जे अदहो देह नै हएत। जेकरो झाँपन देब सेहो ने झँपाएत। तहिना माथ परक टोपीओ। कोनो हाथी छाप तँ कोनो घोड़ा छाप। कोनो हीरो संग जीरो छाप तँ कोनो हिरोइन संग जोकर छाप। तहिना रंगो आ अबीरोक बजार। खेबो-पीबोक विन्यासक कमी नहियेँ, मुदा सबहक दाम तेते चढ़ल जे जे पाबैन दहाइमे होइ छल ओइमे हजार-बजार चलि आएल।

चेतन बुझेलासँ बुझियो सकैए मुदा बाल-बोध तँ नै मानत। ओ तँ धिया-पुताक जेरमे अँगने-अँगने टहैल-टहैल रंग-अबीर खेलबे करत। तैठाम जँ ओकरा रंग-अबीर नै रहतै तँ ओ आनक मुहतक्की करत की नहि। तँए ओकरो मन बुझबैले तँ किछु करैए पड़त। तहूमे तेहेन-तेहेन लोक सभ भऽ गेल अछि जे अनेरे कहत फल्लँमाक धिया-पुताकेँ रंगोक उपए नै छइ।

एकटा दोकानपर चीज-वौस मोलबैत रही कि देवानन एक चक्कर लगा घुमि कऽ लगमे आबि बाजल- “बजारमे आगि लगल छइ।”

'आगि लगल छै' सुनि देवानन दिस देखए लगलौं जे चीज-वौसक दाम सभ बाजत। मुदा दोकनदारो उड़नबाज, बिच्चेमे टाँहि देलक-

"एहेन अगिमुत्तू जकाँ गप किए होइ छह।"

दोकनदारक गप सुनि देवानन चुप भऽ गेल। चुपो केना ने होइत, दुनियोँ तँ अजीव छइ। कियो जुगानुकूल जीवन स्तरकेँ अगुआएब बुझैए तँ कियो स्वर्गक सुखकेँ। यात्री दुनू दिस अछि। यएह छी पाबन पाबैन। गमैया लोकक फगुआ पाबैन। जहिना पएरक कोनो आँगुरमे घाओ भेने बेर-बेर चोट लगैत तहिना मनपर मनक-मन चोट पड़ैत रहए। मन मानि गेल जे केकर मुँह देखि विदा भेल छेलौं जे अशुभे-अशुभ भेटैए। मुदा उपाइए की? चीज-वौस पुरबै दुआरे- संख्याक हिसाबे- कटौती करैत बजारसँ निकललौं। पाबैनक सभ वस्तुक जोगाड़ भेने मनमे, क्षणिके सही मुदा चैन तँ भेबे कएल। जहिना काजक दौरमे लोक अमल पान कऽ किछु थकान मारैए, तहिना मनक थकान कमबे कएल। देवाननकेँ संगैतिया सभ भेट गेल, तँए ओकरो केना कहितिऐ चलैले। असगरे विदा भेलौं। जहिना नख-सिखक वर्णन होइ छै तहिना सिख-नखक वर्णन करैक मन बनेलौं। मन कि बनत जे आरो बगदिये गेल। मन बनब भेल काजमे प्रवृत हएब। चाहे ओ शारीरिक हुअए आकि मानसिक। मन भन-भना गेल। कोन चकरचालिमे पड़ि गेल छी, एक दिस कियो पुरखाक सारापर मन्दिर बना फूल चढ़बैए तँ दोसर दिस हुनकर विचारकेँ जीविते सारामे सजबए चाहैए। फेर जेना मन घुमल। अनेरे कोन रफू करैक चक्करमे पड़ि गेलौं। नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ नइ सम्हारैत चलब तँ जेहो अछि सेहो थोड़े रहत। उपनायनिक मेघ-डम्मरकेँ बड़ुआ केना बारह इंचक बैगमे राखत? मनमे फेर भेल जे गामपर पहुँचते पहिने श्याम भाइक जिगेसा करबैन। कियो केकरो

गारि पढ़लक तँ किए पढ़लक। समाज होइक नाते हमरो दायित्व बनैए जे अनेरे जे कियो केकरो गारि पढ़त तेकरा किए ने विरोध करब। जँ कोनो गारि पढ़ैबला काज केने हुअए तँ गारियो नै पढ़ब अनुचित हएत, मुदा से बुझब केना? फेर भेल जे एक पंथ दू काज। जिगेसो भऽ जाएत आ पुछियो लेबैन। जखने अपन पक्ष रखि बाजब तखने ने ऊहो अपने अपन विचार देबे करता तइ हिसाबे समाजक बीच राखब। चीज-वौसक झोड़ो आँगनमे आ साइकिल दरबज्जापर रखलौं। साइकिलक चालिसँ कने गरमा गेले रही। कपड़ा बदैल विदा भेलौं।

दरबज्जेपर तीन-चारि गोरेक बीच बैसल श्याम भाय ठहाकापर ठहाका मारैत रहैथ। मनमे भेल जे मर्र ई की देखै छी। पीताएल मन रहबे करए, तैपर कनी साइकिलक थकान सेहो भऽ गेल रहए, केतबो मनकेँ थीर करी जे कनी श्याम भाइक गपमे टोकारा दिऐन, मन से राजीए ने हुअए। मुदा तैयो सहैट कऽ लगमे बैस चुपे-चाप बातकेँ घोंटए लगलौं जे कहुना गरम पानिमे ठण्ढा पानि मिलेने ओहो ठण्ढेता। एक दिस श्याम भायकेँ देखिऐन जे चौराहापर गारि सुनलैन आ दोसर दिस देखै छिऐन, हिनका-ले धैन-सन। मनमे हुअए जे ई की भेल? जिनका बेथे हम बेथाएल छी, जे देवोनन कहने रहए, मन बिसाइन-बिसाइन भऽ गेल अछि, आ हिनका-ले कोनो गमे ने! मुदा अनेरे कोनो विचारक दौरमे टभैक जाइ, सेहो नीक नै बुझि पड़ए। बजारसँ अबिते सोझे ऐठाम चलि आएल रही। दिशो-मैदान दिस जाएब पछुआएले अछि। मुदा बीचमे परिस्थिति बदलल। बदलल ई जे रूक्मिणी भौजी पहिने पानिक लोटा-गिलास पहुँचा गेली, पछाइत तस्तरीमे चाहक कप नेने पहुँचली।

..एक तँ फगुआक रंग लोककेँ ओहिना चढ़ि जाइ छै तैपर जँ

किछु खेबा-पीबाक वौस आगूमे आबि जाइ छै तखन तँ मन आरो बमछऽ लगै छइ। श्यामो भाय पैछला गपक पराग्राफ बदललैन। पत्नीकेँ कहलखिन- “चाहमे कनी अफीम नै मिला देलिऐ। फगुआक समय छी जहिना राधा संग कृष्ण धुरखेल करै छैथ, रामो जइ सीता-ले बोनमे की-की ने केलैन, ओहो तँ धुर-खेल खेलबे करै छैथ, तखन अपने दुनू गोरे किए बँचब।”

रूक्मिणी भौजी चुपचाप सुनैत रहली। बजली किछु ने। अपन बात रखैत श्याम भायकेँ पुछलयैन- “भाय, सुनलौं जे चौकपर खूब धुर-खेल केने छेलौं।”

जेना हमर बात श्याम भाय सुनबे ने केलैन तहिना अनमनाएल जकाँ बजला- “हम कहाँ केने छेलौं। सुनैमे आएल जे छौड़ा सभ बेंगवार्कें ताड़ी पीआ बकबै छल।”

पुछलयैन- “एना जँ बका-बकी समाजमे हुअए से नीक हएत?”

उनैट कऽ वएह पुछि देलैन- “केना नीक हएत, की नीक हएत?”

असमनजसमे पड़ि गेलौं। जे पुछए चाहै छेलिऐन, से वएह उनैट कऽ पुछि देलैन। कोनो गर देखबे ने करी। मनमे जेना छटपटी उठए लगल। कहलयैन- “ओते बात-विचार करैक अखैन समय नै अछि। ओइ गारिक की हँ-निहँस केलिऐ?”

ले बलैया, हँ-निहँसक उत्तर देबे ने केलैन आ बजला- “हमरा लगबे ने कएल।”

मनमे हुअए जे ई की कहि देलैन। पुछलयैन- “केना नइ लागल से कनी हमरो कहू।”

श्याम भाइक मनमे मिसियो हलचल नहि। बजला- “गारियोक

दू रूप होइए। एक होइए अधला काज केलाक पछाइत सुनब, दोसर होइए अनेरे केकरो ऊपर शब्दवाण फेकब।”

कहलयैन-

“कनी फरिछा कऽ कहू।”

जेना ठोरेपर उत्तर रहैन, तहिना धाँइ-दऽ बजला-

“कियो अपन कर्मक कर्ता होइए, जे नीक-अधलाक भागी बनत। मुदा अपन किछु कएले ने अछि, तखन गारि लगत किए। अनेरे जे पढ़लक ओ बकलेले भेल। ओकरा ताड़ी पीआ कियो भूतलग्गू जकाँ बकौलक, तइसँ हमरा की? जँ हमर नामे लेलक तँ लेलक। अपन मन ते अखनो यएह कहैए जे गारि सुनैबला कोनो काजे ने केलौं तँ गारि लागत किए।”

ओना, श्याम भाइक विचार जँचल मुदा तैयो मन थीरे ने हुअए। कहलयैन-

“निचेनसँ कखनो आरो गप करब। मुदा एकरा छोड़ब उचित नै बुझै छी।”

हँसैत श्याम भाय बजला-

“बाट चलैकाल कियो अपन जिनगीकेँ नजैरमे रखि चलैए, बाटपर जँ काँटि-कुश आकि गन्दे-मैला रहैए ते ओइसँ बगैल कऽ बढ़बे नीक हएत किने। मुदा अहूँक विचार समाज लेल विचारणीय अछिए।”



तिथि: 25 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 1449

उकड़ू समय

मास डेढ़क करीबसँ सहदेव बाबासँ भेँट नै भेने मन उवियाइत रहए। गाम-घरमे होइतो अहिना छइ। अखनो तँ गाम गामे छी मुदा गामे तँ समाजो छीहे। शहर-बजारसँ फराक अछिए। फराको होइक कारण अछि। जे शहर जेते नमहर तइमे तेते दूर-दूरक लोक आबि बसैए जइसँ ने पैछला कोनो इतिहास रहै छै आ ने वर्तमानक कोनो एकरूपते रहै छइ। सबहक अपन-अपन धंधाक काज, अपन-अपन विधि-बेवहार, जइसँ चालि-ढालिमे दूरी भइये जाइ छइ। मुदा गाम-समाजक से नै अछि। भूतसँ वर्तमान धरिक उचित-उपकारक सम्बन्ध बनल चलि आबि रहल अछि।

लोकमे एहेन धारणा रहिते अछि जे फल्लाँक बाबा हमरा बाबाकेँ बेरपर काज देने रहथिन तँए हमरो उचित बनैए जे फल्लाँकेँ बेरपर ठाढ़ होइऐ। मुदा से सभ नै रहै, जहिना सभकेँ सभसँ भेँट-घाँट भेने देखा-देखी हूबा बढ़ैए तैसंग मनसूबो बढ़िते अछि। ओना, गाम-घरमे चौक-चौराहा भेने पहिलुका अपेक्षा भेँट-घाँट हएब असान भऽ गेल अछि मुदा एहनो लोकक कमी तँ नहियेँ अछि जे अनेरे समय नै गमबै छैथ।

सहदेवो बाबा तेहनेमे सँ छैथ। ओना, भेँटो-घाँटक केते उपाय अछिए। आनोसँ भेँट भेने जानकारी भेटते अछि, तैसंग नीक-अधला काज भेने सेहो चरचामे एने भेँट होइते अछि। मुदा जे भेँट मुहाँ-मुहीं कुशल-छेम बुझने होइए ओ तँ दोसर नहियेँ होइए। तहूमे जे सहदेव बाबा एक-ने-एक बेर दिनमे जरूर भेँट भऽ जइ छला, डेढ़ मास

तिनकासँ नै भेँट भेने मन उवियेबे करत। सहए भेल। ओना, नै भेँट हेबाक कारणो चोराएल नहियेँ अछि। समैये उकड़ू भS गेल अछि। सभ अपने-अपने व्यस्त भS गेल छैथ। ओना, उकड़ू समय भेने व्यस्तता बढ़ितो अछि आ घटितो अछि। जे सोभाविको अछिए। एक दिस हाथक काज छीना गेने व्यस्तता कमैए तँ दोसर दिस दोसर काज उपस्थित भेने बढ़ितो अछि। सहदेव बाबासँ भेँट करैले मन एते उविया गेल जे कोनो काजमे नजैर सन्हियेबे ने करए। जाबे मनमे काज नै सन्हियाएत ताबे देहो-हाथ अलसाएले रहत। मनमे भेल जे अनेरे माथमे भेँट करैक बोझ बनल अछि, से नै तँ जा कS भेँट कS अबयैन। मुदा फेर हुअए जे भेँटो करैक तँ किछु बहाना होइ छै, से कथी बहाना बनाएब। अनेरे भेँट करए जाइ आ पुछि दैथ जे 'केमहर आएल छेलह' तँ की कहबैन?

ओना, समय जेहेन उकड़ू भS गेल अछि तेहेनमे काजक बहाना नइ बल्कि बोल-भरोसक जरूरत तँ अछिए। तकले काजो आ तकले बहन्नो तँ अछिए। विदा भेलौं...।

रस्ता कातमे तीन-चारिटा दोकान एकठाम अछि। सहदेव बाबाकेँ दोकानपर देखलयैन। देखिते मनमे खुशी भेल जे रस्तेमे बाबा भेट गेला। भेटला तँ मुदा भेँट होइमे समय लागत। किछु कीनए दोकान आएल छैथ। दोकानक हिसाबे भीड़ बेसी। ओही भीड़मे सहदेव बाबा ठाढ़। हुनका ठाढ़ देखि मनमे कनी कठाइनो लागल, कठाइन ई लागल- दोकनदार केहेन अछि जे बुढ़ो-बुढ़ानुसक विचार ने करैए। जुआने-जहान जकाँ ठाढ़ केने छैन। मुदा किए केने छैन से तँ ओ जानए। दोकनदारपर सँ तामस घुसैक कS धियो-पुतो आ चेतनोपर गेल। कहू जे केहेन धिया-पुता आकि चेतने भS गेल अछि जे सभ अपने-ले हाँइ-हाँइ करैए। जेना सबहक पेटमे मूस कुदैत होइ। आखिर सभ उजि-माइल किए करैए। कनी आगू बढ़ि देखलौं

तँ दोकनदार डण्डी धेने बेसाह जोखैमे एते तवाह रहए जे पाइयोक हिसाब नै जोड़ि होइ। तैठाम बुधि-विवेकक हिसाब तँ आरो भारी अछि। वेचारा दोकनदारे की करत। ओकरे चावस्सी दी जे नगद कि उधार गामक पैत बँचौने अछि। तहीकाल एक दस-बारह बर्खक बच्चिया दोकनदारकेँ कहलक-

"हमरा राइतो ने भानस भेल, तँए पहिने हमरा दू किलो आँटा दिअ।"

बच्चियाक बात सुनि मन सहैम गेल। हाइ-रे मनुक्ख! दस-बाहर बर्खक बच्चियाक जँ पेट जरत तँ ओ केहेन जननी बनत। मुदा उपाय? सहदेव बाबा आगू दिस घुमल ठाढ़ रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नै रहैन आकि पेटमे घुरिया रहल रहैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे भरिसक बेसौहुआ सबहक संग बाबा अपन बेथा ने तँ विलैह रहला अछि। अनका पेटक आगिक संग अपनो पेटक आगि जनु बाँटि-विलैह रहला अछि।

पाँच किलो चाउर आ सात किलो गहुमक चिक्कस कीनि दुनू झोरा दुनू हाथमे नेने सहदेव बाबा पाछू दिस घुमला कि हमरापर नजैर पड़लैन।

नजैर मिलते दुनू हाथ जोड़ि बजलौं-

"बाबा गोर लगै छी।"

मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। आगू बढ़ैत निच्चाँ एला। खसल चेहरा देखि मन कलैप गेल। ताबे लग आबि गेल छला। ओना, बाबामे ई आदत छैन जे चिन्हारकेँ देखिते किछु-ने-किछु पुछि दइ छथिन। एहेन मान-रोख मनमे छैन्हे नइ जे जे टोकत तेकरे टोकबै। स्पष्ट विचार छैन जे झगड़ा ने दन तँ चुन-तमाकुल किए बन्न। भाय, झगड़े जँ अछि तँ झगड़ा किए अछि, ओ तँ जे जीबैए, सहए

करत। ने पैछला देखए औत आने ऐगला भोगए औत। तखन तँ भेल जे झगड़ा कथीक। जँ वैचारिक झगड़ा रहत तँ ओ विचारि कऽ विचार करए पड़त, तहिना जँ खेत-पथारक रहत तँ ओकरो अपन सूत्र छै, तहिना जँ अधिकारक अछि तइले संविधानो अछि आ संविधान बनौनिहारो। तखन कोन कारण शेष रहल जइले समाजमे विग्रह बनल रहत।

मनमे भेल जे केना बाबाकेँ कहबैन जे अहींसँ भेँट करए जा रहल छी। एक तँ अपने बेसौहुआ छैथ तैपर भार किए देबैन। मुदा मनक जे उमकी रहए ओ तँ रहबे करए, जे विचार विनिमय भेनहि हटत...।

कहलयैन-

“बाबा अहीं घर दिस जाएब।”

मनमे भेल जे से कहलासँ एते मनमे हेबे करतैन जे रस्ते-रस्ते कुशलो-छेम कऽ लेब आ जइ काजे जाइए से काजो...। ओना, अपना तँ बुझले अछि जे जखन कोनो विचारक गुण बाबा पकैड़ लइ छैथ तखन सिरा-भट्ठा बिसैर जाइ छैथ। ओना, भट्ठामे गुनक कोन खगता छै, ओ तँ अनेरे पानिक वेगमे भँसियाइत चलत, मुदा सिरा दिस चढ़ने तँ धारक वेग बुझिये पड़ै छइ। गुणियो तँ गुणीए छी, जखने मनमे गुणकेँ रोपि लेत अनेरे ने गुणीसँ गुनी भऽ जाएत। घर दिस विदा होइते कहलयैन-

“बाबा अहाँक दुनू हाथ बरदाएल अछि चलैमे बाधा हएत।”

ओना, बाबाक मनमे जे रहल होइन मुदा बजला-

“कोनो बेसी भारी कहाँ अछि, सात किलो आँटा आ पाँच किलो चाउर अछि।”

बाबाक बात सुनि ओना, बहुत आश्चर्य नहियेँ भेल, किएक तँ

अपने सेहो ओही रमा-कठोलामे छी। मुदा जबरदस आश्चर्य ई भेल जे जे बाबा अपने सभ दिन अन्न बेचै छैथ, आइ ओ कीननिहार भऽ गेल छैथ, मुदा जिनगीसँ तेते प्रेम छैन, तँए दुखे-कि-सुखे जीबए चाहिते छैथ। रस्ता दुआरे आकि की, अपन घर लग तक गामेक चर्च बाबा करैत रहला अपन बात किछु ने बजला। घर लग तक अपन बात किछु ने सुनि भेल जे समय तँ रीब-रीबेमे चलि गेल। बाबा अपन कहाँ किछु कहलैन। जे सोचि आएल छेलौं सहए हेराएल रहि गेल।

मुदा सुतरल, सुतरल ई जे घर लग अबिते बाबा बजला- "बहु दिनसँ भेँट नइ भेल छेलह दरबजेपर चलह किछु आरो गप करैक अछि। अखैन कि कोनो काज-परोजन अछि, भने किछु समैयो कटि जाएत। समय तँ काजे काटि लेलक, मुदा अपनो तँ ओकरा काटक अछिए। जाबे से नै हएत, ताबे जीब केना पाएब।"

आँगनमे झोरा रखि सहदेव बाबा दरबज्जापर एला। ताबे चाहो आबि गेल। दुनू गोरे चाह पीबए लगलौं। मनमे हुअए जे बाबाकेँ किछु पुछिऐन, मुदा बाबा अपने बजैमे ओझरा गेल रहैथ, जइसँ अपन घरक बाते हेरा जाइन।

मुदा गर लगल। बजला-

"बौआ, गामक दूरदिन आबि गेल।"

बाजि कऽ कनीकाल चुप भऽ फेर बजला-

"जखन गामेक दूरदिन आबि गेल, तखन गामक लोक बँचि केना सकैए।"

गामक की दूर्दिन आबि गेल से बुझिये ने पेलौं। मुदा जँ कोनो विचारक कोनो शब्द भरियाएल रहत तँ ओकरा हल केलाक पछाइते ने आगू नीक होइ छइ।

पुछलयैन- "बाबा की दुरदिन?"

शब्दकेँ महियबैत बजला- "दूरदिनमे दू शब्द छै, दूर आ दिन। दूरदिनक एक माने भेल भविसक दिन, आगूक दिन आ दोसर माने दुतकारैबला दिन सेहो भेल।"

बाजि सहदेव बाबा जेना किछु सुनैक जिज्ञासामे चुप भऽ गेला। मनमे हुअए जे केना काटलपर नोन छीटब। माने जे एक तँ सहदेव बाबाक दिन एते घटि गेलैन जे बेचनिहार से कीननिहार भऽ गेला तैपर अन-पानिक चर्च करब नीक थोड़े हएत। मुदा ईहो हुअए जे ई तँ जिनगीक सत् छी, एकरा छोड़बो नीक नहियेँ...।

अही अग-दिगमे मोन पड़ल रहल। मुदा जेना अपने मनमे उचरलैन। बजला-

"अपन गाम नाश भऽ गेल।"

'नाश भऽ गेल' तैपर नजरिये ने पहुँच सकल। किसान लेल पानिक की महत अछि आ ओकर दुरूपयोग भेने केते पैघ खतरा सेहो छइ। तइ दिस नजरिये ने गेल। मुदा एते तँ आश्चर्य लगबे कएल जे गामे नाश भऽ गेल, की नाश भेल? पुछलयैन-

"की नाश भेल?"

बजला-

"गाम देने जे कोसी नहरक शाखा अछि, ओ भारी नोकसानदेह बनि गेल अछि। जहिया गाममे नहरक खुनाइक नाओं लेल गेल तहिया भरि दिन देखिते-सुनिते, अपन भूत-वर्तमान आ भविसक विचार करैमे दिन बित गेल, तेते मनक आशाक श्रृंग उपकने खुशीसँ हृदय नाचि गेल रहए जे...। मन भेल रहए अपने नै गामोक सुदिन आबि रहल अछि मुदा सुदिन केना कुदिन भऽ गेल।"

बाजि कऽ बाबा जेना ठमैक गेला। बकार बन्न भऽ गेलैन। मुदा अपन जिज्ञासा एते बढ़ि गेल जे अनेरे मुहसँ निकैल गेल- "जँ सुदिन

कुदिन बनि सकैए तँ कुदिनो तँ सुदिन बनियेँ सकैए।”

सहदेव बाबा बजला-

“हँ निसचित बनि सकैए। अपने गामक जे चुहचुही अछि ओ अहिना रहितए। देखिते छहक जे नहैरक एहेन बेवस्था अछि जे धानो दहा जाइए आ गहुमो दहा गेल। ऐबेर की कोनो धारक बाढ़ि आएल कि नहरेक पानिसँ दहार भेल!”

कहलयैन-

“हँ से तँ भेल।”

हमरा बातमे बाबाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा जेना हृदयक धड़कन तेज भेलैन। मुँहक सुरखीमे एकाएक खूनक लाली पसरए लगलैन। बिहुसैत बजला-

“बौआ, जाके मतिभ्रम होइ खगेसा, सो कह पच्छिम उगे दिनेशा।”



तिथि: 27 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 1467

चास-बास दुनू गेल

बहुत दिनक पछाइत देवलाल काका भेटला। तइ भेटैमे देवलालो कक्काक दोख नै छैन, से बात नइ। ओना, दोख अपनो नै अछि सेहो नहियेँ कहल जेतइ। ई तँ कहले जाएत जे गामक जुआन-जहान जँ बुढ़-बुढ़ानुसक हाल-चाल नै पुछैन, तँ की ओ रजे-दैवक भरोसे रहि जाइथ तेकरो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत। मुदा दोखो किए लागत, किए ने टहैल-बूलि कऽ सभसँ भेँट-घाँट करैत, हाल-चाल बुझैक कोशिश करब। तीन किलोमीटर चक्कर मारैले पएर दुरुस अछि, मुदा ओही पएरे किनकोसँ भेँट करब से मनहानि हएत। मुदा तइमे देवलालो बाबाक दोख ई तँ छैन्हे जे हुनका लग समैयक ठेकान नै छैन। आब कहू जे सभ चाहैए जे लखिया छी तँ करोड़िया बनी, करोड़िया छी तँ अरबिया बनी आ हम काका लग बैस जे समय गमाएब से उचित हएत। गोर लागि पुछलयैन-

“काकाजी, की हाल-चाल रखने छी?”

जेना पहिनेसँ बुझैत रहथिन कि की, ऐगला बात अपन पछुआएले रहए जे ‘किछु हमरो सभकेँ दिअ’ मुदा बिच्चेमे बजला-

“चास-बास दुनू गेल।”

देवलाल काका सरकारी नोकरीसँ निवृत साहित्यसँ रूचि रखैबला छैथ। ओना, जहिना अपन कीर्तमे रंग-रंगक नाउओं आ आभूषणो पहिरा-पहिरा ठाढ़ करै छैथ तहिना गामोक लोक नाउओं आ आभूषणोसँ हुनका सजौनहि छैन। माने ई जे साइयो नाओंसँ

अपनो विभूषित छैथ, कखनो जोगिया तँ कखनो भोगिया कहले जाइ छैथ। तइमे मिसियो भरि कुवाथ मनमे नै होइ छैन। जहिना लोकक नाओं हम बीछिलौं तहिना हमरो बीछलक। ओना, नाओं तँ कतेको लोक पहिरौने छैन मुदा बेसी लोक कविजी कहै छैन। ओना, कियो झामोलाल कहै छैन तँ कियो कथाकार। कियो नटकिया कहै छैन तँ कियो फटकिया सेहो कहिते छैन। मुदा तइ सभले मन साफ छैन, भाय! भगवान जखन बजैले सभकेँ मुँह देने छथिन तँ कियो अपना मुहेँ बाजत किने, तइले अनका तामस किए उठत। जे कियो हमर कविता पढ़लक आकि सुनलक, ओ जँ कवि कहलक, तँ कोन अनरगल कहलक। तहिना जँ कियो नाटक पढ़ि नटकिया कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। आ जे किछु ने पढ़लक ओ जँ झामेलाल कहैए तँ कोन बेजए कहैए। कियो नाटक देखलक मुदा पढ़लक नहि, ओ जँ फटकिये कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। तहिना जँ कियो कथोकारे कहैए तँ किए लागत। गौंआँ-घरुआ जकाँ हम की कथाकेँ गारि बुझै छी जे हमरा लागत।

तीन साल पहिने देवलाल काका जिला कार्यालयसँ सेवा-निवृत भेला। गामेमे रहै छैथ। ओना, नोकरियो-समय गामसँ सम्बन्ध बनौने रहला, मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत सोलहन्नी गामेमे रहै छैथ। स्पष्ट विचार छैन जे जइ जगहक चर्च रचनामे करै छी, जँ ओइ जगहपर ठाढ़ भऽ रची तँ ओ बेसी नीक हेबे करत। किरानीक नोकरीमे रहितो देवलाल कक्काक मन कहियो ने अलसेलैन। जे भरि दिन ऑफिसक फाइल तैयार करैत-करैत हाथक पाँचो आँगुर काजे ने करैए। भरि दिनक तेते थकान अछि जे ने पेन दिस आँखि उठैए आ ने कागज दिस। मुदा तइसँ फराक जिनगी देवलाल कक्काक रहलैन। अपन नियमित काजक सिलसिला रखने छला जइसँ ऑफिसोक काज नै बेसिआइ छेलैन। तइमे एकटा ईहो गुण बनौने

छला जे आन संगी-साथी जकाँ नै जे आनो-आनो ऑफिसक फाइलक ठिकौती लइ छला। दरमाहापर संतोख छेलैन। ओना, घूस कहि कऽ घूस नइ लइ छला, मुदा जहिना सरकारी रेट काजमे बान्हल अछि तहिना ऑफिसक कर्मचारीक फीस काजे-काज बान्हल रहिते अछि। जे सभ बुझै छैथ। तेकरा देवलाल काका अधला नै बुझि उलफी कमाइ करैत रहला, आ स्पष्ट बजबो करै छला जे खाइते-पीविते रामलला। जे आएल से खाइ-पीबैमे गेल। दरमाहा दिन दरमाहा भेटबे करत। तइसँ ई छेलैन जे ऑफिसक जेते साहित्यसँ रूचि रखैबला छला तिनका सबहक बैसार एकठाम कैरते छला। जे से एकटा समदर्शी समाज बनले छेलैन। तइमे खर्चो होइते छेलैन, तैसंग ईहो छेलैन जे अपनो पत्र-पत्रिका आ किताब पढ़ैक चसकी लगले छैन। परिवारक लेल एते जरूर केलैन जे बेटा-बेटीकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आ बिआह-दान दरमाहाक पैसासँ करा कऽ निचेन भऽ गेल छैथ। अपनो बुझले छेलैन जे फल्लाँ दिन तक दरमाहा भेटत, पछाइत पेंशन भेटत। तैसंग जे जमा-जिगिर अछि सेहो भेटबे करत, निचेनसँ जिनगी खेप जाएब। तँए जहिया तक सेवा निवृत भेला तहिया तक ने मनमे मलिनता आ ने मुँहमे उदासी आएल छेलैन। एबो केना करितैन। दरमाहा अधिया हएत, तेकर भरपाइ तँ जमासँ भइये जाएत। सोझ हिसाब रहैन जे बैंकक सूदि ओकरा भरि देत, तँए जिनगीमे केतौ टुट-फाँट नै बुझि पड़ैन। जखन टुटे-फाँट नै तखन मुहेँ किए मलिन। मुदा से भेलैन नहि, कचहरिया जमाए, धुरुफन्दा लोक, अपन हिस्सा-ले विरोध कऽ देलकैन। भाय, सर्वे भवन्तु सुखिन: ई सूत्र भेल, मुदा अपन बेटो-भातिज आकि दियादोवाद किए बेइमान कहैए, घेँटकट कहैए? जखन बेटा-बेटीक बीच बाप एकरूपता नै आनि सकैए तखन दुनियाँक सभ मनुक्ख मनुक्खे छी से केना भऽ सकैए? आ केते सम्भव अछि? जखने

जमाए विरोध केलकैन कि दुनू बेटा फाँड़ बान्हि विरोधमे तैयार भऽ गेलैन। किछु छी तँ माल-पत्तर छी किने। अपने देवलाल काका पाछू हटि देखैथ तँ हिसाब केतौ ने गड़बड़ बुझि पड़ैन। तहूमे रामायणमे पढ़नहि छैथ जे रावणकेँ एक लाख बेटा, सवा लाख नाइत छेलैन। बेटा-नातिक चर्च अछि नइ कि बेटा-पोता आकि बेटी-नातिक। माने ई जे बेटा संग पुतोहु तेकर धिया-पुता पोता-पोती भेल, तहिना बेटी संग जमाए आ धिया-पुता नाइत-नातिन भेल। दुनू तँ एकरंगाहे भेल तैबीच अपने पड़ि गीजम-गीज हएब से नीक नै बुझलैन, जे से दुनूकेँ- बेटो आ बेटीओकेँ- कहि देलखिन जे अहाँ सभले कमेबो केलौं आ जमो केलौं हमरा ओइसँ कोनो मतलब नहि। जमा छोड़ि पाछू ऐ खियालसँ हटला जे दरमाहा जकाँ नै महीने-महिना पेंशन भेटबे करत तखन चिन्ते कोन अछि। अनेरे जे बूढ़ देहकेँ कोट-कचहरीमे रगड़नियाँ देब तइसँ नीक ने भेल जे कमसँ कम केकरोसँ ने मुहाँ-ठुठी हएत आ ने अपन दौड़-धुप। बुझले अछि जे कोट-कचहरीक रगड़ केहेन होइ छइ। नामक एकटा अक्षरक गलती सही करैमे तीन बर्ख लगै छइ। तहूमे पाइ-कौड़ीक बात छी रगैड़ते-रगैड़ते सभटा झाड़ि लेत। अनेरे फेड़मे पड़ब हएत।

मनमे भेल जे जहिना मन खसल छैन तहिना मुहसँ निकललैन जे 'चास-बास दुनू गेल।' गिरहस्तक चास जोता जमीन भेल आ बास धराड़ी भेल मुदा जे जिनगी भरि नोकरी केलैन, नोकरी जीवनक आधार छेलैन, तिनका मुहसँ निकैल रहल अछि जे 'चास-बास दुनू गेल!' हिनकर चास भेलैन दरमाहा आ बास भेलैन भाड़ाक डेरासँ लऽ कऽ अपन घर-दुआर, तखन किए एहेन बात बजला? फेर मन चनकल, चनकल ई जे साहित्यिक लोक छैथ, जँ किछु घुमा कऽ कहि देने होइथ जे बुझिये ने पबैत होइ। मुदा अनेरे एते मनकेँ बोन-झाँखुरमे किए वौआएब, जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिए किए ने

ली जे अनेरे गुन-धुनमे पड़ल रहब। पुछलयैन-

"काका, की चास-बास चलि गेल। देखै छी जे केहेन निरोग बनि सेवा-निवृत भेलौं, अनका जकाँ ने कहियो घूस-घास दुआरे जहल गेलौं, आ ने कहियो एको दिनक दरमाहा कटेलौं आ ने एकोबेर सस्पेंड-डिसचार्ज भेलौं, तखन किए एहेन अशुभ बात मुहसँ खसल?"

हमर बात केते नीक लगलैन आकि अधला लगलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन छ-पाँच करए लगलैन से बुझि पड़ल। किछु बाजि नै रहला अछि, एना किए भऽ गेलैन, से नै बुझि पबै छेलौं। ओना, देवलाल काका बजैक वेगमे तँ बाजि गेला जे 'चास-बास दुनू गेल' मुदा पछाइत मनमे एलैन जे अनेरे एहेन बात किए बजलौं। जैठाम मुहेँसँ सभ काज होइ छै तैठाम अधला काजक चर्चे फाजिल। केकरो कियो एक साँझ खाइयोले दइ छइ जे पेट जुड़ेने मनो जुड़ाएत, आ जुड़ेलहा मने नीक-अधलाक विचार करत। मुदा देवलाल काकाकेँ जिनगीक संघर्ष तोड़ि देने छेलैन। बाल-बच्चाकेँ पोसै-पालैसँ लऽ कऽ पढ़बै-लिखबै, बिआह-दान करैमे कहियो अर्थक अभाव नै खटकलैन, तेकर कारणो छेलैन जे जाबे तक परिवारमे रहि बाल-बच्चा पढ़लकैन ताबे तक कोनो बेसी भारो ने बुझि पड़लैन, तहिना कौलेजक शिक्षामे सरकारी लोन उठा पढ़ेबो-लिखेबो केलैन आ बिआहो-दान केलैन। ओना, लोनक असुली दरमाहामे सँ होइन मुदा सबदिना आमदनी रहने कहियो बुझि नै पड़ैन। मनोमे बेसी भार कहियो ने पड़लैन जे से कनी ठेकानसँ जिनगीक बात बुझितैथ, ऊपरे-ऊपर चलैत रहलैन। हँसी-खुशीसँ मन मगन रहलैन। मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत जेना अट्ठा-बज्जर मनमे खसलैन। केतबो बेटा-पुतोहु आ बेटी-जमाइक बीच अपनाकेँ समान्य राखए चाहलैन ओ नै रहलैन। नै रहैक कारण ई भेलैन जे जखन बेटा आ जमाइक

बीच, जमा रुपैआक हिस्सा-ले मुकदमाबाजी भेलापर सबहक मुहसँ यएह निकलै जे सभटा बुड़हेक चकरचालि छिऐन। एमहर बेटा-पुतोहुक तर्क होइ जे दुनियाँमे कोन बापक सम्पैत बेटी-जमाएकेँ भेल जे हमर नै हएत। जँ बुड़हा स्वीकारि लितैथ तँ की होइतै। तहिना बेटी-जमाइक तर्क होइत जे सभ दिन ऑफिसेमे रहला आ कानून-कायदासँ भेँटे ने भेलैन। परिवारक सबहक मुहेँ गंजन सुनि मन गीजम-गीज भऽ गेल रहैन। तहूमे जहिना लूटमे चरखा नफा होइए तहिना दोसर नफा ईहो भेलैन, ने बेटा-पुतोहु घुरि कऽ तकै छैन आ ने बेटी-जमाए। मुदा तैयो जँ भरि पोख अन्न, भरि पोख अराम भेट गेलापर मन थीर होइत-होइत थीर भऽ जाइए, सेहो ने भेलैन। बेर-बेर पत्नी कहैन-

“सभ दिन हमरा नवकिये कनियाँ बनौने रहब आकि साउसो बनए देब?”

मुदा देवलाल कक्काक कोन शक जे मन मानि गेल छेलैन जे देहसँ लऽ कऽ परिवार-समाज सभटा तँ लंके छी। मनुक्खक सूत्र सबहक मनसँ लंक लऽ कऽ पड़ा गेल अछि। घोर-मट्ठा भेल मने देवलाल काका बजला-

“बौआ, एतेटा जिनगीमे जे कमेलौं, सबटा चलि गेल।”

मसुआएल बोले देवलाल कक्काक बात सुनि अपनो मन मसुआ गेल। पुछलयैन-

“केना चलि गेल?”

बेथाएल मन देवलाल कक्काक, कुहैर-कुहैर बजला-

“बौआ, तीनटा अपन चास छल आ तीनटा बास छल, मुदा सब चलि गेल।”

‘तीनटा चास आ तीनटा बास’क अरथे ने बुझलौं, जे

दृष्टिकूटमे काका की बाजि गेला? मुदा हमर अकबकी देखि ओ बुझि गेला। बुझि ई गेला जे तीन चास आ तीन बासक अर्थ नै बुझलक। व्याख्या करैत बजला- “तीन चासक माने भेल, तीन सीराउ, जइमे एकटा भेल पारिवारिक जिनगी, दोसर भेल- अपन श्रम लगा जे पाइ कमेलौं आ तेसर भेल- साहित्यसँ रूचि रहने जे किछु सिरजन केलौं।”

सोझ-साझ कक्काक बात सुनि कहलयैन- “केहेन बढ़ियाँ तँ तीनू चासो अछि आ तीनू बासो अछि।”

मुदा जेना ओ बुझि गेला तहिना बजला- “परिवारमे तेहेन कटौज शुरू भऽ गेल अछि जे बेटा बेटी दिस टाड़ैए आ बेटी बेटा दिस। सूप महक बैंगन भेल छी। की कहियह, पाँच रंगक किताब नोकरी-समय छपबौने छेलौं आ हाथसँ लिखि घरोमे रखने छेलौं। पाइक कहियो अभाव नै रहल तँए उद्गारसँ जे छपेलौं, विलैह देलिऐ। अपना-ले किछु ने बँचल, सभटा हेरा गेल। दोहरा कऽ छपबैक तागत आब रहल नै जे छपाएब...।”

कहि जेना किछु सोचए लगला। मुदा सोचो तँ सोच छी केमहर बहैक जाएत तेकर ठीक नहि। तँए पुछलयैन-

“बास की कहलिऐ?”

‘बास’ सुनि देवलाल विस्मित होइत विह्वल भऽ गेला। बिहुसैत बजला- “बौआ, कोन मुँह लऽ कऽ अपना बासपर जाएब। किछु ने रहल।”



तिथि: 29 जनवरी 2015, शब्द संख्या: 1615

Notes